सोने की वापसी

भारतीय रिजर्व बैंक ने ब्रिटिश बैंकों में जमा भारत के स्वर्ण भंडार से सौ टन सोना देश वापस लाया है. साल 1991 के प्रारंभ के बाद से स्थानीय भंडार में जोड़ी गयी यह सबसे बड़ी मात्रा है. खबरों के मुताबिक, आगामी महीनों में बड़ी मात्रा में सोने को देश वापस लाने की संभावना है. रिजर्व बैंक सोने की बड़ी खरीद भी कर रहा है. पिछले साल 16 टन सोने की खरीद हुई थी और इस वर्ष जनवरी से मार्च के बीच 19 टन सोना खरीदा गया है. यह खरीद 2018 से शुरू हुई है. उससे पहले 2009 में वैश्विक वित्तीय संकट के समय 200 टन सोने की खरीद हुई थी. दुनियाभर के केंद्रीय बैंक हाल के वर्षों में अपनी मुद्रा के उतार-चढ़ाव को नियंत्रित रखने तथा भू-राजनीतिक उथल-पुथल के असर को कम करने के लिए बड़ी मात्रा में सोना खरीद रहे हैं. इस वर्ष मार्च के अंत तक रिजर्व बैंक के पास 822.10 टन स्वर्ण भंडार था, जिसमें से 408.31 टन देश में रखा गया है. भुगतान सहूलियत और भंडारण आदि विभिन्न कारणों से देश का सोना बैंक ऑफ इंग्लैंड एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं के पास जमा किया जाता है. इसके लिए कुछ नियमित शुल्क भी दिया जाता है. माना जा रहा है कि शुल्क की बचत, भंडारण में विविधता तथा विदेश में बढ़ रही सोने की मात्रा में कमी लाने आदि कारणों से रिजर्व बैंक सोना देश में ला रहा है. सोना एक सुरक्षित परिसंपत्ति माना जाता है. इसे अधिक मात्रा में देश में रखने के निर्णय से यह भी इंगित होता है कि रिजर्व बैंक भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता को लेकर अपेक्षाकृत अधिक आश्वस्त है. वर्तमान समय में, जब भारत सबसे अधिक तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है तथा वैश्विक परिदृश्य में उसके महत्व में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है, तो अंतरराष्ट्रीय भुगतान गारंटी, कर्ज प्रबंधन या सुरक्षा के लिए बहुत ज्यादा सोना विदेश में रखने की जरूरत नहीं है. स्वर्ण भंडार के साथ-साथ भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. सोना वापस लाने से यह भी संकेत मिलता है कि रिजर्व बैंक विदेशी मुद्रा भंडार के प्रबंधन में रणनीतिक सोच से प्रेरित है. उल्लेखनीय है कि 1990-91 में अंतरराष्ट्रीय भुगतान को लेकर भारत की वित्तीय स्थिति बेहद नाजुक हो गयी थी. तब बड़ी मात्रा में सोना विदेश भेजना पड़ा था और उसके आधार पर अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं ने कर्ज मुहैया कराया था. अब लगभग साढ़े तीन दशक बाद हम अपना सोना वापस ला रहे हैं, इसका सीधा अर्थ है कि भारत अपनी आर्थिक एवं वित्तीय क्षमता को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हो चुका है. प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार संजीव सान्याल ने उचित ही कहा है कि सोना वापस लाने का एक विशेष अर्थ है.

अधिक मात्रा में देश में सोना रखने के निर्णय से इंगित होता है कि रिजर्व बैंक अर्थव्यवस्था की स्थिरता को लेकर अपेक्षाकृत अधिक आश्वस्त है.

बोधि वृक्ष

दैवी संपदा

जिस स्थान पर दैवी संपदा वाले लोग रहते हैं, वहां की हवा में भी एक महक होती है. दैवी संपदा का पहला गुण यही है कि साधक के अंदर भय नहीं होता. अगला गुण है मन की निर्मलता. मन को स्वस्थ रखना. क्रोध, लालच, ईर्ष्या को दूर करना. यदि किसी के प्रति कोई ईर्ष्या या द्वेष है, तो उसके पास जाकर स्वीकार करो. साधक अपनी भावनाओं के प्रति ईमानदार होता है. धार्मिक राह पर चलने के कुछ गुण हैं, जैसे दान. दान सात्विक होना चाहिए, राजसिक नहीं. जब आप स्वर्ग या पुण्य या स्वार्थ के चक्कर में दान करते हैं, तो यह राजसिक दान है. सामने वाले को भगवत्स्वरूप समझकर दान देना, सात्विक दान है. इंद्रियों का दमन- दूसरे के लिए दान और अपने लिए दमन होना चाहिए. दमन का मतलब संयम है. तुम्हारा मन तुम्हारी आज्ञा में होना चाहिए. तुम अपनी इंद्रियों और मन के दास नहीं हो, बल्कि ये तुम्हारे दास हों. यज्ञ करना- लकड़ी, घी, हवन सामग्री आदि से मंत्रों सहित आहुति देना भी एक यज्ञ है. जप, सेवा भी यज्ञ हैं. स्वाध्याय- अच्छी पुस्तकें पढ़ना. दूसरा अर्थ है अपने आपका अध्ययन करना. इसमें बस अपने आपको जानते हैं, अपने मन को जानते हैं. अहिंसा- मन, वाणी और विचार से हिंसा न हो. अपना अपकार करने वाले पर भी क्रोध न करना- कोई आपका नुकसान करे, तो उससे बदला लेने के लिए आपके मन में उस समय जो क्रोध उत्पन्न होता है, वह दूर-दूर तक दैवी संपदा का हिस्सा नहीं है. आप दूसरों को नहीं बदल सकते, परंतु अपने आपको बदल सकते हैं. शांति- चित्त की चंचलता के अभाव को शांति कहते हैं. शांति का अर्थ है कि आपका मन शांत है, कोई लहर नहीं, चंचलता नहीं. निंदा न करना- निंदा करने वाले और निंदा सुनने वाले, दोनों ही पाप के भागीदार होते हैं. क्योंकि दोनों ही परिस्थितियों में मन को दुख पहुंचता है. आपके व्यवहार में, बोली में कोमलता होनी चाहिए. जब दूसरों से व्यवहार करें, तब बहुत कोमल रहें. यदि आप नियम, विवेक, ज्ञान और श्रद्धा के पक्के हैं, तो कोई आपको डिगा नहीं सकेगा. साधकों में ये सब लक्षण होने चाहिए.

-आनंदमूर्ति गुरु मां

कन्याकुमारी में साधना से निकले नये संकल्प

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री, भारत
https://x.com/narendramodi

नये भारत का स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का अहसास भी करवाता है. अब एक भी पल गंवाये बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे. हमें नये स्वप्न देखने हैं. अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है और उन सपनों को जीना शुरू करना है. भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं. मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है.

मेरे प्यारे देशवासियों,

लोकतंत्र की जननी में लोकतंत्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव आज एक जून को पूरा हो रहा है. तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद, मैं अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं. काशी और अनेक सीटों पर मतदान चल ही रहा है. कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं.

वाकई, 24 के इस चुनाव में, कितने ही सुखद संयोग बने हैं. अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया. मां भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई. संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है. इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला. उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था. रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे. माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद... उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार... मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था. मेरी आंखें नम हो रही थीं. मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था.

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद-विवाद, वार-पलटवार, आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गये. मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया. मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया.

इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया. मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़ कर यहां आया था.

मैं ईश्वर का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिये. मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा.

इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे. कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नयी ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, Oneness का निरंतर एहसास कराया. ऐसा लग रहा था, जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किये गये चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों.

साथियों,

कन्याकुमारी का यह स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है. कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था. एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था. इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वभाविक रूप से होता था.

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अंतर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं. ये वह शक्तिपीठ है, जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था. इस दक्षिणी छोर पर मां शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे.

कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है. हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है और यहां एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम!

यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं. महान नायकों के विचारों की ये धाराएं यहां राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं. इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है. जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की यह धरती एकता का अमिट संदेश देती है.

कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है. उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है. इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है. ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा.

साथियों,

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था- Every Nation Has a Message To deliver, a mission to fulfil, a destiny to reach.

भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है. भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है. हमने जो अर्जित किया, उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदंडों पर नहीं तौला. इसीलिए, 'इदं न मम' यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है.

भारत के कल्याण से विश्व का कल्याण, भारत की प्रगति से विश्व की प्रगति, इसका एक बड़ा उदाहरण हमारी आजादी का आंदोलन भी है. 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ. उस समय दुनिया के कई देश गुलामी में थे. भारत की स्वतंत्रता से उन देशों को भी प्रेरणा और बल मिला, उन्होंने आजादी प्राप्त की. अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है. जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला.

आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है. सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है. प्रो-पीपल गुड गवर्नेंस, aspirational district, aspirational block जैसे अभिनव प्रयोग की आज विश्व में चर्चा हो रही है. गरीब के सशक्तिकरण से लेकर लास्ट माइल डिलीवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है. भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त करने में, पारदर्शिता लाने में, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं. भारत में सस्ता डेटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुँच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है. पूरा विश्व technology के इस democratization को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं.

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है. ये पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है. जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है. आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है. भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन जी-20 ग्रुप का हिस्सा बना. ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है.

साथियों,

नये भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का अहसास भी करवाता है. अब एक भी पल गंवाये बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे. हमें नये स्वप्न देखने हैं. अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है और उन सपनों को जीना शुरू करना है.

हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए ये जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें. हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका सम्पूर्ण उपयोग भी करना होगा. आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है.

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे. हमें reform को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा. भारत reform को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता है. हमें जीवन में हर क्षेत्र में reform की दिशा में आगे बढ़ना होगा. हमारे reform 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए.

हमें ये भी समझना होगा कि किसी भी देश के लिए reform कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती. इसीलिए, मैंने देश के लिए reform, perform और transform का विज़न सामने रखा. reform का दायित्व नेतृत्व का होता है. उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी perform करती है और फिर जब जनता जनार्दन इससे जुड़ जाती है, तो transformation होते हुए देखते हैं.

भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा. हमें Speed, Scale, Scope और Standards, चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा. हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें zero defect-zero effect के मंत्र को आत्मसात करना होगा.

साथियों,

हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है. ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है.

हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुये अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा.

हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा. हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से, Professional Pessimists के दबाव से बाहर निकालना है. हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है. सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है.

भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं. मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है. जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवे दशक को अपनी आज़ादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है. स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था. आज बलिदान का नहीं निरंतर योगदान का समय है.

स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे. उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आजाद हो गया.

आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है. हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें. हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे. मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है. आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं.

(ये विचार प्रधानमंत्री मोदी ने एक जून को कन्याकुमारी से दिल्ली लौटते समय विमान में संध्या 4:15 से 7 बजे के बीच लिखे).

https://t.me/AllNewsPaperPaid

खतरनाक है खेतों से पेड़ों का उजड़ना

पंकज चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार
pc7001010@gmail.com

खेत तो कम होंगे ही, लेकिन पेड़ों का कम होना मानवीय अस्तित्व पर बड़े संकट का आमंत्रण है. आज समय की मांग है कि खेतों के आसपास सामुदायिक वानिकी को विकसित किया जाए, जिससे जमीन की उर्वरा, धरती की कोख का पानी और हरियाली का साया बना रहे.

न तो अब खेतों में कोयल की कूक सुनाई देती है और न ही सावन के झूले पड़ते हैं. यदि फसल को किसी आपदा का ग्रहण लग जाए, तो अतिरिक्त आय का जरिया होने वाले फल भी गायब हैं. अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका 'नेचर सस्टैनबिलिटी' में हाल में प्रकाशित आलेख बताता है कि भारत में खेतों में पेड़ लगाने की परंपरा समाप्त हो रही है. कृषि-वानिकी का मेलजोल कभी भारत के किसानों की ताकत था. कई पर्व-त्योहार, लोकाचार, गीत-संगीत खेतों में खड़े पेड़ों के इर्द गिर्द रहे हैं. मार्टिन ब्रांट , दिमित्री गोमिंस्की, फ्लोरियन रेनर, अंकित करिरिया , वेंकन्ना बाबू गुथुला, फिलिप सियाइस , जियाओये टोंग , वेनमिन झांग , धनपाल गोविंदराजुलु , डैनियल ऑर्टिज-गोंजालो और रासमस फेंशोल्टन के बड़े दल ने भारत के विभिन्न हिस्सों में जाकर पाया कि अब खेत किनारे छाया मिलना मुश्किल है. इसके कई विषम परिणाम खेत झेल रहा है. जब बढ़ता तापमान गंभीर समस्या के रूप में सामने है और सभी जानते हैं कि धरती पर अधिक से अधिक हरियाली की छतरी ही इससे बचाव का जरिया है, ऐसे में यह शोध गंभीर चेतावनी है कि बीते पांच वर्षों में हमारे खेतों से 53 लाख फलदार व छायादार पेड़ गायब हो गये हैं. इनमें नीम, जामुन, महुआ और कटहल जैसे पेड़ प्रमुख हैं.

इन शोधकर्ताओं ने भारत के खेतों में मौजूद 60 करोड़ पेड़ों का नक्शा तैयार किया और लगातार दस साल उनकी निगरानी की. कोपेनहेगन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के अध्ययन के अनुसार, देश में प्रति हेक्टेयर पेड़ों की औसत संख्या 0.6 दर्ज की गयी. इनका सबसे ज्यादा घनत्व उत्तर-पश्चिमी भारत में राजस्थान और दक्षिण-मध्य क्षेत्र में छत्तीसगढ़ में दर्ज किया गया है. यहां पेड़ों की मौजूदगी प्रति हेक्टेयर 22 तक दर्ज की गयी. रिपोर्ट बताती है कि खेतों में सबसे अधिक पेड़ उजाड़ना में तेलंगाना और महाराष्ट्र अव्वल रहे हैं. साल 2010-11 में दर्ज किये गये पेड़ों में से करीब 11 फीसदी बड़े छायादार पेड़ 2018 तक गायब हो चुके थे. बहुत जगहों पर तो खेतों में मौजूद आधे पेड़ गायब हो चुके हैं. यह भी पता चला है कि 2018 से 2022 के बीच करीब 53 लाख पेड़ खेतों से अदृश्य थे, यानी इस दौरान हर किलोमीटर क्षेत्र से औसतन 2.7 पेड़ नदारद मिले. वहीं कुछ क्षेत्रों में तो हर किलोमीटर क्षेत्र से 50 तक पेड़ गायब हो चुके हैं. यह विचार करना होगा कि आखिर किसान ने अपने खेतों से पेड़ों को उजाड़ा क्यों? किसान भलीभांति यह जानता है कि खेत पर छायादार पेड़ होने का अर्थ है पानी संचयन, पत्ते और पंछियों की बीट से निशुल्क कीमती खाद, मिट्टी के मजबूत पकड़ और सबसे बड़ी बात- खेत में हर समय किसी बड़े-बूढ़े के बने रहने का एहसास. इन पेड़ों पर बसेरा करने वाले पक्षी कीट-पतंगों से फसलों की रक्षा करते थे. फसलों को नुकसान करने वाले कीट सबसे पहले मेड़ के पेड़ पर ही बैठते हैं. उन पेड़ों पर दवाओं को छिड़काव कर दिया जाए, तो फसलों पर छिड़काव करने से बचत हो सकती है. जलावन, फल-फूल से अतिरिक्त आय तो है ही.

फिर भी नीम, महुआ, जामुन, कटहल, खेजड़ी (शमी), बबूल, शीशम, करोई, नारियल आदि जैसे बहुउद्देशीय पेड़ों का काटा जाना, जिनका मुकुट 67 वर्ग मीटर या उससे अधिक था, किसान की किसी बड़ी मजबूरी की तरफ इशारा करता है. यह भी है कि खेती का रकबा तेजी से कम होता जा रहा है. एक तो जमीन का बंटवारा हुआ, फिर लोगों ने व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए खेतों को बेचा. साल 1970-71 तक देश के आधे किसान सीमांत थे, यानी उनके पास एक हेक्टेयर या उससे कम जमीन थी. साल 2015-16 आते-आते सीमांत किसान बढ़कर 68 प्रतिशत हो गये हैं. अनुमान है कि आज इनकी संख्या 75 फीसदी है. सरकारी आंकड़ा कहता है कि सीमांत किसानों की औसत खेती 0.4 हेक्टेयर से घटकर 0.38 हेक्टेयर रह गयी है. ऐसा ही छोटे, अर्ध मध्यम और मझोले किसान के साथ हुआ. कम जोत का सीधा असर किसानों की आय पर पड़ा है. अब वह जमीन के छोटे से टुकड़े पर अधिक कमाई चाहता है, तो उसने पहले खेत की चौड़ी मेढ़ को ही तोड़ डाला. इसके चलते वहां लगे पेड़ कटे. उसे लगा कि पेड़ के कारण हल चलाने लायक भूमि और सिकुड़ रही है, तो उसने पेड़ पर कुल्हाड़ी चला दी. इस लकड़ी से उसे तात्कालिक कुछ पैसा भी मिल गया. इस तरह घटती जोत का सीधा असर खेत में खड़े पेड़ों पर पड़ा.

सरकार खेतों में पेड़ लगाने की योजना, सब्सिडी के पोस्टर छापती रही और किसान अपने कम होते रकबे को थोड़ा सा बढ़ाने की फिराक में धरती के शृंगार पेड़ों को उजाड़ता रहा. बड़े स्तर पर धान बोने के चस्के ने भी बड़े पेड़ों को नुकसान पहुंचाया. साथ ही, खेतों में मशीनों के बढ़ते इस्तेमाल ने भी पेड़ों की बलि ली. कई बार भारी मशीनें खेत की पतली पगडंडी से लाने में पेड़ आड़े आते थे, तो तात्कालिक लाभ के लिए उन्हें काट दिया गया. खेत तो कम होंगे ही, लेकिन पेड़ों का कम होना मानवीय अस्तित्व पर बड़े संकट का आमंत्रण है. आज समय की मांग है कि खेतों के आसपास सामुदायिक वानिकी को विकसित किया जाए, जिससे जमीन की उर्वरा, धरती की कोख का पानी और हरियाली का साया बना रहे.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

देश दुनिया

प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने में जापान की अहम भूमिका

प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय समझौते पर वैश्विक बातचीत आगे बढ़ ही नहीं पा रही है, क्योंकि कुछ प्रमुख मुद्दों को लेकर देशों के बीच व्यापक मतभेद है. जापान प्लास्टिक कचरे को कम करने के अपने प्रयासों को तेज करते हुए एक समझौते को तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभा सकता है और उसे निभाना भी चाहिए. दो वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा की बैठक में भाग लेने वाले राष्ट्र इस वर्ष के अंत तक कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता करने पर सहमत हुए थे. इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अप्रैल में कनाडा में प्लास्टिक प्रदूषण पर अंतर-सरकारी वार्ता समिति का एक महत्वपूर्ण सत्र आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण पर कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय संहिता का प्रारूप तैयार करने में तेजी लाना था. पर इसके बजाय, बैठक में संबंधित देशों के बीच विविध हितों और दृष्टिकोणों के कारण बातचीत में आने वाली जटिलता को रेखांकित किया गया. यहां प्रश्न यह है कि प्लास्टिक जीवन चक्र के किस भाग को- उत्पादन चरण से निपटान तक- नियंत्रित किया जाए. यूरोपीय, अफ्रीकी और द्वीपीय देश उत्पादन सीमित करने का समर्थन करते हैं, जबकि तेल उत्पादक देश और चीन इस दृष्टिकोण का विरोध करते हैं. जापान का दृष्टिकोण समान उत्पादन प्रतिबंध लगाने के बजाय प्रत्येक देश की जरूरत के अनुसार पुनः प्रयोग और पुनर्चक्रण जैसे उपाय करने का है. प्लास्टिक कचरे के पहाड़ पैदा करने वाले एक विकसित देश के रूप में जापान पर इस उद्देश्य में योगदान देने की भारी जिम्मेदारी है. जापान को उत्पादन को नियंत्रित करने, खपत पर अंकुश लगाने और वित्तीय और तकनीकी सहायता का विस्तार करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की वकालत करके अपनी उपस्थिति दर्ज करानी चाहिए. जब तक कोई उपाय नहीं होगा, प्लास्टिक प्रदूषण की समस्या बढ़ती रहेगी.

The Asahi Shimbun
Asia & Japan Watch

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

पंजाब केसरी
संपादकीय

अरुणाचल का जनादेश

लोकसभा चुनाव के परिणाम आने से पहले ही भारतीय जनता पार्टी के लिए शानदार खबर यह है कि अरुणाचल में एक बार फिर भाजपा की सरकार बनने जा रही है। राज्य में पेमाखांडू की सरकार ने प्रचंड बहुमत के साथ वापसी की है। 60 सदस्यीय विधानसभा में 10 सीटें भाजपा पहले ही निर्विरोध जीत चुकी है। चुनाव परिणामों में एक बार फिर भगवा लहरा दिया है। इसके साथ ही पूर्वोत्तर भारत ने समूचे राष्ट्र को संदेश भी दे दिया है कि उसने केन्द्र की मोदी सरकार के कामों पर मोहर लगा दी है। यद्यपि सिक्किम विधानसभा चुनावों में सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा सरकार बनाने जा रहा है। दोनों ही राज्यों में कांग्रेस का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। सिक्किम में सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा ने अपना एकतरफा जलवा दिखाया है। सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा का गठन 4 फरवरी 2013 को हुआ था और भारती शर्मा को इसका पहला अध्यक्ष बनाया गया था। एसकेएम के गठन में प्रेम सिंह तमांग की भूमिका महत्वपूर्ण रही। प्रेम सिंह तमांग पहले सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट में थे। हालांकि 2009 में पूर्व मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग से मतभेद हो गए थे। 2019 में प्रेम सिंह तमांग मुख्यमंत्री बने थे। अरुणाचल में भाजपा की बंपर जीत पहले ही तय लग रही थी। वर्ष 2019 के चुनावों के दौरान भगवा पार्टी ने 41 सीटें हासिल की थी। अरुणाचल वही राज्य है जिस पर चीन अपनी नजरें गड़ाए बैठा है। केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने अलगावादी हिंसा और अराजकता का दंश झेल रहे पूर्वोत्तर में विकास की बयार बहा दी है। अरुणाचल और पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की जनता अब रचनात्मक राह पर चल रही है। वहां के लोग राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल होकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के सपने को साकार रूप देने में अहम भूमिका निभाने को तैयार है।

यह सब कुछ संभव हो सका है पीएम मोदी की प्रभावी नीतियों और दूरगामी सोच की वजह से। पूर्वोत्तर के विकास को लेकर पीएम मोदी की कोशिशों का एक अहम प्रमाण यह है कि अरुणाचल प्रदेश के सबसे दूरस्थ गांव को प्रधानमंत्री ने भारत का पहला गांव बताया और उसे विकास की प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर रखा गया जबकि, पहले की सरकारों ने इसे देश के अंतिम गांव के तौर पर देखा था। पहले की सरकार और मोदी सरकार के बीच विजन का एक यह बड़ा फर्क है, जो पूर्वोत्तर में विकास के तौर पर नजर आ रहा है। पूर्वोत्तर को अहमियत देने को लेकर मौजूदा केंद्र सरकार की सोच को खुद पीएम मोदी ने ही जाहिर कर दिया है। पहले के सारे प्रधानमंत्रियों ने कुल मिलाकर जितनी बार पूर्वोत्तर के सूबों का दौरा किया, उससे अधिक बार वे खुद इन राज्यों में जा चुके हैं। यही तथ्य तो मोदी सरकार की पिछली सरकारों से भिन्न उन कोशिशों को रेखांकित करते हैं, जो पूर्वोत्तर में विकास के लिए अहम रही हैं।

> इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि अपने अद्भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय संस्कृति और विरासत के लिए समस्त विश्व में सर्व विख्यात पूर्वोत्तर के सूबे दुर्भाग्यवश पिछले कई दशकों तक उपेक्षा, हिंसा, अराजकता और अलगाव का शिकार रहे, लेकिन अब विकास का तेज सूर्योदय भारत के पूर्वोत्तर हिस्से को चौतरफा रोशन कर रहा है। यहां के बाशिंदे पिछले कई सालों से अभूतपूर्व विकास की अनुभूति प्राप्त कर रहे हैं। देश से अलग-थलग पड़ने की वजह से जनमानस में पैदा हुई हीन भावना को उत्साह और उमंग ने हरा दिया है। पीएम मोदी के प्रेरक संबोधनों और पर्यटन के विकास को लेकर उनकी विस्तारित नीति ने पूर्वोत्तर की चमक को बढ़ा दिया है। पहले जो पूर्वोत्तर भारत महज हिंसा, दंगा, उन्माद और उत्पात के लिए जाना जाता था, आज उसी पूर्वोत्तर भारत में विकास की गंगा बह रही है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि अपने अद्भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय संस्कृति और विरासत के लिए समस्त विश्व में सर्व विख्यात पूर्वोत्तर के सूबे दुर्भाग्यवश पिछले कई दशकों तक उपेक्षा, हिंसा, अराजकता और अलगाव का शिकार रहे, लेकिन अब विकास का तेज सूर्योदय भारत के पूर्वोत्तर हिस्से को चौतरफा रोशन कर रहा है। यहां के बाशिंदे पिछले कई सालों से अभूतपूर्व विकास की अनुभूति प्राप्त कर रहे हैं। देश से अलग-थलग पड़ने की वजह से जनमानस में पैदा हुई हीन भावना को उत्साह और उमंग ने हरा दिया है। पीएम मोदी के प्रेरक संबोधनों और पर्यटन के विकास को लेकर उनकी विस्तारित नीति ने पूर्वोत्तर की चमक को बढ़ा दिया है। पहले जो पूर्वोत्तर भारत महज हिंसा, दंगा, उन्माद और उत्पात के लिए जाना जाता था, आज उसी पूर्वोत्तर भारत में विकास की गंगा बह रही है। पिछले दस सालों में केंद्र सरकार ने पूर्वोत्तर भारत में शांति स्थापित करने के मकसद से विभिन्न उग्रवादी संगठनों के साथ एक या दो नहीं, बल्कि 11 शांति समझौते किए।

2023 में असम अरुणाचल बॉर्डर एग्रीमेंट पर समझौता किया गया था। अरुणाचल के लोग महसूस करते हैं कि इटानगर में डोनी पोलो एयरपोर्ट, एयरपोर्ट से लेकर पोर्ट से सम्पर्क तक टूरिज्म, टेलीकॉम या टैक्सटाइल सबमें विकास हुआ है। राज्य की दुर्गम ऊंचाई पर सीमांत क्षेत्रों में सड़कें और हाइवे बने हैं। बेहतर बुनियादी ढांचा बनने से पर्यटक राज्य की प्राकृतिक खूबसूरती की ओर आकर्षित हुए हैं। होम स्टे और स्थानीय उत्पादों के जरिए परिवारों की आय बढ़ी हैं।

अरुणाचल के 85 प्रतिशत से अधिक गांव में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क बनाई जा चुकी है। कृषि क्षेत्र में काम करने वालों और आदिवासियों का जीवन पहले से सहज हुआ है। राज्य में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं पर काफी धन खर्च किया गया है। आदिवासी इलाकों में एकलव्य मॉडल स्कूल खोले गए हैं ताकि आदिवासियों का कोई भी बच्चा अशिक्षित न रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जिन गांवों में बिजली नहीं पहुंची थी उनमें अब बिजली पहुंची है। सीमा से सटे गांवों को वाइब्रैंट बॉर्डर विलेज का दर्जा देकर सशक्त बनाया गया है। सीमांत गांव के युवकों को एनसीसी से जोड़ा जा रहा है। इसके जरिए उनमें देश में प्रति सेवा का जज्बा पैदा किया जा रहा है। अरुणाचल के मतदाता यह महसूस कर रहे हैं कि अब वे दिल्ली के ज्यादा करीब हैं। इसलिए उन्होंने एक बार फिर कमल खिला दिया है। 2014 से पूर्व पूर्वोत्तर राज्यों में भाजपा का कोई नामलेवा नहीं था लेकिन आज इस क्षेत्र में भाजपा अपना परचम लहरा रही है।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

परिवार है तो पहचान है...

गीता पाढा

परिवार है तो पहचान है,
छोटी-छोटी नोक-झोंक से रिश्तों में जान है,
परिवार के बिना जिंदगी विरान है,
परिवार ही तो सच्चे प्यार का दूसरा नाम है...!!

कन्याकुमारी में साधना से निकले नये संकल्प

श्री नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

मेरे प्यारे देशवासियों,

लोकतन्त्र की जननी में लोकतन्त्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव आज 1 जून को पूरा हो रहा है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद, मैं अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं...काशी और अनेक सीटों पर मतदान चल ही रहा है। कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं। वाकई, 24 के इस चुनाव में, कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया।

मां भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद... उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार...मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया। इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था।

मैं ईश्वर का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिये। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा। मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा। इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता का निरंतर अहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

साथियों, कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था। इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वभाविक रूप से होता था। कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर मां शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे। कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहाँ एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम।

यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएं यहां राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की ये धरती एकता का अमिट संदेश देती है। कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा।

साथियो, स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था- Every Nation Has a Message To deliver, a mission to fulfil, a destiny to reach. भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदण्डों पर नहीं तौला। इसीलिए, 'इदं न मम' यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है।

भारत के कल्याण से विश्व का कल्याण, भारत की प्रगति से विश्व की प्रगति, इसका एक बड़ा उदाहरण हमारी आज़ादी का आंदोलन भी है। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। उस समय दुनिया के कई देश गुलामी में थे। भारत की स्वतन्त्रता से उन देशों को भी प्रेरणा और बल मिला, उन्होंने आजादी प्राप्त की। अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है। जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला।

आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। प्रो-पीपल गुड गवर्नेंस, aspirational district, aspirational block जैसे अभिनव प्रयोग की आज विश्व में चर्चा हो रही है। गरीब के सशक्तिकरण से लेकर लास्ट माइल डिलीवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त करने में, पारदर्शिता लाने में, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं। भारत में सस्ता डेटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुंच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है। पूरा विश्व technology के इस democratization को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। ये पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज़ के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन जी-20 ग्रुप का हिस्सा बना। ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है। नए भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्त्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है, और उन सपनों को जीना शुरू करना है।

हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए ये जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका सम्पूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है। और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमें रिफोर्म को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा। भारत रिफोर्म को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में रिफोर्म की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे रिफोर्म 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए।

हमें ये भी समझना होगा कि किसी भी देश के लिए रिफोर्म कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने देश के लिए reform, perform और transform का विज़न सामने रखा। reform का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी perform करती है और फिर जब जनता जनार्दन इससे जुड़ जाती है, तो transformation होते हुए देखते हैं।

भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। हमें Speed, Scale, Scope और Standards, चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें zero defect- zero effect के मंत्र को आत्मसात करना होगा।

साथियों, हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है। ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुये अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा।

हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से, Professional Pessimists के दबाव से बाहर निकालना है। हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है। भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है।

जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवें दशक को अपनी आज़ादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं निरंतर योगदान का समय है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आज़ाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक जून को कन्याकुमारी से नई दिल्ली की रिटर्न फ्लाइट के दौरान 4.15 से 7.00 बजे के बीच यह विचार व्यक्त किए।

> साथियो, स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था- Every Nation Has a Message To deliver, a mission to fulfil, a destiny to reach. भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदण्डों पर नहीं तौला।

नेताओं, प्रवक्ताओं, एंकरों को कभी हंसते देखा है?

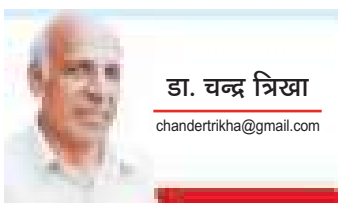
डा. चन्द्र त्रिखा
chandertrikha@gmail.com

पूरी चुनावी प्रक्रिया के दौरान एक तथ्य बार-बार कचोटता रहा है कि आखिर हमारे टीवी एंकर, पार्टियों के प्रवक्ता, नेता लोग, कभी भी मुस्कराते या हंसते क्यों नहीं? सबके चेहरों पर तनाव, तीखापन एक-दूसरे को बीच-बीच में ही टोकते रहने का अभ्यास कुछ प्रश्न सीधे सादे- दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल, केंद्रीय मंत्री रवि शंकर, केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर, कांग्रेसी दिग्गज राहुल गांधी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उड़ीसा के नवीन पटनायक को कभी भी अब तक की ज़िंदगी में खुलकर हंसते या मुस्कराते हुए भी देखा है? शायद नहीं। कुल मिलाकर शायद लालू यादव, अखिलेश यादव के अलावा कौन देखा गया है मुस्कराते हुए या हंसते हुए। उर्दू शायर अकबर इलाहाबादी ने शायद ऐसे ही संदर्भ में कहा था-

'या तो दीवाना हंसे,
या तूं जिसे तौफीक दे।
वरना इस दुनिया में आकर,
मुस्करा सकता है कौन

प्रख्यात साहित्यकार व दिवंगत पत्रकार धर्मबीर भारती की एक कृति है 'अंधा युग' इसे नाटक के रूप में दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ, चंडीगढ़ में प्राय: खेला जाता रहा है। महाभारत-युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित इस कृति में युद्ध के बाद की स्थिति पर एक तीखी टिप्पणी है-

युद्धोपरांत वह अंधा युग...
अवतरित हुआ,
जिसमें स्थितियां, मनोवृत्तियां
आत्माएं, सब विकृत हैं

एक बहुत पतली डोर, मर्यादा की
पर वह भी उलझी है, दोनों पक्षों में

अब आशंकाएं मंडराने लगी हैं क्योंकि मर्यादाओं की पतली डोर भी नहीं बची। राजनीति की भाषा विकृत है, चेहरे विकृत हैं, तेवर विकृत हैं। लगभग सबके कानों में रुई है, मगर मुख से जहरीले शब्दों की बौछार जारी है। चार जून के बाद भी आरोपों, प्रत्यारोपों की लू चलती रहेगी।

इन चुनावों में जितनी हिकारत, जितनी नफरत हमारे परिवेश में परस्पर उगली गई, उसमें एक सवाल बार-बार परेशान करता है कि क्या 4 जून के बाद स्थितियां सामान्य हो जाएंगी? क्या हारे हुए नेता लोग जीते हुए नेताओं को मुबारिकबाद देने के लिए आगे आ पाएंगे? कातिल, खूनी, दरिंदे, चोर, उठाईगीर, बलात्कारी और महाभ्रष्ट, ये सारे शब्द हमारे कई नेताओं ने एक-दूसरे की पीठ पर, छाती पर चस्पां किए। फिलहाल ऐसा नहीं लगता कि चुनाव-परिणाम आने के फौरन बाद ये नफरत के पीले पत्ते या दाग बुहारे जा पाएंगे।

आशंका है कि कुछ दिन और नफरत बरसेगी। जो नेता नफरत के बाजार में मुहब्बत की दुकान खोलने की बात करते थे, वे भी अब उसी बाज़ार में वही सब बेचने पर आमादा हैं जो बिकता है। अपने ही देश में इस बार हम ऐसे मोड़ पर पहुंच गए, जहां सम्मान, प्यार, स्नेह की भाषा जानबूझ कर भुला दी गई। शायद इतनी नफरत किसी भी शत्रु देश के बारे में भी हमने नहीं परोसी, जितने परस्पर अपने ही देश, अपने ही लोगों द्वारा अपने ही नेताओं के खिलाफ परोसी गई। कुछ सप्ताहों के लिए हम अपने पूर्वजों को भी भूल गए। वाराणसी जैसे क्षेत्र में भी हमने शब्दों का कचरा, कूड़ा, कर्कट गंगा मैय्या के किनारे फैलाने में कोई परहेज़ नहीं किया।

एक अचरज यह भी था कि इस बार वाराणसी की जनसभाओं, रैलियों या नुक्कड़ बैठकों, टीवी चैनलों में भी किसी ने न तो बिस्मिल्लाह खां को याद किया, न ही उनकी शहनाई की गूंज का ज़िक्र हुआ, न ही केदारजी की प्रख्यात कविता 'बनारस' का ज़िक्र हुआ, न ही नज़ीर बनारसी या कबीर चौरा या अस्सी घाट का ज़िक्र गोस्वामी तुलसीदास के संदर्भ में हुआ। सभी को लगा कि ऐसी चर्चाओं में वक्त बर्बाद किया तो वोट-एक्सप्रेस छूट जाएगी। ढर्रा वही बना रहा खूनी, चोर, दरिंदे, नशेड़ी, अहंकारी और बलात्कारी यही आरोप नए-नए रूपों में नई-नई तान के साथ गाए गए, उछाले गए।

एक दिलचस्प बात यह देखी गई कि कई टीवी डिबेट्स में एक-दूसरे का गला काटने को उतावले प्रवक्ता लोग और एंकर्स, कार्यक्रम के बाद चाय-कॉफी के प्याले पर एक साथ एक-दूसरे को धांसू प्रस्तुतियों के लिए मुबारिक देते दिखाई दिए।

अब सही समय है कि देश में पारस्परिक सौहार्द, सहिष्णुता और रचनाधर्मिता का माहौल बने। चुनावी-खींचतान में साम्प्रदायिक तनाव भी बढ़ा है और विपक्षी गठबंधन के तेवर भी तीखे हुए हैं। दोनों पक्षों में यह आशंका बलवती होने लगी है कि चुनावों के बाद तनाव बढ़ेगा। आशंकाएं यदि बलवती रही और असुरक्षा का माहौल बना तो देश में व्यापक स्तर हिंसा एवं टकराव का खतरा उत्पन्न होगा। राष्ट्र की आंतरिक व बाहरी सुरक्षा का तकाज़ा है कि केंद्र में गठित सरकार सुनिश्चित बनाए कि शांति किसी भी शर्त पर बनी रहे। हर सामान्य भारतीय को भी 4 जून के बाद पारस्परिक सद्भाव तो पैदा करना ही होगा।

अग्निकुल की नज़र 2025 तक उपग्रहों को लॉन्च करने पर है

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): अग्निबाण 'सब-ऑर्बिटल टेक्नोलाजी डेमोंस्ट्रेटर (एसओआरटीईडी)' की सफल परीक्षण उड़ान के बाद चेन्नई का अंतरिक्ष स्टार्ट-अप 'अग्निकुल कॉसमॉस' अगले साल की शुरुआत में उपग्रहों का प्रक्षेपण शुरू करने की उम्मीद कर रहा है। अग्निकुल के सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) श्रीनाथ रविचंद्रन ने कहा कि '3डी-प्रिंटेड सेमी क्रायोजेनिक इंजन और रॉकेट' उन ग्राहकों के लिए त्वरित समाधान प्रदान करेंगे जो अपने उपग्रहों के लिए अनुकूलित प्रक्षेपण वाहन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। अग्निबाण रॉकेट के वाणिज्यिक प्रक्षेपण के बारे में पूछे जाने पर रविचंद्रन ने कहा-मैं कहूंगा कि नौ से 12 महीने लगेंगे। हम संभवत: इस वित्तीय वर्ष के अंत तक या अगले वित्तीय वर्ष के आरंभ तक का लक्ष्य लेकर चल रहे है।" अग्निबाण सब-ऑर्बिटल टेक्नोलाजी डेमोंस्ट्रेटर की पहली परीक्षण उड़ान 30 मई को हुई, जो 66 सेकंड तक चली जो चार असफल प्रयासों के बाद मिली सफल थी।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com
स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

epaper.punjabkesari.com

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • सोमवार • 3 जून • 2024
www.rashtriyasahara.com

एग्जिट पोल की परीक्षा

सातवें चरण के मतदान के बाद शनिवार को जारी तमाम टीवी चैनलों के एग्जिट पोल में केंद्र में तीसरी बार राष्ट्रीय गणतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार बनने जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीसरी बार सत्ता संभालने की दिशा में दिखाई दे रहे हैं। अलबत्ता, भाजपा को हरियाणा, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक और बिहार में नुकसान होता दिख रहा है, लेकिन दक्षिण में उम्मीद की किरण भी दिखलाई पड़ रही है। केरल और तमिलनाडु में उसका खाता खुलता दिखाई दे रहा है। सबसे बड़ी बात यह कि देश में सर्वाधिक सीटों वाले उत्तर प्रदेश में राजग अपनी पुरानी टैली को बनाए रखने में सफल होता दिख रहा है, जहां विपक्ष ने पूरी दमदारी से उसे शिकस्त देने का मंसूबा

बांधा हुआ है। एग्जिट पोल ने फिर से मोदी सरकार को सत्ता पर काबिज होने की बात कहते हुए मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, दिल्ली और छत्तीसगढ़ में भाजपा द्वारा क्लीन स्वीप करने की संभावना जताते हुए हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक और बिहार में थोड़ा नुकसान होने की बात कही है। आंध्र प्रदेश, ओडिशा और तेलंगाना में राजग को बढ़त दिखाई है। बहरहाल, एग्जिट नतीजों को लेकर दावों-प्रतिदावों का दौर शुरू हो गया है, जो चार जून तक जारी रहना है, जब नतीजे आएंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि अवसरवादी इंडी गठबंधन मतदाताओं के दिलों को छूने में विफल रहा है। मतदाताओं ने विपक्ष की 'प्रतिगामी राजनीति' को खारिज कर दिया है। कांग्रेस ने कहा है कि एग्जिट पोल उस व्यक्ति ने 'मैनेज' करवाए हैं, जिनका चार जून को 'एग्जिट' (विदा) होना तय है। एग्जिट पोल दरअसल, मतदाता का रुझान दर्शाते हैं, और जरूरी नहीं कि फाइनल नतीजे के रोज वैसे ही रहें जैसे बताए गए हों। ये विशुद्ध कयासबाजी होती होते हैं, हालांकि इस बात से इनकार नहीं कि एग्जिट पोल तैयार करना एक पूरा विज्ञान ही है। छोटी से छोटी डिटेल तक का संज्ञान लेने का प्रयास होता है, लेकिन कई दफा हुआ है जब फाइनल नतीजे एग्जिट पोल के बिल्कुल उलट आए। लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि एग्जिट पोल के उलट फाइनल नतीजे आए तो एग्जिट पोल करने वाली एजेंसियों की विश्वसनीयता पर बड़ा सवाल लग जाएगा। बहुत से लोगों के गले एग्जिट पोल इसलिए नहीं उतर रहे कि महंगाई, बेरोजगारी, किसान असंतोष जैसी मामलों को हैंडल करने में सरकार की परिणामोन्मुख नहीं दिखी। सत्ता-जनित आक्रोश को भी अनदेखा नहीं कर सकते। बहरहाल, चार जून का शिद्दत से इंतजार है।

मुश्किल में ट्रंप

ऐतिहासिक फैसले में न्यूयॉर्क की अदालत ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को हश मनी मामले में दोषी करार दिया। पहली बार है, जब किसी पूर्व या मौजूदा राष्ट्रपति को दोषी करार दिया गया। वह भी 34 मामलों में। ट्रंप को 11 जुलाई को सजा सुनाई जाएगी। उन्हें जेल जाना पड़ सकता है। ट्रंप ने इस फैसले को अपमानजनक कहा और अध्यक्षता करने वाले जज को भ्रष्ट बताया। वे इसके खिलाफ अपील करेंगे। ट्रंप पर आरोप है कि 2016 में उन्होंने स्कैंडल से बचने के लिए पोर्न फिल्म स्टार को मुंह बंद रखने को कानूनी खर्च के तौर पर गुप्त रूप से मोटी रकम चुकाई थी जो उनके विवाहेतर संबंधों की कहानी अखबार को बेचने की बात कर रही थी। विशेषज्ञों

के अनुसार जिन मामलों में पूर्व राष्ट्रपति दोषी ठहराए गए हैं, उनमें जेल की सजा की संभावनाएं बहुत कम हैं, बल्कि मोटा जुर्माना लगने की संभावना अधिक है। यह भी कि उन्हें घर पर नजरबंद रखा जा सकता है। अमेरिकी संविधान के मुताबिक जेल होने पर भी ट्रंप की उम्मीदवारी को आंच नहीं आ सकती। उनकी पार्टी ने व्हाइट हाउस की दौड़ में शामिल ट्रंप पर अपना भरोसा भी जताया है जबकि अभी औपचारिक रूप से राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार घोषित किया जाना बाकी है। पार्टी के आधे से अधिक पदाधिकारियों का उन्हें पहले से समर्थन प्राप्त है। कहा जा रहा है, उनमें से कुछ के इस फैसले से प्रभावित होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। मैनहट्टन डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी के दफ्तर द्वारा जब ट्रंप पर लगे आरोपों को घोर अपराध की श्रेणी में शामिल किया गया था तभी उनके विरोधियों को भरोसा हो गया था कि वे चुनाव से पहले मुसीबतों में घिर सकते हैं। उन्होंने इसे कानूनी मानने की बाजाय राजनीतिक एक्सरसाइज करार दिया। पहले से ही माना जा रहा है कि सारी कवायद चुनाव को लेकर ही चल रही है। व्यवसायी होने के बावजूद ट्रंप सधे हुए राजनीतिज्ञ साबित हुए हैं। विरोधियों को टक्कर देने के मामले में पूरा दम-खम लगाने से नहीं चूकते। उन्हें युवाओं और जोशीले लोगों का समर्थन रहा है जिनके बारे में आकलन है कि वे अपने नेता के प्रति समर्पित बने रहने में कोताही नहीं करेंगे। हालांकि सबकी नजरें अब सजा पर टिकी हैं, जो अमेरिकी इतिहास ही नहीं, दुनिया भर के राजनीतिज्ञों के लिए ऐतिहासिक साबित हो सकती है।

परिधि/ संजीव ठाकुर

श्रम साफल्य

जहां सफलता की संभावना एकदम न्यून हो और सफलता मिल जाए तो भाग्य को श्रेय दिया जाता है। वास्तव में जो सफलता के चरम पर होता है, वह खुद ही जानता है कि भाग्य जैसी कोई चीज नहीं होती है पर सफल व्यक्ति से जुड़े हुए लोग उनके साहस और श्रम को श्रेय देने के बजाय व्यक्ति के भाग्य पर जोर देने लगते हैं। इस दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं, जो सफलता को कुछ निश्चित गुणों पर आधारित मानते हैं।

असफल व्यक्ति ही भाग्य पर ज्यादा भरोसा करते हैं, असफल होने पर अपने भाग्य को कोसते हैं। वस्तुतः भाग्य नाम की कोई चिड़िया होती ही नहीं है। भाग्य साहस और मेहनत की परिणति है। जिसके भीतर साहस और श्रम करने की प्रवृत्ति होती है, वही व्यक्ति सफल होता है। भाग्य उसका सदैव साथ देता है। साहसी व्यक्ति मेहनत से नहीं डरता, चुनौतियां स्वीकार करता है और निडर होकर हर चुनौती का डटकर मुकाबला करता है। मशहूर मुक्केबाज मोहम्मद अली उर्फ कैशियस क्ले ने एक महत्त्वपूर्ण मुक्केबाजी की स्पर्धा जीतकर कहा था, 'जो व्यक्ति जीवन में ज्यादा खतरे नहीं उठाता वह एक साधारण जिंदगी जीने से ज्यादा कुछ नहीं कर सकता।' मोहम्मद अली के इस कथन में कई सफलता के तत्व छुपे हुए हैं।, यदि आपने अपनी जिंदगी में साहस नहीं दिखाया तो निश्चित तौर पर आप कुछ भी उल्लेखनीय नहीं कर सकते हैं, साहस एक ऐसा माननीय गुण है जो व्यक्ति की सफलता को दोगुना कर देता है। साहस और श्रम ही जीवन का पर्याय है, और ऐसे व्यक्ति भीड़ में अलग दिखाई देते हैं। नेपोलियन बोनापार्ट के अनुसार भाग्य केवल सक्रिय मस्तिष्क का साथ देता है, इसीलिए मनुष्य को अपना मस्तिक सदैव क्रियाशील व सक्रिय रखना चाहिए। जिसने विचारों की ऊर्जा को पहचाना, उसका जीवन सकारात्मक तथा सफलता के कदम चूमता है। अपने लक्ष्य के बारे में सदैव विचार करते रहें एवं उपलब्ध संसाधनों का रोना रोने के बजाय यह सोचना आवश्यक होगा कि हम अपना सर्वोत्तम कैसे दे सकते हैं। प्राचीन यूनानी कवि वर्जिन में युवाओं को संबोधित करते लिखा था कि 'भाग्य सदैव साहसी लोगों का साथ देता है।' अब्राहम लिंकन ने भी कहा कि डर कमजोर दिमाग के निशानी है। गीता का भी ज्ञान है कि कर्म किए जा फल की इच्छा मत रख ए इंसान, आप स्वयं एक दिन कह उठेंगे भाग्य साहसी व्यक्ति का साथ देता है।

साधना से निकले नये संकल्प

कन्याकुमारी

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री, भारत

मेरे प्यारे देशवासियो,

लोकतंत्र की जननी में लोकतंत्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव एक जून को पूरा हो रहा है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद, मैं अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं...कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं। वाकई, 24 के इस चुनाव में, कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोक सभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। मां भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद...उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार...मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया। इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था। मैं ईश्वर का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिए। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा।

इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, Oneness का निरंतर अहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

साथियो,

कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था। इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वाभाविक रूप से होता था। कश्मीर से कन्याकुमारी...ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्याकुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर मां शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे। कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहां एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम! यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएं यहां राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की ये धरती एकता का अमिट संदेश देती है। कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा।

साथियो,

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था-Every Nation Has a Message to deliver a mission to fulfill a destiny to reach.

भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदंडों पर नहीं तौला। इसीलिए, **'इदं न मम'** यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है। भारत के कल्याण से विश्व का कल्याण, भारत की प्रगति से विश्व की प्रगति, इसका एक बड़ा उदाहरण हमारी आजादी का आंदोलन भी है। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। उस समय दुनिया के कई देश गुलामी में थे। भारत की स्वतंत्रता से उन देशों को भी प्रेरणा और बल मिला, उन्होंने आजादी प्राप्त की। अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है। जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला। आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। प्रो-पीपल गुड गवर्नेंस, aspirational district, aspirational block जैसे अभिनव प्रयोग की आज विश्व में चर्चा हो रही है। गरीब के सशक्तिकरण से लेकर लास्ट माइल डिलिवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त करने में, पारदर्शिता लाने में, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं। भारत में सस्ता डेटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुंच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है। पूरा विश्व technology के इस democratization को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं। आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। ये पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्त्वपूर्ण आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन जी 20 ग्रुप का हिस्सा बना। ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है।

साथियो,

नये भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्त्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नये स्वप्न देखने हैं। अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है, और उन सपनों को जीना शुरू करना है। हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका संपूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमें reform को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा। भारत reform को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता। हमें जीवन में हर क्षेत्र में reform की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे reform 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए। हमें ये भी समझना होगा कि किसी भी देश के लिए reform कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने देश के लिए reform, perform और transform विजन सामने रखा। reform का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी perform करती है और फिर जब जनता जनार्दन इससे जुड़ जाती है, तो transformation होते हुए देखते हैं। भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। हमें speed, scale, scope और standard चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें zero defect-zero effect के मंत्र को आत्मसात करना होगा।

साथियो,

हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है। ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुए अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा। हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से, professional pessimists के दबाव से बाहर निकालना है। हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है। भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है। जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवे दशक को अपनी आजादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं, निरंतर योगदान का समय है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आजाद हो गया। आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नये भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

(कन्याकुमारी से दिल्ली लौटते समय विमान में सवा चार बजे शाम से 7 बजे के बीच प्रधानमंत्री मोदी द्वारा कागज पर उतारे गए विचार)

> मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है। जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवे दशक को अपनी आजादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं, निरंतर योगदान का समय है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे

होनहार होने की कसौटी

मुद्दा | सतीश सिंह

मौजूदा समय में शिक्षा और कौशल विकास के बीच तालमेल नहीं दिख रहा है। शिक्षा के माध्यम से कौशल का विकास होना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है। हमारे अकादमिक कल-कारखानों से लाखों की संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर, एमबीए आदि की भारी-भरकम डिग्रियां लेकर युवा निकल रहे हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश कौशलयुक्त एवं ज्ञानवान नहीं हैं। ऐसे लोग किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक अंजाम तक नहीं पहुंचा पाते, लेकिन होनहार के लिए रोजगार की कमी नहीं है।

तकनीकी एवं व्यावहारिक ज्ञान रखने वाले, भले ही डिग्री एवं अंग्रेजी के मामले में पीछे होते हैं, लेकिन वे हर किस्म की मुश्किलों को आसानी से सुलझा सकते हैं क्योंकि किसी कार्य को करने के लिए डिग्री से ज्यादा कौशल की जरूरत होती है। कौशल को विकसित करके युवा बिना किसी डिग्री के भी हर कार्य कुशलतापूर्वक कर सकते हैं। हमारे देश के स्कूल और कॉलेज के अध्यापकों का मानना है कि जो बच्चा लगातार हर परीक्षा में अव्वल आ रहा है, उसी को सिर्फ होनहार माना जा सकता है, जो छात्र इस कसौटी पर खरा नहीं उतर पाते हैं, उन्हें कमअक्ल माना जाता है। इसमें दो मत नहीं हैं कि स्कूल-कॉलेजों में प्राप्त अच्छे अंक छात्र-छात्राओं की पढ़ाई के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं किंतु इसका मतलब कदापि नहीं है कि हम इसे मेधावी होने या न होने का प्रमाण मानें। किसी विषय में कम या ज्यादा अंक प्राप्त करने से किसी भी छात्र को मेघावी या कमअक्ल नहीं माना जा सकता। हर विषय में हर छात्र की रुचि का होना जरूरी नहीं है। महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन की रुचि केवल भौतिक विज्ञान में थी। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। लता मंगेशकर की भी गणित या विज्ञान में रुचि नहीं थी। सचिन तेंदुलकर या महेंद्र सिंह धोनी का अकादमिक रिकॉर्ड बहुत खराब रहा है, लेकिन वे अपने क्षेत्र में महान हैं।

दरअसल, यहां फंडा 'जब जागा तभी सवेरा' वाला है। जिन छात्रों के अंदर जीवन में सफलता हासिल करने की जिजीविषा जागृत हो जाती है वे हर कक्षा में तृतीय या द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण होने के बावजूद आईएएस की परीक्षा में शीर्ष 20 या 50 में

स्थान बनाने में सफल हो जाते हैं। बारहवीं फेल फिल्म में एक ऐसे ही युवा की कहानी फिल्माई गई है। फिल्म 'थ्री इडियट' में दिखाए गए दर्शन को भी हम नकार नहीं सकते। जरूरी नहीं कि हर बच्चा इंजीनियर या डॉक्टर बने। दुनिया में करने के लिए इतने सारे क्षेत्र हैं कि आप किसी बच्चे को कमतर नहीं मान सकते। बस आपके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि आप किसे होनहार मानते हैं। भारत में जो बच्चे कॉलेज तक लगातार अच्छे अंक लाकर नौकरी के लिए आवेदन करने लायक अर्हता अंक प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं, उन्हें ही जहीन माना जाता है। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने 2013 में पहली बार प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के अंकों को सार्वजनिक किया था, जिसमें 1004 अभ्यर्थी सफल हुए थे और शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले प्रत्याशी ने समग्र रूप 53 प्रतिशत अंक हासिल किए थे जबकि अंतिम पायदान पर सफल रहने वाले अभ्यर्थी ने लिखित परीक्षा में 30 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। पूर्व में धारणा थी कि यूपीएससी की परीक्षा में 75 से 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी ही सफल होते हैं।

मामला यूपीएससी तक सीमित रहे तो बात समझ में आए। हालात तो इतने बदतर हैं कि बैंक या अन्य निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में कर्मचारियों की भर्ती हेतु आयोजित प्रतियोगी परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी 100 तो छोड़िए 60 प्रतिशत अंक भी स्कोर नहीं कर पाते हैं। देश में इंजीनियरिंग, मेडिकल,आईटीआई एवं अन्य रोजगारपरक शिक्षा की शुरुआत जरूर की गई है, लेकिन इन पाठ्यक्रमों की सार्थकता नाममात्र की है, क्योंकि यहां से पढ़कर बाहर निकलने के बाद भी अधिकांश युवा कौशलहीन होते हैं, जबकि हुनरमंद युवा देश के समावेशी विकास को सुनिश्चित करने में आगे रहते हैं। हुनरमंद बेरोजगार नहीं रहता। आसानी से अपने परिवार का भरण-पोषण कर लेता है। बढ़ई, लोहार, प्लंबर, बिजली मिस्त्री, राज मिस्त्री, वाहन की मरम्मत करने वाले कारीगर आदि कभी भूखे नहीं मरते। सरकार को कर भी देते हैं, और देश के अर्थ चक्र को गतिमान भी रखते हैं। अस्तु, आज सरकार को डिग्री बांटने की जगह युवाओं को हुनरमंद बनाने पर जोर देना चाहिए और योग्यतानुसार रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में अग्रतर कार्रवाई करनी चाहिए क्योंकि सभी के ज्ञान का स्तर एक समान नहीं होता पर निरंतर मेहनत सभी कर सकते हैं। मामले में अंकों की बाजीगरी की तह तक पहुंचने की भी आवश्यकता है। ऐसा होता है तो सरकार और लोग स्वतः कौशल विकास को प्राथमिकता देंगे।

रीडर्स मेल

मूक प्राणियों को बचाना होगा

इन दिनों देश भर में भीषण गर्मी का प्रकोप जारी है। कई शहरों में अधिकतम तापमान 48 से 50 डिग्री सेल्सियस पर जा पहुंचा है। तेज गर्मी में पशु-पक्षियों का जीवन खतरे में आ गया है। पशु-पक्षियों के लिए हम सभी को दाना-पानी एवं उचित छायादार स्थल की व्यवस्था करनी चाहिए। स्थानीय प्रशासन को भी आवारा पशुओं के लिए छायादार स्थान और जल की व्यवस्था करनी चाहिए। पशु-पक्षियों के लिए छायादार मानव-निर्मित आश्रयस्थल बनाकर उनको नया जीवन दिया जा सकता है। शास्त्रों के अनुसार मूक प्राणियों की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। तेज गर्मी से बचने के लिए इंसान तो अपने इंतजाम कर लेता है, किंतु मूक प्राणियों के लिए गर्मी को सह पाना कठिन होता है। हमें अपने घर के आसपास पशु-पक्षियों के लिए पीने का पानी अवश्य रखना चाहिए। हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से मूक प्राणियों का जीवन बचाए रखा जा सकता है।

अंकित सोनी 'आदित्य', धार, मप्र

पढ़ने-पढ़ाने की आदत से राहत

बदलते सामाजिक परिवेश से डिमेंशिया की गिरफ्त में आ रहे हैं बुजुर्ग। जैसे-जैसे बुजुर्गों की संख्या बढ़ने लगी है वैसे-वैसे डिमेंशिया की बीमारी का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। डिमेंशिया के लिए बहुत कुछ हमारी सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक परिवेश भी जिम्मेदार हैं। एकल परिवार, अपने में खोए रहना और दिन प्रतिदिन की भागमभाग के साथ ही पढ़ने-पढ़ाने की आदत कम होना भी इसके प्रमुख कारण हैं। अध्ययन में सामने आया है कि लिखने-लिखाने और पढ़ने-पढ़ाने की आदत से बुजुर्गों को डिमेंशिया से काफी हद से बचाया जा सकता है। डिमेंशिया के बढ़ते खतरे को देखते हुए गैर-सरकारी संगठनों, सामाजिक संस्थानों को भी सक्रिय होना होगा। ऐसे में मनोविश्लेषकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को गंभीरता से प्रयास करने होंगे।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, ई मेल से

कहर बनता मिलावटी दूध

एक जून को विश्व दुग्ध दिवस मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन ने 2001 में विश्व दुग्ध दिवस मनाने की शुरुआत की थी। उद्देश्य था दुग्ध डेयरियों को नई पहचान मिले, दूध का व्यवसाय लाभकारी बने और इस व्यवसाय के प्रति जागरूकता फैले। मौजूदा समय में हमारे देश में दुग्ध व्यवसाय से लाखों लोगों की रोजी-रोटी चल रही है। अनेक दुग्ध कंपनियां या डेयरियां हैं, जो गांवों में दुधारू पशुपालकों के लिए वरदान हैं। सरकार को चाहिए कि डेयरी और दुग्ध कंपनियों को ज्यादा से ज्यादा सब्सिडी उपलब्ध करवाए ताकि डेयरियां ज्यादा से ज्यादा युवाओं के रोजगार का कारण बनें। दूध स्वास्थ्य के लिए उपयोगी माना जाता है, लेकिन इसमें कैमिकल मिल जाए तो यह सेहत के लिए हानिकारक बन सकता है। सुप्रीम कोर्ट भी मिलावटी दूध पर चिंता जता चुका है। सरकार और प्रशासन मिलावट रोकने के लिए गंभीरता नहीं दिखाता वहीं भ्रष्टाचार के कारण ही इसकी जांच नहीं होती।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा • राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
वर्ष-33, अंक 290
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

• अनंत ऊर्जा | बीके शिवानी, आध्यात्मिक वक्ता और लेखिका

हालात को स्वीकार करें तो समाधान भी मिल जाएंगे

दुनिया में आज असुरक्षा की बीमारी सबसे बड़ी बनती जा रही है। असुरक्षा की भावना घरों में भी है, दफ्तर में भी है और सेवा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। असुरक्षा में हम औरों को आगे बढ़ता हुआ नहीं देख पाते हैं। पर अध्यात्म हमें यह सिखाता है कि हम जितना औरों को आगे बढ़ाएंगे उतना ही खुद भी आगे बढ़ जाएंगे।

जीवन में यह बात हमेशा याद रखिए कि जब कोई किसी के बारे में बोलता है, तो वास्तव में वो उनके बारे में नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व के बारे में बता रहा होता है। तो हम उससे दूसरे को नहीं, लेकिन सुनाने वाले को जान जाते हैं। क्योंकि जो सुनाएगा वो अपने नजरिए से सुनाएगा। दूसरे के अंदर विशेषता न भी हो लेकिन देखने वाले के अंदर अगर वो नजर है, तो वो अच्छा-अच्छा ही देखेगा। दूसरे के अंदर अगर विशेषता हो लेकिन हमारे अंदर अच्छा देखने की नजर न हो तो हम कभी-कभी दूसरों के बारे में बहुत कड़वी बातें कह जाते हैं। जब भी किसी का परिचय सुनाएं तो एक चीज हमेशा याद रखें कि वो उनका नहीं बल्कि अपना व्यक्तित्व दर्शा रहे हैं।

युवा इस बात को भी समझें कि कोई कॉलेज सही मायनों में आपका व्यक्तित्व निर्माण नहीं कर सकता, वो सिर्फ आपको पढ़ा सकता है। व्यक्तित्व कैसा बनाना है, यह हमें ही तय करना है। वो सिर्फ हमें राह दिखा सकते हैं। युवाकाल हमारे जीवन का स्वर्णिम समय होता है। हमारी वाइब्रेशंस से ही लोगों के आधे दुःख दूर हो जाते हैं। हमें इन वर्षों में यह देखना है कि किसका हम पर क्या असर पड़ता है और मुझे कैसा बनना है। कुछ लोगों से हम मिलते हैं, तो हमें उनसे मिलकर मजा नहीं आता है। उस समय हम यही सोचते हैं कि काश इनसे नहीं मिलते तो अच्छा रहता। वहीं, इसके अलट कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनसे मिलने के लिए हम दिन भर इंतजार करते हैं क्योंकि वो प्यार से बात करते हैं।

युवाओं को समझना होगा कि जीवन में अभी चुनौतियां आना बाकी है। अभी तो वह उस दौर में भी नहीं गए हैं जहां इतना प्रेशर है, टारगेट है, कम समय है, घर भी संभालना है, काम भी करना है। अभी तो कोई प्रेशर नहीं उनके ऊपर। जब कोई दबाव नहीं है तब गुस्सा आता है तो आप स्वयं को उस स्थिति में देखो, तब आपको कितना गुस्सा आएगा। समाधान पर विचार करें। परिस्थितियों को पहले स्वीकार करें, फिर उन पर अपनी प्रतिक्रिया दें। हालात को इतने प्यार से स्वीकार करें, जैसे कि आपने खुद वैसा ही चाहा था। कल्पना करें कि हमारे जीवन में संयोग से कोई बड़ी बात आई है, हमें उसे चुनौती बनाते हुए पार करना है। उस चुनौती से पार पाना भी अपने आप में एक यात्रा है। उस यात्रा में कभी कुछ घंटे, कभी कुछ दिन, कभी कुछ साल लगते हैं। कभी-कभी वो चुनौती हमारे जीवन का हिस्सा बन जाती है।

जीवन में कुछ परिस्थितियां ऐसी आती है जिसका आगे समाधान नहीं दिखता। लेकिन अधिकांश परिस्थितियां आज नहीं तो कल ठीक हो जाती हैं, हां संघर्ष का दौर लंबा चल सकता है। हमारे जीवन में जो बात आई, कई बार हम उसे दुर्भाग्य कह देते हैं, कोई हादसा, कोई बड़ी बात। लेकन वह स्थाई नहीं होतीं। जिस क्षम आपने हालात को स्वीकार कर लिया, बदला भी शुरू हो जाता है। जब भी कोई बात आती है तो हमारा मन प्रश्नों में चला जाता है। जब चित्त प्रश्नों से भर जाएगा तब मन की स्थिति प्रसन्न चित्त नहीं रहती है। जहां हमें उस समस्या का समाधान दिखने वाला है, वो हमें नहीं दिखेगा, क्योंकि हमारे मन में हलचल हो रही है।

हर बात का पहले मन पर असर पड़ता है, फिर शरीर पर भी असर पड़ता है। आज बात एक होती है। अगर हमने उसका पूरी ताकत से सामना नहीं किया तो दूसरी समस्या हम खुद पैदा कर देते हैं। मन दर्द में चला गया, भय में चला गया, असुरक्षा में चला गया तो उस मन को डिप्रेशन हो जाता है। कई बार किसी के रिश्ते में उतार-चढ़ाव आता है उसका प्रभाव इतना बड़ा पड़ता है कि किसी को डिप्रेशन हो जाता है, किसी का बीपी बढ़ जाता है, किसी को हार्ट अटैक हो जाता है। कई बार हम युवाओं में देखते हैं कि उन्होंने डिसाइड किया था कि उनके जीवन में क्या होगा। मतलब करिअर में वो कैसे चलेंगे, आगे क्या बनें। वो जो सोचा था कि जीवन की स्क्रिप्ट ऐसी चलेगी जीवन की।

जो चाहा था वो नहीं मिलता तो लोग अपने आपको भी कुछ कर लेते हैं या हताश हो जाते हैं। पर ध्यान रखिए, जीवन के घटनाक्रम आपस में जुड़े होते हैं। एक कदम कई सारी समस्याएं खड़ी कर देता है, इसलिए जीवन में अगर कोई बात आए तो पहले उसे स्वीकारें, फिर उस बात को फेस करें, उस बात से प्रभावित ना हो जाएं। स्वीकार्य की कमी बहुत सारी समस्याओं का कारण बन जाती है।

विशेष • कन्याकुमारी में साधना से निकले नए संकल्प

आइए, मिलकर चलें, भारत को विकसित राष्ट्र बनाएं

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

मेरे प्यारे देशवासियो,

लोकतंत्र की जननी में लोकतंत्र के सबसे बड़े महापर्व का समापन हो चुका है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद, कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं।

वाकई, 2024 के इस चुनाव में कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान, 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया था। मां भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद...उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार...मैं सबकुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं। मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद-विवाद, वार-पलटवार, आरोपों के स्वर-शब्द शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया। मेरा मन बाह्य जगत में पूरी तरह अलिप्त हो गया। इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं ईश्वर का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिए। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा। इस विरक्ति के बीच भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया, क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, 'वननेस' का निरंतर एहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

साथियो, कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासियों के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है, जहां मां शक्ति ने कन्याकुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर मां शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की, जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे।

कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहां एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम! यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएं यहां राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की धरती एकता का अमिट संदेश देती है। कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समुंदर में मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है।

आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। गरीब के सशक्तिकरण से लेकर लास्ट माइल डिलीवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। नए भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों-बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। सपनों को अपना जीवन बनाना है और उन सपनों को जीना शुरू करना है। हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, इसके लिए ये जरूरी है कि हम भारत के सामर्थ्य को समझें। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आजाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

(ये विचार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 1 जून को कन्याकुमारी से दिल्ली की वापसी की उड़ान के दौरान शाम 4:15 से 7 बजे के बीच लिखे थे)

• रिसर्च आधारित पॉजिटिविटी- काम में प्रवाह क्यों जरूरी है?

अगर काम में जुनून हो तो दिमाग भी अपनी पूरी क्षमता से काम करता है

डॉ. रितु पांडेय शर्मा | लेखिका, माइंडफुलनेस विशेषज्ञ
reetupost@yahoo.com

हम सभी ने ऐसे कलाकारों के बारे में सुना है जो अपने काम में इतना खो जाते थे कि खाना-पीना, सोना तक भूल जाते थे। उनके लिए जब शब्द, संगीत नोड्स और रंग उनकी चेतना से बह उठते हैं, तो वास्तव में कुछ भी मायने नहीं रखता। एक धावक दौड़ने की क्रिया में होता है तो उसके जूते लयबद्ध तरीके से फुटपाथ पर टकराते हैं। वह पूरी तरह से अनुभव में डूबा हुआ है। और कुछ मौजूद नहीं है। सिवाय प्रवाह या फ्लो के। इस प्रवाह की अवस्था का अर्थ है- किसी गतिविधि में पूरी तरह से शामिल हो जाने पर अहंकार का दूर हो जाना, समय का भान न होना। जब क्रिया, आंदोलन और विचार अनिवार्य रूप से चेतना का अनुसरण करते हैं, और आपका पूरा अस्तित्व इसमें शामिल है और आप कौशल का अधिकतम उपयोग करते हैं, तो इस एक होने को ही शंकराचार्य 'एकात्म' कहते हैं। सवाल है कि प्रवाह या फ्लो हमें इतना खुश क्यों करता है? अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डॉ. मिहाली के अनुसार मानव मस्तिष्क प्रति सेकंड केवल 110 बिट जानकारी संसाधित कर सकता है। उदाहरण के लिए, किसी की बात सुनने में 60 बिट लगते हैं, यही कारण है कि हम एक साथ दो लोगों को नहीं सुन सकते। पर जब कोई पसंदीदा काम कर रहे होते हैं तो हमारी पूरी क्षमताएं उपयोग में आती हैं, सभी 110 बिट प्रति सेकंड। खुश रहने के लिए मन का प्रवाह इतना महत्वपूर्ण क्यों है? और अगर हम अपने काम से प्रेम करते हैं और उसमें अच्छे हैं, चाहे वो कुछ भी हो तो हमारी जादुई 'फ्लो' स्थिति खुल जाती है। प्रवाह की स्थिति में आने का सबसे अच्छा तरीका अपने जुनून को ढूंढें।

• देश-दुनिया की सकारात्मक परम्पराएं

अर्जेंटीना : रात के आकाश को निहारने जुटते हैं लोग

• कृत्रिम रोशनी के कारण दुनियाभर में प्रकाश प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है और इसका सीधा प्रभाव रात के आसमान में भी दिखाई देता है। शहरी इलाकों में कई बार तारे नजर नहीं आते। अर्जेंटीना के ग्रीन थंब इलाके की जनजातियां, रात्रिकालीन आकाश और इससे जुड़े प्राचीन ज्ञान को संजोने का काम कर रही हैं।

• अर्जेंटीना के जंगलों में युवतु पोरा गुआरानी समुदाय के लोग आगंतुकों के लिए 'तारों को निहारें' जैसे विशेष कार्यक्रम आयोजित करते हैं। पारंपरिक ज्ञान साझा करने के साथ ही रात में रास्ता खोजने जैसी प्रतिस्पर्धा होती हैं। इसमें उत्तरी गोलार्ध से दिखने वाले तारा समूह के साथ विभिन्न तारामंडल की मदद से रास्ते खोजने पड़ते हैं।

अर्जेंटीना में नाइट स्काई को निहारने जैसे आयोजन से पर्यटन गतिविधियों को भी बढ़ावा मिल रहा है।

https://t.me/AllNewspaperPdf

© The New York Times

दैनिक भास्कर

अब आप NYT के सभी आर्टिकल DB एप पर हर सोमवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

बिजनेस

'लेगो' अब वयस्कों के लिए भी टॉय बनाती है, इससे कंपनी को मुनाफा

लेगो का फ्रांस के नॉट्र डाम कैथेड्रल का नया टॉय।

जेनी ग्रॉस

दुनिया की सबसे बड़ी टॉय कंपनी लेगो ने शनिवार को फ्रांस के मशहूर नॉट्र डाम कैथेड्रल का मॉडल पेश करके बहुत लोगों को राहत दी है। फ्रांस में इतिहास के शिक्षक अरनॉड गाउडिलाट उस वक्त फूट कर रो पड़े जब उन्होंने 2019 में नॉट्र डाम गिरजाघर को आग से जलते हुए टेलीविजन पर देखा था। अब पांच साल बाद सैकड़ों आर्किटेक्ट, इंजीनियर और वर्कर जले हुए कैथेड्रल के पुनर्निर्माण को अंतिम रूप देने में लगे हैं। लेगो ने वयस्कों के लिए कैथेड्रल का हूबहू मॉडल बनाया है। गाउडिलाट जैसे लोग 4,383 लेगो पीस से अपना नॉट्र डाम बना सकेंगे।

डेनमार्क की टॉय कंपनी अपने बेस्ट सेलिंग एनिमल सेट्स, ट्रेन सेट्स और हैरी पॉटर थीम पर बने सेट्स सहित बच्चों के लिए रंगबिरंगे प्ले सेट के लिए मशहूर रही है। लेकिन 2020 के बाद से लेगो ने 18 साल से अधिक आयु के लोगों के लिए खिलौनों की नई कैटेगरी बनाना शुरू किया। कंपनी ने वयस्कों के लिए अपने टॉय की रेंज दोगुनी कर दी है। कंपनी के लगभग 20 प्रतिशत सेट्स वयस्क फैन्स के लिए बेचे जा रहे हैं। नॉट्र डाम का 19 हजार रुपए कीमत का सेट अपनी डिजाइन के कारण लोगों का ध्यान खींच रहा है। लेगो ने अपने 67 साल के इतिहास में पहला धार्मिक ढांचा बनाया है।

कंपनी का कहना है कि वह लेगो को वयस्कों के लिए एक वैधानिक मनोरंजन बनाना चाहती है। लेगो, वयस्कों को पसंद आने वाली थीम जैसे लॉर्ड ऑफ रिंग्स, स्टार वार्स आदि पर ध्यान दे रहा है। वयस्कों के हिसाब से आर्किटेक्चर, फूलों के डिजाइन वाले टॉय बनाए जा रहे हैं। स्टार वार्स मिलेनियम फाल्कन मॉडल 70 हजार रुपए का था। पिछले साल लेगो की बिक्री में चार प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है जबकि मैटल और हैसब्रो जैसी कंपनियों के कारोबार में गिरावट आई है। लेगो के चीफ एक्जीक्यूटिव निएल्स क्रिस्टेनसन ने बताया कंपनी अगले दस माह में 100 से अधिक स्टोर खोलेगी।

© The New York Times

सजा के खिलाफ अपील में ट्रम्प को सफलता मिलने की संभावना कम; जज ने बरी होने के कई रास्ते बंद किए

कानून

विशेषज्ञ कहते हैं आमतौर पर जूरी के फैसलों को अपील अदालत खारिज नहीं करती हैं

बेन प्रोटीस, विलियम रैशबॉम, जॉन ब्रामविच

सेक्स स्कैंडल छिपाने के लिए झूठे रिकॉर्ड पेश करने के मामले में दोषी अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने गुरुवार को मैनहट्टन की अदालत के फैसले के बाद कहा, अभी मामला लंबा चलेगा। फैसले को धांधली करार देने वाले ट्रम्प उसके खिलाफ अपील की तैयारी कर रहे हैं। लेकिन, अगर ट्रम्प राष्ट्रपति चुनाव जीत जाते हैं तब भी अपील अदालतों का रुख उनके अनुकूल होने की संभावना नहीं है। कई कानूनी विशेषज्ञों ने उनकी सफलता पर संदेह जताया है। उनका कहना है कि मुकदमा निपटने में कई साल लगेंगे। नवंबर के चुनाव के समय भी वे दोषी रहेंगे।

ट्रम्प पर 2016 चुनाव से पहले पोर्न स्टार स्टॉर्मी डेनियल्स को धन देने के मामले में 34 आरोपों पर दोषी ठहराया गया है। पूर्व राष्ट्रपति के समर्थक अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट से दखल देने की अपील कर रहे हैं। हालांकि, इसकी संभावना नहीं है। विशेषज्ञों का कहना है, न्यूयॉर्क की अदालत में अपील की स्थिति में ट्रम्प के पास फैसले को गलत बताने के रास्ते तो रहेंगे। लेकिन, वे उतने नहीं हैं जितना वे दावा करते हैं। ट्रम्प की अपील फैसला देने वाले जज जुआन मर्केन पर भी फैसले के समान होगी। ट्रम्प ने जज और उनके परिवार पर जमकर प्रहार किए हैं।

ट्रम्प की अपील पर सुनवाई करने वाली अदालत में अपील के आवेदनों की जांच करने वाली कमेटी के सदस्य मार्क जॉडर का कहना है, जस्टिस मर्केन ने कोई कसर बाकी नहीं रखी है। उन्होंने सजा को खारिज करने वाले पहलुओं का ध्यान रखा है। केस में ऐसा कुछ नहीं है कि अपील में फैसला पलट जाए। जस्टिस मर्केन के फैसले में कोई मुद्दा न मिलने के बावजूद ट्रम्प प्रोसीक्यूशन के मामले की बुनियाद को चुनौती देंगे। ट्रम्प के वकीलों का कहना है, मैनहट्टन के डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी एल्विन ब्रैग ने ट्रम्प पर बिजनेस रिकॉर्ड गलत बताने के लिए अनूठी थ्योरी का इस्तेमाल किया है। ब्रैग ने कहा है, ट्रम्प ने गैरकानूनी तरीकों से चुनाव जीतने के लिए राज्य के कानून तोड़े और उन्हें छिपाने के लिए गलत रिकॉर्ड बनाए हैं। ट्रम्प के वकील दलील दे सकते हैं कि ब्रैग ने राज्य के चुनाव कानून को बेवजह लंबा खींच लिया है। वे दावा कर सकते हैं कि झूठे रिकॉर्ड बनाने का कानून ट्रम्प के मामले में लागू नहीं होता है।

ट्रम्प ने जिंदगी भर कानूनी लड़ाइयां लड़ी हैं। वे मुकदमों को लंबा खींचते रहे हैं। जब कानून लागू कराने वाली एजेंसियों को लगा कि ट्रम्प अब फंस चुके हैं तब वे बच निकले हैं। राष्ट्रपति रहते हुए ट्रम्प पर महाभियोग के दो मामले चले, एक फेडरल जांच और एक स्पेशल काउंसिल की जांच हुई। उनके खिलाफ चार शहरों में चार मामले चल रहे हैं। लेकिन, अब स्थितियां उनके खिलाफ लग रही हैं। विशेषज्ञों का कहना है, कुछ बहुत बड़ी गलतियों या कदाचरण को छोड़कर अपील अदालतें आमतौर पर जूरी के फैसले नहीं पलटती हैं। जस्टिस मर्केन ट्रम्प को 11 जुलाई को सजा सुनाएंगे। ट्रम्प के पास अपील के लिए 30 दिन का समय रहेगा।

© The New York Times

बाइडेन पर सजा को चुनाव का मुद्दा बनाने का दबाव

गुरुवार को फैसले के बाद अदालत के बाहर अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प।

डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं का मानना है कि उनकी पार्टी के रुख पर न केवल राष्ट्रपति बाइडेन की चुनाव संभावनाएं बल्कि अमेरिकी लोकतंत्र का भविष्य निर्भर करेगा। 50 से अधिक डेमोक्रेट नेताओं का कहना है कि पार्टी वोटरों को बताने के लिए बेताब है कि ट्रम्प अब राष्ट्रपति बनने के काबिल नहीं हैं। उन्हें यह भी चिंता है कि बाइडेन चुनाव में इस मुद्दे को भुनाने की कोशिश शायद न करें। पार्टी नेता बाइडेन पर दबाव डाल रहे हैं कि वे ट्रम्प को दोषी करार दिए जाने से चुनाव में फायदा उठाएं। वैसे, बाइडेन ने अब तक ट्रम्प की कानूनी समस्याओं पर बोलने में सावधानी बरती है। फिर भी, शुक्रवार को बाइडेन के चुनाव अभियान ने आक्रामक रुख अपनाते हुए पहली बार कहा- दोषी अपराधी डोनाल्ड ट्रम्प।

मार्केटिंग

अमेरिका में बिक्री घटी तो बड़ी कंपनियों ने डिस्काउंट बढ़ाया

लॉरेन हिर्श

अमेरिका की रिटेल कंपनियां महंगाई झेल रही हैं। मैकडॉनल्ड्स की पहली तिमाही की बिक्री कम रही है। स्टारबक्स, टारगेट और पिज्जा हट की पैरेंट कंपनी यम ब्रांड्स, केएफसी की आय में कमी आई है। सभी कंपनियों ने स्वीकारा है कि मिडिल ईस्ट में युद्ध जैसे कारणों से कस्टमर सावधानी बरत रहे हैं। पहले बढ़ती महंगाई के बावजूद कंज्यूमर खर्च तेजी से बढ़ रहा था। लेकिन अब कोरोना वायरस महामारी के बीच की गई बचत खत्म हो गई है। इसलिए लोगों ने हाथ खींच लिए हैं। कंपनियां इस धारणा को दूर करने की कोशिश में लगी हैं कि उन्होंने मूल्य बढ़ा दिए हैं। कंज्यूमर को आकर्षित करने के लिए पिछले कुछ सप्ताहों से डिस्काउंट युद्ध शुरू हो गया है। मैकडॉनल्ड्स, बर्गर किंग, वेंडी ने कम मूल्य की चीजें पेश की हैं। ग्रॉसरी और अन्य सामान बेचने वाले रिटेलर्स ने कहा है कि वे हजारों आइटम पर मूल्य कम करेंगे। डॉमिनो कस्टमर को तीन डॉलर का कूपन दे रही है। सेंट्रल अरकंसास यूनिवर्सिटी में इकोनॉमिक्स के असिस्टेंट प्रोफेसर जेरेमी होरपेडहल कहते हैं, कंपनियां अपने कस्टमर्स की वापसी के प्रयास कर रही हैं।

© The New York Times

मस्क के 3.88 लाख करोड़ रु. के वेतन पैकेज का निवेशकों ने विरोध किया

कॉर्पोरेट

वोटिंग से पहले समर्थन के लिए सोशल मीडिया पर अभियान

केट कांगर, जेक इविंग

टेस्ला के चीफ एक्जीक्यूटिव इलॉन मस्क इस सप्ताह चुनिंदा शेयरहोल्डर्स से मुलाकात करने के लिए ऑस्टिन, टेक्सास में अपनी इलेक्ट्रिक कार फैक्टरी जाएंगे। मस्क ने एक्स पर लिखा, यदि टेस्ला शेयर्स की वोटिंग के संबंध में आपके कोई सवाल हों तो प्लीज मुझे बताइए। मस्क ने पिछले कुछ सप्ताहों में ऐसी दर्जनों पोस्ट की हैं। दरअसल, टेस्ला के शेयरहोल्डर 13 जून को उनके 3.88 लाख करोड़ रुपए के पे-पैकेज पर वोटिंग करेंगे।

पैकेज की मंजूरी को बढ़ावा देने के लिए मस्क ने रेगिस्तान में शाम के समय तेज रफ्तार से दौड़ते टेस्ला वाहनों की रील एक्स पर शेयर की है। उनका कहना है, उन्हें कंपनी पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए पर्याप्त शेयर्स की जरूरत है। मस्क ने वेतन का विरोध करने वाले निवेशकों की कड़ी आलोचना की है। एक्स के मैसेज बताते हैं कि मस्क के लिए वेतन पैकेज कितना अहम् है। जनवरी में डेलावेयर की एक अदालत ने पैकेज को रद्द कर दिया था। जज ने टेस्ला पर मुकदमा चलाने वाले एक असंतुष्ट शेयरहोल्डर के पक्ष में फैसला दिया है। शेयरहोल्डर का दावा है कि मस्क का पैकेज बहुत अधिक है।

वेतन पैकेज को मंजूरी दिलाने की मुहिम को शुक्रवार को धक्का लगा जब संस्थागत निवेशकों को सलाह देने वाली कंपनी इंस्टीट्यूशनल शेयरहोल्डर सर्विस ने मंजूरी का विरोध कर दिया। कानूनी विशेषज्ञों का कहना है, अगर टेस्ला के शेयरहोल्डर मस्क के वेतन को मंजूरी दे देते हैं तब भी उसे निर्णायक मंजूरी मिलने की संभावना नहीं है। डेलावेयर के जज इस पर अंतिम फैसला करेंगे। © The New York Times

गूगल पर आरोप, अखबारों की छपी खबरों से अपने एआई सर्च टूल को मजबूत बना रहा

टेक्नोलॉजी

दो हजार अखबारों ने दुरुपयोग रोकने के लिए जांच की मांग उठाई

निको ग्रांट, केटी राबर्टसन

मई में गूगल ने घोषणा की थी कि अमेरिका में हर व्यक्ति को किसी टॉपिक पर सर्च करने पर न्यूज साइट और ब्लॉग्स के कंटेंट से बनी एआई जनरेटेड खबरें, आर्टिकल का सार गूगल के एआई एंजिन 'एआई ओवरव्यूज' पर मिलेगा। यह खबर अखबारों और न्यूज पोर्टल्स के लिए खतरनाक थी क्योंकि इससे पाठक मूल न्यूज पर जाने के बजाय एआई जनरेटेड खबरें ही पढ़ने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

अब दो हजार अखबारों के ग्रुप न्यूज/मीडिया अलायंस ने जस्टिस डिपार्टमेंट और फेडरल ट्रेड कमीशन को पत्र भेजकर न्यूज कंटेंट का दुरुपयोग रोकने के लिए गूगल की जांच करने और कंपनी को एआई ओवरव्यूज जारी करने से रोकने की मांग की है। हालांकि, प्रकाशकों ने बताया कि एआई ओवरव्यूज के आने के बाद गूगल से ट्रैफिक में आए अंतर के बारे में बताना फिलहाल बहुत जल्दबाजी होगी।

कंटेंट चोरी का खतरा बढ़ा

कई मीडिया एक्जीक्यूटिव्स ने बताया कि गूगल ने उन्हें पेचीदा स्थिति में फंसा दिया है। वे अपनी साइट्स गूगल सर्च के रिजल्ट पर लिस्ट करना चाहते हैं। कुछ मीडिया संस्थानों का आधे से अधिक ट्रैफिक उससे जनरेट होता है। प्रकाशकों के सामने मुश्किल स्थिति है। क्योंकि गूगल सर्च पर बने रहने से उनके कंटेंट को चोरी का सीधा खतरा एआई ओवरव्यूज से है। एआई ओवरव्यूज बहुत हानिकारक है।

पिछले महीने जब जब फ्रेंक पाइन ने दो खबरों की लिंक को गूगल पर सर्च किया तो उन्हें विषय के संबंध में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से जनरेट किए गए दो पैराग्राफ मिले। वे जो देखना चाहते थे उसके लिए उन्हें उनके आगे स्क्रॉल करना पड़ा था। पाइन अमेरिका के 68 दैनिक अखबार प्रकाशित करने वाली कंपनी मीडिया न्यूज ग्रुप और ट्रिब्यून पब्लिशिंग के एक्जीक्यूटिव एडिटर हैं। इस अनुभव से पाइन को गुस्सा आ गया। उनका कहना है, इससे कंटेंट के मूल क्रिएटरों तक पहुंच रुकती है। एआई ओवरव्यूज का यह फीचर जनरेटिव एआई के अखबारों की जगह लेने की दिशा में एक और कदम है। इस बदलाव से पाइन और अन्य प्रकाशनों के एक्जीक्यूटिव चिंतित हैं। ऐसा कंटेंट और पैराग्राफ उनके बिजनेस मॉडल के लिए बड़ा खतरा है। गूगल से उनकी साइट पर ट्रैफिक बहुत कम हो जाएगा।

© The New York Times

कल्पमेधा

दूसरों को कष्ट देकर जीवनयापन करना तथा स्वयं परिश्रम न करके भोजन करना सच्चे मानव का लक्षण नहीं है।

– समर्थ स्वामी रामदास

लू के थपेड़े

हर वर्ष गर्मी में तापमान कुछ बढ़ा हुआ दर्ज हो रहा है। लू के थपेड़ों से लोगों की जान चली जाती है। पिछले वर्ष एक ही दिन में अकेले बलिया में करीब डेढ़ सौ लोगों की जान चली गई थी। दुनिया भर के मौसम वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तन के चलते बढ़ते वैश्विक ताप को लेकर चिंतित हैं। मगर इसे लेकर खुद सरकारें और उनके तंत्र कुछ गंभीर नजर नहीं आते। इसी का नतीजा है कि उत्तर प्रदेश और बिहार में मतदान के आखिरी चरण में लू लगने और बुखार की वजह से फिलहाल करीब पच्चीस लोगों के जान गंवा देने के आंकड़े आए हैं। इसके अलावा पिछले चार दिनों में सात राज्यों से करीब साढ़े तीन सौ लोगों के मरने के आंकड़े मिल रहे हैं। दो साल पहले ऐसी ही जानलेवा गर्मी के मौसम और कोरोना संक्रमण के समय उत्तर प्रदेश में पंचायत चुनाव कराए गए थे, जिसमें सौ से अधिक सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के चुनाव तैनाती के दौरान बीमार होकर मरने के आंकड़े आए थे। तब उत्तर प्रदेश अध्यापक संघ ने खासा विरोध दर्ज कराया और मुआवजे को लेकर सरकार पर काफी दबाव बनाया था। अब आम चुनाव के दौरान तैनात कर्मचारियों के मरने की खबरें आई हैं।

स्वाभाविक ही तेज गर्मी में तैनात कर्मचारियों के मरने को लेकर निर्वाचन आयोग की आलोचना हो रही है। मरने वाले कर्मचारियों में अधिकतर छोटी श्रेणी के हैं, जिन्हें लगभग पूरे समय धूप में ही खड़े रहना पड़ा होगा। इनके अलावा, उन हजारों सुरक्षाबलों की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है, जिन्हें चिलचिलाती धूप और लू के थपेड़े सहते हुए अपने कर्तव्य का निर्वाह करना पड़ा। मतदान की प्रक्रिया समाप्त हो गई, मगर यह सवाल अपनी जगह बना हुआ है कि आखिर निर्वाचन आयोग ने क्या सोच कर चुनाव को इतना लंबा खींचा और ऐसे मौसम में मतदान की तारीखें रखीं, जब पूरा उत्तर भारत लू में झुलस रहा होता है। ऐसा नहीं माना जा सकता कि निर्वाचन आयोग मई और जून के महीनों में चलने वाली गर्म हवाओं से अपरिचित रहा होगा। जब वह सुरक्षा उपायों का गंभीरता से अध्ययन कर सकता है, सुरक्षाबलों की तैनाती को लेकर इतना सतर्क हो सकता है, तो उसने मौसम विभाग के साथ बैठ कर गर्मी के चलते पैदा होने वाली दिक्कतों के बारे में जानकारी हासिल करने का प्रयास क्यों नहीं किया। कई लोगों का मानना है कि तेज गर्मी की वजह से बहुत सारे लोग मतदान के लिए घरों से बाहर नहीं निकले, जिससे कई जगहों पर मतदान काफी कम हुआ।

मतदान कराने का मतलब केवल यह नहीं होता कि कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की जाए और मतदाताओं की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाए। इस प्रक्रिया को संपन्न कराने वालों की सेहत और सुविधाओं का भी ध्यान रखना जरूरी होता है। निर्वाचन आयोग इस बात से बेखबर नहीं माना जा सकता कि गर्मी और लू के कारण लोगों का पाचन तंत्र खराब हो जाता है, जिन लोगों को दिल, गुर्दे वगैरह की समस्या है, उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ता है। जिन सरकारी कर्मचारियों को चुनाव केंद्रों पर तैनात किया गया, उनमें से अनेक लोग इस तरह की समस्याओं से पहले से जूझ रहे होंगे। आखिर उनकी सेहत का ध्यान रखने की जिम्मेदारी किस पर होगी। अब लू लगने से मरने वालों को मुआवजे की घोषणा की जा रही है, मगर इससे सरकारी तंत्र की लापरवाहियों पर पर्दा नहीं पड़ जाता।

लोकतंत्र के लिए

लोकसभा के लिए सात चरणों में हुए मतदान लगभग सहज तरीके से संपन्न हो गए। इस तरह लोकतंत्र के पर्व का यह आयोजन पूरा हुआ और इसके साथ ही सभी उम्मीदवारों की किस्मत मतों की गिनती तक चुनाव आयोग के संरक्षण में रहेगी। अब जाहिर है, इसके बाद समूचे देश को इसके नतीजों का इंतजार होगा, जिसकी घोषणा चार जून को होगी। हालांकि चुनाव में राजनीतिक दलों के बीच जिस स्तर की खींचतान रही, उत्तेजना का माहौल रहा, उसमें उम्मीद यही थी कि इस बार मतदान का फीसद शायद ऊंचा रहे, लेकिन मौसम और कुछ अन्य वजहों से बड़े पैमाने पर लोग मतदान केंद्रों पर नहीं पहुंचे। इसके बावजूद मतदान के संतोषजनक आंकड़ों से यही पता चलता है कि लोगों ने नई सरकार का चुनाव करने के लिए यथासंभव योगदान दिया। कमोबेश शांति से गुजर गए मतदान के बाद अब यह परिणाम पर निर्भर रहेगा कि आने वाले वक्त में देश की बागडोर किसके हाथ में होगी और आगे की दिशा क्या होगी।

गौरतलब है कि इस चुनाव में राजनीतिक दलों के मुख्य रूप से दो ध्रुव बन गए। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन और इसमें शामिल दलों का नेतृत्व जहां भाजपा कर रही है, वहीं विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' और उसमें शामिल दलों का नेतृत्व कांग्रेस कर रही है। राजग की कमान थामे भाजपा चूंकि बीते दो कार्यकाल से सत्ता में रही, तो माना जा रहा था कि इस चुनाव में उसके शासन को लेकर अगर कोई असंतोष होगा तो वह मतदान में फूटेगा। अगर ऐसा होता है तो इसका स्वाभाविक लाभ विपक्षी गठबंधन को मिलेगा और वह सरकार बनाएगी। मगर चुनाव का अध्ययन करने वाले समूहों ने जिस तरह भाजपा के मैदान में कायम होने की उम्मीद जाहिर की, उससे यही लगता है कि लड़ाई फिलहाल कांटे की है और लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले तमाम लोग अब बस इंतजार करेंगे कि देश की बागडोर किसके हाथों में जाएगी। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि चुनाव में सत्तापक्ष और विपक्ष की ओर से जितनी कड़वी बातें बोली जाती हैं, वे सब नतीजों से धुल जाती हैं। जनता अपने विवेक के साथ उनमें से किसी को सत्ता इसलिए सौंपती है कि उसका भविष्य बेहतर हो।

वास्तविक जीवन बनाम आभासी रिश्ते

हाल के वर्षों में अधिकतर आभासी माध्यम आक्षेप, आरोप और उपहास का अड्डा बन गए हैं। आम लोग भी जीवन से जुड़ी किसी घटना-दुर्घटना के कारण बेवजह सलाह-मशविरा के नाम पर 'ट्रोलिंग' की जद में आ जाते हैं।

मोनिका शर्मा

लोगों के सार्वजनिक और निजी जीवन को लेकर मनमानी बातें करने की प्रवृत्ति अब आम लोगों के लिए भी परेशानी का सबब बन गई है। हमारे सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में किसी व्यक्ति के गलत या सही विचार-व्यवहार को लेकर टीका-टिप्पणी करने की आदत सदा से जीवन को दूभर कर देती रही है। किसी घटना-दुर्घटना के सभी पक्षों को जाने-समझे बिना तानों-उलाहनों की बौछार करने में पराए ही नहीं, अपने भी नहीं चूकते। पहले से ही परिस्थितिजन्य पीड़ा के शिकार किसी इंसान या परिवार को ठेस पहुंचाने के इस व्यवहार को अब तकनीकी मंचों ने और विस्तार दिया है। देखने में आता है कि सहज से वाकये को भी विवादास्पद बनाकर आभासी माध्यमों पर होने वाले संवाद में हद दर्जे तक विद्रूप बना दिया जाता है। आभासी दुनिया में 'ट्रोलिंग' कहा जाने वाला यह बर्ताव लोगों को आत्महत्या करने के हालात तक ले जा रहा है।

बीते दिनों तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में 'ट्रोलिंग' से परेशान होकर एक आइटी पेशेवर मां ने खुदकुशी कर ली। गौरतलब है कि तैंतीस वर्षीय महिला की बच्ची गोद से फिसलकर गिरी और छज्जे पर अटक गई। आस-पड़ोस के लोगों ने पंद्रह मिनट की मशक्कत के बाद बच्ची को तो बचा लिया, पर उस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हो गया। उसके बाद आभासी दुनिया में लोग महिला को खरी-खोटी सुनाने के लिए टूट पड़े। उसकी 'ट्रोलिंग' शुरू हो गई। किसी ने लापरवाह मां कहा, तो किसी ने बच्ची का ढंग से खयाल रखने की रूखे शब्दों में सलाह दी। स्थिति ऐसी बना दी गई कि घटना के बाद महिला अवसाद में चली गई। जबकि यह घटना जान-बूझकर की गई किसी गलती का परिणाम नहीं थी। लोगों ने यह क्यों नहीं समझा कि एक शिक्षित-सजग मां अपनी बच्ची की देखभाल में लापरवाही क्यों बरतेगी? क्यों लोगों के पास उसे कोसने की अंधी दौड़ में इस घटना के कारण को लेकर सोचने तक का अवकाश नहीं था? विचारणीय है कि ऐसा हादसा किसी के भी साथ हो सकता है। इस घटना का सबसे पीड़ादायी पक्ष यह है कि बिना गलती की सजा के रूप में दिए गए तानों-उलाहनों ने एक मासूम बच्ची से उसकी मां छीन ली। हालांकि इस मासूम की कुशलता और बचाव के लिए साझा प्रयास किए जा रहे हैं, पर ऐसी सोच को लेकर अनगिनत प्रश्न भी मौजूद हैं।

हाल के वर्षों में अधिकतर आभासी माध्यम आक्षेप, आरोप और उपहास का अड्डा बन गए हैं। आम लोग भी जीवन से जुड़ी किसी घटना-दुर्घटना के कारण बेवजह सलाह-मशविरा के नाम पर 'ट्रोलिंग' की जद में आ जाते हैं। बात का बतंगड़ बनाने का यह व्यवहार सचमुच जीना मुहाल करने वाला है। अपमान और उपहास का ऐसा मेल, किसी की भी मनःस्थिति को बिखेर सकता है। सहज-सी तस्वीर हो या कोई पारिवारिक आयोजन, सामाजिक जीवन से जुड़ा कोई वाकया हो या व्यक्तिगत सोच, आपसी जुड़ाव के लिए अस्तित्व में आए सोशल मीडिया मंचों पर होने वाली 'ट्रोलिंग' एक दुखदायी समस्या बन गई है। कुछ

समय पहले उत्तर प्रदेश दसवीं बोर्ड परीक्षा में अव्वल आई एक बच्ची को उसके चेहरे पर दिख रहे बालों को लेकर सोशल मीडिया पर खूब 'ट्रोल' किया गया। दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा कि एक छात्रा द्वारा हासिल किए गए अंक, साल भर की मेहनत और अकादमिक प्रतिबद्धता पर ध्यान देने के बजाय सोशल मीडिया मंचों पर समाज के एक बड़े तबके ने अजीबो-गरीब बातें लिखीं। सफलता के लिए जिस बच्ची की सराहना की जानी चाहिए थी, लोग उसके चेहरे में ही मीनमेख निकालने लगे। उसके चेहरे पर दिख रहे बालों को लेकर मजाक बनाने वाली तस्वीरें और टिप्पणियां सोशल मीडिया पर छा गईं। किसी के व्यक्तिगत जीवन पर टीका-टिप्पणी करने का यह अमानवीय बर्ताव आखिर क्यों और कैसे जड़ें जमा रहा है? क्यों तकनीकी सुविधाओं ने आभासी संसार में रमे लोगों को इतना बेसुध कर दिया है कि चर्चित चेहरों के ही नहीं, आम लोगों के व्यक्तिगत जीवन में भी मीनमेख निकालने लगे हैं?

अब न किसी के दुख को समझने का भाव दिखता है और न ही सहज स्थितियों से सामने आए किसी सुखद परिणाम की स्वीकार्यता, जिसके चलते अर्थहीन कहासुनी का परिणाम किसी का जीवन छीन लेने की भयावह परिस्थितियां बना रहा है। दरअसल, 'आनलाइन' चर्चाओं का सार्थक भाव कहीं खो गया है। अर्थपूर्ण संवाद का स्थान संवेदनहीनता और नफरत की विकृत मानसिकता ने ले लिया है। दुखद यह भी है कि यह सब अपरिचित लोगों के साझा संवाद में हो रहा है। अधिकतर अनजाने-अनदेखे चेहरों को इस घृणा और बेवजह गरियाने की मानसिकता का शिकार बनाया जाता है। ऐसा बेनाम चेहरा, जो किसी व्यक्ति या समूह को प्रतिक्रिया देने के लिए उकसाने के उद्देश्य से जानबूझकर किसी बहस की शुरुआत करता है। इतना ही नहीं, भड़काऊ या आक्रामक टिप्पणियां देते हुए आभासी दुनिया में एक भीड़ को इस संवाद का हिस्सा बना लेता है। बहुत से लोग बिना सोचे-समझे अपमान, उकसावे और धमकी भरी भाषा की बमबारी करने वाली इस मुहिम का हिस्सा बन जाते हैं।

भारत ही नहीं, दुनिया के हर हिस्से में क्षेत्र विशेष की जानीमानी हस्तियां लंबे समय से इस तरह के व्यवहार झेलती आई हैं। हाल के वर्षों में आम हो या खास, हर कोई नकारात्मक मानसिकता वाले ऐसे लोगों के निशाने पर आने लगा है। किसी को क्रोधित करने, आत्महीनता लाने या अपराधबोध जगाने के उद्देश्य से की जाने वाली टिप्पणियां और प्रतिक्रियाएं अब आए दिन सोशल मीडिया में देखने को मिलती हैं। विडंबना है कि यह आनलाइन दुर्व्यवहार इसके शिकार लोगों की मुश्किलें असली संसार में भी बढ़ा देता है। कई लोग भावनात्मक रूप से चोट पहुंचाने वाली भीड़ के इस विवेकहीन व्यवहार से व्यथित-विचलित होकर आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं। करीब दस साल पहले सिडनी की सैंतालीस वर्षीय टीवी प्रस्तोता चार्लोट डासन 'ट्रोलिंग' की पहली शिकार बनी थीं।

अध्ययन बताते हैं कि उम्र के नाजुक मोड़ पर खड़े किशोरों में बढ़ती आत्महत्या के मामलों से 'ट्रोलिंग' और आनलाइन नकारात्मकता का गहरा संबंध है। कुछ समय पहले उज्जैन के सोलह वर्षीय 'सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर' ने भी ट्रोलिंग से परेशान होकर खुदकुशी कर ली थी। महिलाओं को तो हर बात में ही 'ट्रोलिंग' का शिकार बना दिया जाता है। कभी शारीरिक बनावट को लेकर तानेबाजी की जाती है तो कभी किसी स्त्री के विचारों को लेकर उलाहने दिए जाते हैं। कुल मिलाकर, आभासी उत्पीड़न का यह घेरा निशाने पर आए इंसान को बेचैन करने वाला वातावरण बना देता है। ऐसे में, किसी भी विषय, घटना या दुर्घटना को लेकर कुछ कहने से पहले ठहराव के साथ उसे समझना-जानना आवश्यक है। मानवीय समझ और सरोकारी सोच ही इस दुर्भाव को रोक सकती है। बेहद जरूरी हो चला है कि लोग तकनीक से मिली सुविधाओं को सनक न बनाएं।

> **अब न किसी के दुख को समझने का भाव दिखता है और न ही सहज स्थितियों से सामने आए किसी सुखद परिणाम की स्वीकार्यता, जिसके चलते अर्थहीन कहा-सुनी का परिणाम किसी का जीवन छीन लेने की भयावह परिस्थितियां बना रहा है। दरअसल, 'आनलाइन' चर्चाओं का सार्थक भाव कहीं खो गया है। अर्थपूर्ण संवाद का स्थान संवेदनहीनता और नफरत की विकृत मानसिकता ने ले लिया है। दुखद यह भी है कि यह सब अपरिचित लोगों के साझा संवाद में हो रहा है।**

छूटे हुए लोग

दुनिया मेरे आगे

सुरेश सेठ

पूरा देश तरक्की की सुबह और बहुमंजिला प्रासादों से अंतरिक्ष छूने के ख्वाब देखता है। मगर बहुत से लोग हैं जो सड़क पर छूट गए। सड़क भी वह, जो लगातार मरम्मत के बहाने टूटफूट और गड्ढों से भरती जा रही है। सड़क पर छूटे लोग अब क्या करें? क्या उन्हें भी अच्छे दिन आने के सपने देखने की इजाजत है? सपने देखते लोग सड़कों पर बैठे थे, टूटी पगडंडियों तक आ गए। किसी ने उनसे पूछा था कि 'आपको कितने दिन हो गए सड़क पर धरना लगाए?' अब ऐसी बातों का भी भला कोई जवाब हो सकता है? ज्यादा पूछा जाए तो यही जवाब देंगे कि 'सड़क पर तो हमारा हमेशा धरना रहा है, आप हमारे धरने के दिन न गिनिए। कोशिश कीजिए कि साम, दाम, दंड, भेद की कोई भी नीति अपनाकर यह धरना उठाना है।' हमारा यह धरना वैसे अभी नहीं, बहुत दिन से है। होश संभालने के बाद पता चला कि यहां अक्ल और रुचि नहीं, सिफारिश और सिक्कों की चमक देखी जाती है। जब इसके धनुर्धारी इन सब सीटों को हथिया लेते हैं, तो हमारे लिए जो बचता है, वह है कमतर पाठशाला और अर्थिक संकट में घिरे हुए विश्वविद्यालय। एक अनार है और सौ बीमार हैं। एक इस्तीफा देकर अनोखा कार्य करता है तो बाईस उसकी जगह लेने को तैयार बैठे होते हैं। लोग आजकल गद्दी छोड़ते कहां हैं? जाने की तैयारी कर भी लें तो अपना नाती-पोता वहां भिड़ा जाते हैं। कुछ लोग बीते युग के आदर्शों का रोना रोते हुए इस्तीफा दे गए तो उनकी अक्ल का मातम ही मनाया जा सकता है। एक भी हाथ उनके समर्थन में नहीं उठा, किसी समूह ने उनके हक में धरना नहीं दिया।

होश संभालने के बाद से ही कुछ लोग अपने साथ होती ऊंच-नीच के विरोध में धरना देने की बस सोचते रहे हैं, लेकिन ऐसी बातों पर भी कोई धरना लगाता है कि हमें सही जगह पढ़ने के लिए नहीं मिली... योग्यता अनुसार नौकरी नहीं मिली। मेहनत करके फसल की बिजाई की तो उसका सही मूल्य नहीं मिला। अनुदान बंटने लगा तो वंचितों से अधिक उसके बिचौलिए प्रमुख हो गए। स्वनामधन्य नेता इस देश का बोझ उठाते-उठाते दोहरे हो गए। उनका दारुण दुख देखा नहीं जाता। उनके हक में भाषण दिए जा सकते हैं, लेकिन उनके लिए धरने नहीं दिए जा सकते। हां, यह अवश्य किया जा सकता है कि अगर किसी समूह ने न्याय के लिए धरना दिया, तो उसे निशाना बनाने के लिए उन्हें देशद्रोही, विपक्ष की कठपुतलियां या फर्जी करार दे दिया जाए। धरने वालों को इस प्रकार थका दिया जाए, बस वे घिघिया कर स्वयं ही नाममात्र शर्तों के साथ फैसला करने के लिए बढ़ आएंगे और समय की सरकार उदारता दिखाते हुए कह देगी कि लीजिए जनाब, हमसे आपका दुख देखा नहीं जाता था, इसलिए हमने स्वयं ही आपकी समस्याओं का हल तलाश लिया। बड़े-बड़े सिपहसालार मैदान में उतारे जा रहे हैं, जो आपकी समझ का मातम मनाते हुए असली बात समझाएंगे कि यह कदम अमीरों के हक में नहीं, उस बोसीदा जर्जर ढांचे को नष्ट करने के लिए उठाए जा रहे हैं। लोगों को यह बताना पड़ेगा कि वे सदियों से खेतीबाड़ी कर रहे हैं और महाजनी सभ्यता के बंधक हैं। गैरहाजिर जमींदार अपनी कूवत और पैसे के बल पर भागीदार कहते हुए भी हमारी मेहनत को किसी किनारे नहीं लगने देते थे।

हमारा देश खेती प्रधान है। दो तिहाई जनता आज भी गांवों में छत तलाशती है, आधी आबादी खेती में लगी है, लेकिन जमींदार, साहूकार और आढ़तियों की धौंस इस तरह कि हम आज भी धरने पर बैठ जाते हैं कि हमें तो अभी धनी किसान के साथ बंटाई, साहूकार से कर्जा और आढ़तिए के साथ सौदा करना है। हमारे जाने-पहचाने हैं, अपना मारेगा तो भी जगह देख कर मारेगा। वंचित रहे तो क्या? हम कहते हैं कि हमें निश्चित कीमत पर नियमित मंडियों में माल बेचने दिया जाए। हम भूल गए अपनी गरीबी को कि पहले भी कहां पूरा माल यहां बेचते थे। छह फीसद यहां बेच कर चौरानबे फीसद तो औने-पौने दाम बड़ी थैली वालों के पल्ले ही जाता था। अब हमने उनकी मंडियां बना दीं और बड़े घरानों के चटपट धनिक हमारा माल उठा लेंगे, हमारी खेती ठेके पर कर देंगे या अपनी इच्छानुसार फसलों की बिजाई करवा देंगे तो क्या आसमान टूट पड़ेगा? इसलिए इन लोगों को बड़े पैमाने पर घुसने दिया जाए, इनका पेट भरेगा, तो रूखा-सूखा हमको भी मिल जाएगा।

बड़े-बड़े शब्द हैं उनके पास। खेती का आधुनिकीकरण, व्यवसायीकरण और नए भारत का निर्माण। और हम पुरानी रिवायतों से चिपकने के लिए धरना दिए बैठे हैं। अब कैसे समझाया जाए कि धरना-वरना देने से कुछ नहीं होता है, आजकल बहती गंगा में हाथ धो लेने चाहिए। उपदेश देने वाले अपनी चौपाल सजा कर अपना भाषण देकर चले गए। पैगामों का एक बवंडर है, जो महानगरों से चलकर उनके गांव घरों तक आ गया। हमने धरना तो दे दिया, लेकिन किस-किस बात के विरुद्ध धरना देंगे? जब हर दामन टटोलते हैं तो वही गंदला लगता है। क्या बेहतर नहीं कि सब विसंगतियों को भाग्यवाद और नियति को झोली में डाल दिया जाए या सिर हिला कर कह दें 'करम गति टारे नहीं टरै?' लेकिन इस बार जनाब कुछ अलग-सा मिल रहा है। इसी भाग्य और नियति की धरती पर इतने बरस कट गए, कुछ नहीं हुआ। अब कड़वे सच का सामना भी कर लिया जाए। आखिर कब तक इसका सामना करने से बचते हुए सिर्फ सपना देखने वाला एक धरना लगाते रहेंगे? क्षितिज की ओर देखते हुए उम्मीद से भरे लोगों का धरना।

> **हमारा देश खेती प्रधान है। दो तिहाई जनता आज भी गांवों में छत तलाशती है, आधी आबादी खेती में लगी है, लेकिन जमींदार, साहूकार और आढ़तियों की धौंस इस तरह कि हम आज भी धरने पर बैठ जाते हैं कि हमें तो अभी धनी किसान के साथ बंटाई, साहूकार से कर्जा और आढ़तिए के साथ सौदा करना है।**

जल से जीवन

पृथ्वी पर रहने वाले सभी के जीवन का आधार जल है। सभी ग्रहों में पृथ्वी अपने आप में अनोखा ग्रह इसलिए है कि यहां पर जल है। मगर वर्तमान में जल संकट एक विकराल और गंभीर समस्या बन चुका है। इसकी लगातार कमी से आने वाला समय बहुत भीषण होने वाला है। बढ़ती गर्मी ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है। आज हमारे देश के बड़े-बड़े शहर और दूरस्थ इलाके सूखाग्रस्त होते जा रहे हैं। एक बड़ी आबादी को पीने के लिए स्वच्छ पानी तक नहीं मिल पा रहा है। जल का हमने दुरुपयोग बहुत किया है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे उपयोग लायक पृथ्वी पर जल केवल तीन फीसद है और इसका स्रोत नदियां, झील, तालाब, भूजल हैं। लेकिन दोहन के कारण आज यह भी अपने अंतिम चरण में है। लगातार उद्योग, कृषि और प्रति व्यक्ति जल की मांग बढ़ रही है, जबकि जल की आपूर्ति लगातार घट रही है। इसका प्रमुख कारण है जल संसाधनों का अति दोहन और बढ़ता पदूषण, गलत नियोजन और जल संरक्षण को सरकार और आम लोग, दोनों उदासीन ही देखे गए हैं। अगर हमने इस संकट पर काम नहीं किया तो निश्चित रूप से हमारा जीवन और इस पर अन्य निर्भर जीव खत्म हो जाएंगे।

– सौरभ बुंदेला, भोपाल, मप्र

साहस की ऊंचाई

महिला पर्वतारोही अन्नाफ्लेमिंग ने बताया कि सिर्फ आसान कामों में पुरुषों के बराबरी करने के बजाय पर्वतारोहण जैसे कठोर श्रमसाध्य, रोमांच तथा जोखिम से भरे काम करना एक महिला के लिए भी संभव है। ऐसी दुरूह और जानलेवा चढ़ाई लंबे समय तक करते रहना विश्व की अन्य महिलाओं के लिए भी एक संदेश प्रदान करती है। भारत की बछेंद्री पाल ने भी माउंट एवरेस्ट फतह करके विश्व में अपना नाम रोशन किया है। जीवन के रोमांच का सही आनंद लेना हो तो ऐसे चुनौतीपूर्ण कार्यों को करके ही लिया जा सकता है। पर्यटन स्थलों पर मौज-मस्ती करने में और माउंट एवरेस्ट की चढ़ाई करने में उतना ही फर्क है जितना कृत्रिम और असली स्वर्ण आभूषण में होता है। इसके लिए पूरा जीवन लग जाता है, तब कहीं जाकर ऐसी सफलताओं का स्वाद मिलता है। जिसने यह स्वाद एक बार चख लिया वह जीवन में किसी भी अन्य जोखिमपूर्ण कार्य को करने में नहीं झिझकेगा!

– विभूति बुपक्या, खाचरोद, मप्र

धर्म और मातृभाषा

मातृभाषा का जाति, धर्म और लिंग से कोई मतलब नहीं होता, वैसे ही जैसे दोस्त दोस्त होता है, उसमें जाति, धर्म या लिंग नहीं देखा जाता। हां, सत्ता का प्रभाव जरूर होता है भाषाओं पर। सत्ताएं तय करती हैं कि अमुक भाषा सत्ता की भाषा है, इसलिए इसे आगे बढ़ाना है और अमुक को कोई खास तवज्जो नहीं देना है। भाषा का जुड़ाव संस्कृति से होता है और संस्कृति एक धर्म, समुदाय, संप्रदाय या जाति विशेष की नहीं होती, बल्कि उसमें सामूहिकता होती है। एक भाषा जिस संस्कृति को अभिव्यक्त करती है, वह उस समाज के हर वर्ग के समान योगदान से बनी होती है। दरअसल, भाषाएं धर्म के अनुरूप नहीं चलतीं, बल्कि धर्म भाषा चुनती है और कुछ धर्म कुछ भाषाओं को अभिजात्य या देवभाषा या फिर धार्मिक भाषा बनाते हैं। इस प्रक्रिया से भाषाएं कमजोर होती हैं। भारत से मारीशस में कौन लोग गए, उसका समाजशास्त्रीय अध्ययन हो चुका है। धर्म से भाषा को जोड़ना सामूहिकता का विरोध है।

– संतोष पटेल, नई दिल्ली

संकट में जिम्मेदारी

मौसम की मार' (संपादकीय, 27 मई) के माध्यम से वर्तमान आधुनिक जीवन की बहुत मार्मिक सच्चाई बयान की गई है। एक तरफ निरंतर बढ़ते वैश्विक तापमान पर चिंता व्यक्त की गई है तो दूसरी तरफ औद्योगिक उत्पादन और विलासिता पूर्ण जीवन शैली के कारण बढ़ते जा रहे बेलगाम कार्बन उत्सर्जन के लिए विकसित और विकास शील देशों का संघर्ष। यह सही है कि बदलते मौसम के लिए हर देश बराबर का जिम्मेदार है और अगर तापमान बढ़ता है तो इसका खमियाजा हर देश को उठाना पड़ेगा। विनाश से कोई नहीं बचेगा। इस हकीकत को ईमानदारी से स्वीकार करते हुए प्रत्येक देश को आरोप, प्रत्यारोप की राजनीति से ऊपर उठकर, समुचित गंभीरता से पर्यावरण की रक्षा और इसमें वांछित सुधार की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है।

– इशरत अली कादरी, भोपाल

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जल संकट

सरकार की जिम्मेदारी

जल संकट से निपटने के लिए दिल्ली सरकार ने पानी की बरबादी करने वालों पर जुर्माना लगाने का निर्णय किया है, लेकिन सवाल है कि क्या वह अपनी जिम्मेदारी ठीक से निभा रही है? दिल्ली में गर्मी खासकर बहुत अधिक है। इसका कारण 50 डिग्री सेल्सियस के आसपास तापमान तथा अक्सर चलने वाली लू है जिससे भयानक गर्मी पैदा होती है। इन सबके साथ नागरिक सेवाओं में कमी से समस्या और गंभीर हो जाती है। इससे नागरिकों को भारी परेशानी होती है। शहर में 'हीट आईलैंड' प्रभाव पैदा होता है जहां कंक्रीट गर्म होकर गर्मी का विकिरण करती है जिससे वातावरण बहुत गर्म हो जाता है। खासकर पश्चिम में स्थित सुदूर ग्रामीण इलाके पश्चिम में राजस्थान के रेगिस्तानों से आने वाली लू का शिकार होते हैं। इस मौसम में पानी की कमी एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है क्योंकि सप्लाई में भारी कमी आई है जिससे नागरिक अपनी प्यास तक ठीक से नहीं बुझा पाते हैं। एयरकंडीशनर, कूलर और पंखे चलाने के लिए बिजली की भारी मांग अक्सर बिजली ग्रिड पर भारी पड़ती है। इसके परिणामस्वरूप अक्सर बिजली कटौती होती है जिससे स्वास्थ्य पर संकट और बढ़ जाता है। गर्मी में धूल के तूफानों तथा वाहनों का उत्सर्जन बढ़ने से हवा की गुणवत्ता खराब हो जाती है। गर्मी के साथ मिल कर यह श्वसन समस्याओं तथा अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकती है। दिल्ली की अनेक समस्यायें हैं। हालांकि, आसमान से बरसती आग के बारे में कुछ नहीं किया जा सकता है, पर बिजली और पानी जैसे संसाधनों के बेहतर प्रबंधन से काफी राहत दी जा सकती है। हर साल दिल्ली सरकार हरियाणा पर उसके हिस्से का पानी जारी न करने का आरोप लगाती है, पर कोई समस्या का दीर्घकालीन समाधान नहीं चाहता है। इसके साथ ही दिल्ली के अनेक हिस्से व खासकर पूर्वी दिल्ली में समुचित हरित क्षेत्रों की कमी है जो छाया प्रदान करने तथा वातावरण ठंडा रखने के लिए जरूरी है। दिल्ली सरकार की लापरवाही के कारण शहर के 22 प्रतिशत से अधिक जल भंडार नष्ट हो गए हैं।

पिछले रिकार्डों से संकेत मिलते हैं कि दिल्ली में 1000 से अधिक जल भंडार थे जो पानी प्रदान करने के साथ ठंडक भी देते थे। वर्तमान जल संकट का सामना करने के लिए दिल्ली सरकार ने पानी की बरबादी के दोषी पर 2,000 रुपये जुर्माने का निर्णय किया है। इस प्रकार दिल्ली सरकार जल-संकट की जिम्मेदारी नागरिकों पर थोपना चाहती है। 20 मिलियन से अधिक जनसंख्या वाली दिल्ली अभूतपूर्व जल-संकट का सामना कर रही है। बढ़ते तापमान से पानी का उपभोग बढ़ा है तथा पहले से ही दबाव का सामना कर रही जल सप्लाई व्यवस्था पर और दबाव बढ़ा है। नागरिक जल सप्लाई में बाधाओं का सामना कर रहे हैं और कई जगह दिन में केवल कुछ घंटे ही पानी आता है। सरकार ने पानी की बरबादी वाली गतिविधियों की पहचान कारों की पाइपों से धुलाई, बागों में बहुत अधिक सिंचाई तथा पानी की टोंटियां खुली रखने के रूप में की है। हालांकि, सरकार का इरादा ठीक है, पर अनेक तत्व इसकी प्रभावशीलता और व्यावहारिकता पर सवाल उठाते हैं। सरकार दोषियों का पता कैसे लगाएगी और पानी की बरबादी कौन परिभाषित करेगा? सरकार उन्हीं लोगों पर और कड़ाई करने जा रही है जो पहले ही बिजली और पानी के संकट के साथ ही भयानक गर्मी का सामना कर रहे हैं। इसके बजाय सरकार को पानी बरबाद करने वालों को चेतावनी देने के साथ जल संकट से अत्यधिक प्रभावित क्षेत्रों में टैंकरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसा लगता है कि अब केवल मौसम बदलने से ही राजधानी के नागरिकों को राहत मिलेगी।

कन्याकुमारी में साधना से निकले नये संकल्प

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था।

नरेंद्र मोदी
(लेखक, देश के प्रधानमंत्री हैं)

मेरे प्यारे देशवासियों,

लोकतन्त्र की जननी में लोकतन्त्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ावआज 1 जून को पूरा हो रहा है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद,मां अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं...काशी और अनेक सीटों पर मतदान चल ही रहा है। कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं।

वाकई, 24 के इस चुनाव में, कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। माँ भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला।उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद...उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार...मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया।

इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था।

मैं ईश्वर का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिये। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा।

इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता नेमेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, का निरंतर ऐहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों। साथियों, कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था। इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वभाविक रूप से होता था।

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर मां शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे। कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहाँ एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम!

यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएँ यहाँ राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की ये धरती एकता का अमिट संदेश देती है।

कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा।

साथियों, स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था, प्रत्येक राष्ट्र के पास देने के लिए एक संदेश है, पूरा करने के लिए एक मिशन है, पहुंचने के लिए एक नियति है।

भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदण्डों पर तकनीकी के इस जनतांत्रीकरण को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। ये पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज़ के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन जी-20 ग्रुप का हिस्सा बना। ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है।

साथियों, नए भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है, और उन सपनों को जीना शुरू करना है।

हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए ये जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका सम्पूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है। और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमें सुधार को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा। भारत सुधार को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में सुधार की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे सुधार 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए।

हमें ये भी समझना होगा कि किसी भी देश के लिए सुधार कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने देश के लिए सुधार, निष्पादन और रूपांतरण का विजन सामने रखा। सुधार का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी निष्पादन करती है और फिर जब जनता जनार्दन इससे जुड़ जाती है, तो रूपांतरण होते हुए देखते हैं।

भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। हमें गति, पैमाना, दायरा और मानक , चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें शून्य दोष - शून्य प्रभाव के मंत्र को आत्मसात करना होगा।

साथियों, हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है। ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है।

हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुये अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा।

हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से, बाहर निकालना है। हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है।

भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है।

जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवे दशक को अपनी आज़ादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं निरंतर योगदान का समय है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आज़ाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूँ कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

(ये विचार पीएम मोदी द्वारा 1 जून को कन्याकुमारी से वापस दिल्ली की विमान यात्रा के दौरान व्यक्त किये गए)

दैवीय उपस्थिति की अनुभूति

> **भगवान हमेशा आगे आने वाले हैं। हमें बस इसके लिए योग्य होना चाहिए। आप यह कैसे कर सकते हैं? यह आपकी कल्पना से अधिक सरल है।**

अजित कुमार बिश्नोई
(लेखक, आध्यात्मिक चिंतक हैं)

मैं भगवान राम के जन्मस्थान पर बने नए मंदिर में उनके विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा देख रहा था। जैसे-जैसे समारोह आगे बढ़ा, मैंने भगवान के भावों में सूक्ष्म परिवर्तन देखना शुरू किया, वे जीवंत हो रहे थे। मैं आश्चर्यचकित था, लेकिन मैं परिवर्तन को देखने से नहीं चूका। मेरे अनुभव की पुष्टि मूर्तिकार ने की, जिसने यह मूर्ति बनाई थी। उसने स्वीकार किया कि उसने जो मूर्ति गढ़ी थी, वह बहुत अलग थी, यानी उसने जो भाव दिया था वह काफी गंभीर था। वैसे, प्राण प्रतिष्ठा मूर्ति को जीवंत करने का एक परिवर्तनकारी कार्य है।

यह प्रकटीकरण कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। भगवान साक्षात प्रकट होते हैं। निम्नलिखित पांच सच्ची जीवन कहानियाँ इसका उदाहरण होंगी। पहली कहानी तब चुनी गई जब भगवान कृष्ण तब प्रकट हुए जब धृतराष्ट्र के राज दरबार में द्रौपदी का चीरहरण करने का प्रयास किया जा रहा था। द्रौपदी ने हताश होकर मदद के लिए प्रार्थना की -कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण। भगवान प्रकट हुए और द्रौपदी को अपमान से बचाने के लिए अनगिनत साड़ियां प्रदान कीं।

दूसरी घटना तब की है जब सूरदास अंधे होकर खाई में गिर जाते हैं। वे बाहर निकलने का प्रयास करते हैं, लेकिन असफल रहते हैं। वे मदद के लिए पुकारते हैं, लेकिन कोई नहीं आता। वह स्थान सुनसान था। उनके पूज्य भगवान जानते थे कि उनके सच्चे भक्त को मदद की आवश्यकता है। वे आए और देखा कि सूरदास अपनी दयनीय स्थिति से पूरी तरह बेखबर होकर बैठे हुए भजन गा रहे हैं। भगवान ने उनसे पूछा, तुम बाहर निकलने का प्रयास क्यों नहीं कर रहे हो? सूरदास ने उत्तर दिया, मैंने प्रयास किया, लेकिन असफल रहा। मुझे एहसास हुआ कि केवल तुम ही मेरी सहायता कर सकते हो। भगवान ने सूरदास को अपना हाथ दिया और उन्हें बाहर

निकलने में सहायता की। एक प्रसिद्ध भजन है, जिसमें सूरदास भगवान से विनती करते हैं कि वे उन्हें छोड़कर न जाएं। तीसरी घटना कुछ वर्ष पूर्व हुई। मेरी एक निकट संबंधी अपने घर के पास स्थित मंदिर में गहन चिंतन में लीन बैठी थीं। उनके सामने एक बाबाजी प्रकट हुए। उन्होंने उनसे कहा, तुम अपने ससुराल वालों के व्यवहार से बहुत परेशान हो। चिंता मत करो। तुम्हें एक निश्चित रोग होगा, जिसका नाम उन्होंने रखा है, जो इसके कारण होने वाले तनाव के कारण होगा। लेकिन यह ठीक हो जाएगा; आपको ज्यादा तकलीफ नहीं होगी। इससे पहले कि यह रिश्तेदार कुछ प्रतिक्रिया कर पाता, यह व्यक्ति चला गया। उस बीमारी ने उसे परेशान तो किया, लेकिन जल्द ही काबू में आ गया। यह रिश्तेदार ईश्वर का सच्चा भक्त है। चौथा उदाहरण मेरे एक मित्र से संबंधित है। वह ईश्वर का कट्टर भक्त है। पिछले पाँच दशकों में उसने बहुत आध्यात्मिक प्रगति की है। वह नब्बे के दशक के उत्तरार्ध में है और अभी भी स्वस्थ है। उसकी पत्नी हाल ही में एक संक्षिप्त बीमारी के बाद चल बसी। उसने मंत्र जाप करके इसे रोकने की कोशिश की। उसे यह भी उम्मीद थी कि अगली बार उसकी पत्नी बहुत बढ़िया जन्म देगी। जब वह बहुत ज़्यादा कर रहा था, तो ईश्वर ने उसके घर एक वृद्ध महिला को बुलाया। उसने उसे बताया कि उसकी पत्नी पंद्रहवें दिन चल बसेगी। वह हैरान रह गया।

जब तक वह होश में आता, वह जा चुकी थी। क्या वह स्वयं ईश्वर थी या ईश्वर द्वारा चुनी गई कोई व्यक्ति? अंतिम उदाहरण एक अमेरिकी का है। वह बहुत अमीर हो गया था, लेकिन वह न तो शांत था और न ही खुश।

उत्सुकतावश, उसे इसका कारण खोजना पड़ा। क्या भौतिक धन हमारी सभी समस्याओं का समाधान नहीं है और उसके पास यह बहुत था? उन्होंने विभिन्न चर्चों में जाना शुरू किया, लेकिन कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। निराश होकर उन्होंने भारत आने का फैसला किया - जो दुनिया की आध्यात्मिक राजधानी है। यहां भी वही परिणाम हुआ, जहां फर्जी गुरु उन्हें बरगलाने की कोशिश कर रहे थे। बेहद निराश होकर वे हरिद्वार में गंगा के किनारे एक बेंच पर बैठे थे। वे गहरी सोच में डूबे हुए थे, तभी किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखा। उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और देखा कि उनके सामने एक संत खड़े हैं। उन्होंने कहा, इतना दुखी मत हो। भगवान की शरण में जाओ। और सबसे अच्छा तरीका है भगवान के निर्देशों का पालन करना, जैसा कि प्रामाणिक शास्त्रों में विस्तृत है। भगवद-गीता की एक प्रति खरीदें। जब उन्होंने अपनी आंखें खोलीं, तो संत दिखाई नहीं दिए।

क्या हमें भगवान के साथ ऐसा अनुभव हो सकता है? हां, हो सकता है। भगवान हमेशा आगे आने वाले हैं। हमें बस इसके लिए योग्य होना चाहिए। आप यह कैसे कर सकते हैं? यह आपकी कल्पना से कहीं अधिक सरल है। आध्यात्मिक अभ्यास करें, जो आपके स्वभाव के अनुकूल हो। उदाहरण के लिए, मैं नियमित रूप से दर्शन और नमन, जप, धन्यवाद और प्रार्थना करता हूँ। एक बार जब एक निश्चित मात्रा में आध्यात्मिक ऋण एकत्रित हो जाता है, तो ईश्वर हमारे जीवन में सक्रिय हो जाते हैं।

आप की बात

भयभीत विपक्ष

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि 4 जून को इंडिया गठबंधन। की सरकार बन रही है। अखिलेश यादव कह रहे हैं कि 140 करोड़ जनता भाजपा को 140 सीट भी नहीं देगी। भाजपा पहले ही 400 पार का नारा दे चुकी है। इस प्रकार सब नेता अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। लेकिन कांग्रेस ने अपने प्रवक्ताओं को एक्जिट पोल संबंधी एलेक्ट्रानिक चैनलों के कार्यक्रमों में न जाने की घोषणा कर परोक्ष रूप से हार स्वीकार कर ली है। अमित शाह ने इस पर कांग्रेस का मजाक उड़ाते हुए कहा है कि वह असलियत स्वीकार करने को तैयार नहीं है और इसी कारण यह निर्णय लिया गया। एक्जिट पोल पिछले अनेक चुनावों से एलेक्ट्रानिक चैनलों पर आम हो गए हैं और इनके प्रस्तुतकर्ता बार-बार कहते हैं कि ये केवल अनुमान हैं। ऐसे में कांग्रेस द्वारा इनसे पलायन उसके भय का संकेत है। अखिलेश यादव ने भी कहा है कि जनता एक्जिट पोल के नतीजों से भ्रमित न हो। सवाल है कि नतीजे आने से पहले ही अखिलेश और कांग्रेस इतने भयभीत क्यों हैं? इससे आशंका पैदा होती है कि विपक्षी नेताओं के इशारे पर मतगणना में अनावश्यक बाधा डालने व निरर्थक आपत्तियों का दौर सामने आ सकता है। निर्वाचन आयोग तथा केन्द्रीय गृह मंत्रालय को सतर्क रहना होगा।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

मोदी का ध्यान

कन्याकुमारी में विवेकानंद रॉक पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगभग दो महीने से अत्यधिक व्यस्त चुनाव प्रचार के बाद ध्यान लगाने गए हैं। अब तक चुनाव प्रचार में मोदी के आक्रामक बयानों से परेशान कांग्रेस और विपक्षी नेता अब उनके मौन होकर ध्यान लगाने से भी परेशान हैं। कांग्रेस इसके खिलाफ हाईकोर्ट पहुँच गई है। मोदी इसके पहले 2014 व 2019 में चुनाव प्रचार के बाद भी ध्यान लगाने महाराष्ट्र और केदारनाथ जा चुके हैं। मोदी के किसी स्थान की यात्रा से देश-विदेश के लोग वहां के प्रति आकर्षित होते हैं। केदारनाथ में मोदी के ध्यान लगाने के बाद लाखों लोगों ने केदारनाथ की उसी गुफा में ध्यान लगाया है। इससे भारतीय विरासत के साथ ही पर्यटन व प्रकारान्तर से अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। मोदी स्वामी विवेकानन्द की ध्यान स्थली पर ध्यान लगा कर देश और जनता की भावी प्रगति के बारे में शक्ति और ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। लोकसभा चुनाव में मतदान के अंतिम चरण से पहले कांग्रेस और विपक्ष ने मोदी के ध्यान पर प्रहार कर वैसी ही गलती की है जो अयोध्या में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण ठुकरा कर की थी। जनता उसे इसकी सजा निश्चित रूप से देगी।

– **दीप्ति प्रदीप बंदवार,** रतलाम

हांगकांग में तानाशाही

हांगकांग कभी आज़ादी एवं लोकतंत्र का उदहारण था, लेकिन आज वह तानाशाही के हाथों लहूलुहान हो चूका है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं स्वछंद जीवन जीने की आज़ादी हांगकांग के लोगों से छिन चुकी है। 1984 के चीन-ब्रिटिश संयुक्त घोषणापत्र के अनुसार चीन ने 50 वर्ष तक वहां-एक देश, दो प्रणाली के अंतर्गत सरकार व अर्थव्यवस्था की संरचनायें बनाए रखने का वादा किया था। इस वादे को चीन ने न सिर्फ बीच में ही तोड़ दिया बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा कानून हांगकांग वासियों पर लाद कर राष्ट्रीय सुरक्षा एवं देशद्रोह के नाम पर आम लोगों के विरोध प्रदर्शनों पर रोक लगा दी है। उसने चीन के स्वामित्व पर सवाल उठाने वाले लोगों को जेल में डाल दिया है। 2020 में 47 लोगों पर विरोध प्रदर्शन के जरिये सरकार को उखाड फेंकने का आरोप लगाया था। अब उनमें से 14 लोकतंत्र- समर्थकों पर उम्र क़ैद या मौत की सजा का खतरा मंडरा रहा है। विडंबना है कि चीन की आर्थिक शक्ति व उससे बिजनेस संबंधों के कारण अमेरिका व यूरोप के देश इस पर कोई ठोस कार्रवाई करने की स्थिति में नहीं हैं। इससे चीन को न केवल हांगकांग में तानाशाही थोपने, बल्कि ताइवान पर कब्जे के लिए भी शह मिल रही है। यह स्थिति खतरनाक है।

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

मतदान संपन्न

सात चरणों की लंबी प्रक्रिया के बाद अंततः चुनाव लगभग निर्विघ्न संपन्न हुए। और पिछले चुनावों से इस बार शिकायतें भी कम आई हिंसा भी कम हुई। मगर भीषण गर्मी के चलते जहां कम मतदान हुआ वही अनेक चुनाव कर्मचारियों और कुछ वोटरों की दुःखद मृत्यु हुई। चुनाव आयोग को इससे सबक लेते हुए भविष्य में चुनाव तारीखों की घोषणा करते समय देश के मौसम को भी ध्यान में रखना चाहिए। यदि अगले चुनाव तक एआई के माध्यम से आधार कार्ड की केवाईसी के जरिए अपने मतदान क्षेत्र से दूर रहने वालों के लिए मतदान सुविधा उपलब्ध हो तो अधिकांश मतदाता आसानी से मतदान कर सकेंगे। चुनाव परिणाम के पहले शुरू एग्जिट पोल टीवी डिबेट के माध्यम से जनता को मसालेदार खबरें परोसते रहेंगे। कांग्रेस का इन एग्जिट पोल में होने वाली डिबेट्स में भाग नहीं लेने का नहीं लेने का निर्णय चौंकाने वाला है। इससे जनता में यही संदेश गया कि अपनी घटती हुई सीटों के कारण शर्मिंदगी से बचने के लिए कांग्रेस इन डिबेट से दूर रहना चाहती है। नतीजे जो भी हों, सबको विनम्रता के साथ जनादेश स्वीकार करना चाहिए।

– **सुभाष बुडावन वाला,** रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 92

नई सरकार के लिए अवसर और चुनौतियां

इस महीने कार्यभार संभालने जा रही नई सरकार आर्थिक मोर्चे पर अपने को बहुत ज्यादा सहज स्थिति में पाएगी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा पिछले हफ्ते जारी आंकड़ों से पता चलता है कि वित्त वर्ष 2023-24 में भारतीय अर्थव्यवस्था ने उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन किया है और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 8.2 फीसदी की बढ़त हुई है, जबकि पिछले साल इसमें 7 फीसदी की बढ़त हुई थी। इसका यह भी मतलब है कि अर्थव्यवस्था पिछले तीन साल में लगातार 7 फीसदी या इससे ज्यादा की दर से आगे बढ़ी है। रिजर्व बैंक सहित कई अनुमानों से पता चलता है कि मौजूदा साल में भी वृद्धि दर 7 फीसदी के आसपास रह सकती है। गौर करने की बात यह है कि सरकार के राजकोषीय मजबूती की तरफ कदम बढ़ाने के बावजूद अर्थव्यवस्था अच्छी दर से आगे बढ़ रही है। पिछले हफ्ते ही आए सरकार के वित्तीय आंकड़ों से यह पता चलता है कि कर संग्रह में अच्छी बढ़त की वजह से वित्त वर्ष 2023-24 में राजकोषीय घाटा जीडीपी के 5.6 फीसदी पर है, जबकि अंतरिम बजट के संशोधित अनुमानों में इसके 5.8 फीसदी तक रहने की बात कही गई थी।

आर्थिक वृद्धि और राजकोषीय स्थिति के अलावा अगली सरकार को इस तथ्य से भी राहत मिलेगी कि महंगाई के मोर्चे पर हालत में सुधार हो रहा है, हालांकि समग्र महंगाई दर अब भी भारतीय रिजर्व बैंक के लक्ष्य से ऊपर है। इसके अलावा, बैंकों और कॉरपोरेट का बहीखाता मजबूत दिख रहा है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी सहज स्थिति में है जो बाह्य मोर्चे पर स्थिरता प्रदान करता है। पिछले कई वर्षों में व्यापक आर्थिक स्थिरता को बढ़ाने के नीतिगत प्रयास सफल रहे हैं और हालत 10 साल पहले से काफी अलग है, जब राजग सरकार ने पहली बार कार्यभार संभाला था। कुछ महीने पहले ही भारत भुगतान संकट से बाल-बाल बचा है और भारतीय अर्थव्यवस्था के कई तरह के दबावों से जूझ रही थी।

वैसे तो जीडीपी डिफ्लेटर और रियल व नॉमिनल ग्रोथ में अंतर के बारे में कुछ सवाल उठे हैं, लेकिन कुल मिलाकर देखें तो देश की आर्थिक मजबूती को सभी स्वीकार कर रहे हैं। नॉमिनल जीडीपी के हिसाब से देखें तो हमारी अर्थव्यवस्था पिछले वित्त वर्ष में 9.6 फीसदी बढ़ी है, जबकि इसके एक साल पहले इसमें 14.2 फीसदी बढ़त हुई थी। इसके अलावा, यह स्वीकार करना भी अहम होगा कि कोविड महामारी के बाद अर्थव्यवस्था में सुधार काफी हद तक ऊंचे सरकारी खर्च की बदौलत हुआ है, जिस पर आगे अंकुश लगाने की जरूरत होगी, जब सरकार राजकोषीय मजबूती की दिशा में और कदम बढ़ाएगी। हालांकि मौजूदा वर्ष में राजकोषीय घाटे का लक्ष्य हासिल करना कठिन नहीं होगा, यह देखते हुए कि रिजर्व बैंक उम्मीद से बहुत ज्यादा अधिशेष हस्तांतरण करने जा रहा है। इसलिए इस तरह की सहज स्थिति को देखते हुए नई सरकार के लिए यही सलाह है कि वह जुलाई में पेश होने वाले बजट में राजकोषीय मजबूती पर आगे बढ़ते हुए इसे जीडीपी के 3 फीसदी या कम पर लाने का एक संशोधित क्रमिक मार्ग पेश करे। इससे बाजार का भरोसा बढ़ेगा और निजी निवेश में सुधार लाने में मदद मिलेगी।

मध्यम अवधि के लिए निजी निवेश में सुधार अर्थव्यवस्था में तरक्की का सबसे अहम कारक होगा और अगली सरकार को इस पर खास जोर देना चाहिए। हालांकि, कमजोर निजी खपत निजी निवेश में अड़चन बन सकती है, खासकर जब विदेशी मांग भी अपेक्षाकृत कमजोर रहने का अनुमान है। अगली सरकार के लिए एक बड़ी आर्थिक नीतिगत चुनौती यह होगी कि भारत की विदेशी प्रतिस्पर्धात्मकता में किस तरह से सुधार किया जाए। इसके लिए व्यापार नीति सहित कई स्तरों पर नीतियों की समीक्षा और बदलाव की जरूरत होगी। निर्यात में लगातार ऊंची वृद्धि निवेश बढ़ाने, अत्यधिक जरूरी नौकरियों के सृजन में मदद कर सकती है और इससे कुल मिलाकर गुणवत्तापूर्ण वृद्धि में सुधार होगा। इस संबंध में भारत भू-राजनीतिक बदलावों का फायदा उठा सकता है और चीन प्लस वन जैसे बदलाव का प्रमुख हिस्सा बन सकता है। कुल मिलाकर देखें तो अगली सरकार को संभवतः अब तक का सबसे अच्छा आर्थिक प्रारंभिक बिंदु मिलेगा, लेकिन उसके लिए चुनौती इसे बनाए रखने की होगी ताकि देश का तीव्र और संतुलित आर्थिक विकास हो सके।

चवालीस दिन के चुनाव से निकले 10 सबक

वर्ष 2024 का आम चुनाव एक उम्मीदवार वाला चुनाव था। मोदी इकलौते प्रत्याशी थे जिनके नाम पर भाजपा ने वोट मांगे और वही इकलौते ऐसे विपक्षी थे जिन्हें भाजपा के प्रतिद्वंद्वी हराना चाहते थे

सन 1951-52 के बाद सबसे लंबी अवधि तक चलने वालोआम चुनाव के लिए मतदान ऐसे समय समाप्त हुआ है जब तापमान 50 डिग्री सेल्सियस के स्तर को छू चुका है। अब वक्त आ गया है कि हम इससे हासिल 10 सबक को याद करें।

■ पहला है प्रधानमंत्री द्वारा बड़ी तादाद में दिए गए मीडिया साक्षात्कार जिनके बारे में कुछ अनुयायियों का कहना है कि उन्होंने 100 से अधिक साक्षात्कार दिए। मीडिया के प्रति सतर्क बल्कि तिरस्कारपूर्ण व्यवहार रखने वाले सत्ता प्रतिष्ठान के लिए यह बहुत बड़ी तादाद है। इनमें अहम सबक यह है कि इनसे कोई मीडिया हेडलाइन नहीं निकली। न्यूज18 की रूबिका लियाकत को दिया साक्षात्कार जरूर इसका अपवाद है जिसमें उन्होंने कहा कि अगर वह हिंदू-मुस्लिम करते तो सार्वजनिक जीवन के योग्य न रहते।

■ अगर पहली रेखांकित करने लायक बात यह रही कि मोदी ने मीडिया से कितनी बातचीत की तो दूसरी यह है कि राहुल ने कितनी कम चर्चा की। उन्होंने एक भी साक्षात्कार नहीं दिया। उन्होंने संवाददाता सम्मेलनों में संक्षेप में बात की लेकिन मीडिया से सीधा संवाद करने का काम बहिन प्रियंका पर छोड़ दिया। राजनीतिक नजरिये से देखें तो इस प्रकार यह पहला ऐसा चुनाव अभियान था जहां राहुल ने कोई गड़बड़ी नहीं की।

■ इस चुनाव में सभी सुर्खियां अनिवार्य रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषणों से निकलीं। इससे एक बात तो यह पता चलती है कि यह एक प्रत्याशी वाला चुनाव था। इसके अलावा उन्होंने जो कहा वही खबर बन गया। फिर चाहे बात कच्चातीवू की हो, मंगलसूत्र की, घुसपैठिये की, करतार सिंह साहब की या 1971 के युद्धबंदियों के साथ इंदिरा गांधी की बात अथवा हिंदी प्रदेशों के कामगारों की, दक्षिण के राज्यों में सनातन धर्म के अपमान की। अगर आप चरण दर चरण इस चुनाव का एजेंडा तय करने वाली सुर्खियों पर नजर डालें तो 20 में से 18 प्रधानमंत्री के भाषणों से निकले। इनमें साक्षात्कार से निकली कोई सुर्खी नहीं है। हम जानते हैं कि मोदी के मामले में सबकुछ पहले से तय होता है इसलिए इससे कोई निष्कर्ष निकालने की आवश्यकता नहीं है।

राष्ट्र की बात
शेखर गुप्ता

■ इस तीसरी बात से यह बात निकलती है कि भाजपा का शोर हावी नहीं हुआ। वर्ष 2014 में उसके पास संप्रग-2 के 'घोटालों' और अच्छे दिनों के वादों का मुद्दा था। विदेश नीति में और खासतौर पर चीन के खिलाफ मजबूत कदमों का दावा भी था। उस समय तीन प्रमुख बिंदु थे व्यापक आर्थिक सुधार, भ्रष्टाचार का अंत और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में '56 इंच की छाती' वाला रुख। 2019 के चुनाव में राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा हावी था।

इस बार चुनाव प्रचार में अग्रणी को परिभाषित करने वाली कोई एक थीम नहीं थी। अर्थव्यवस्था, वृद्धि या रोजगार के मुद्दों की बात करें तो सभी चतुर राजनेता जानते हैं कि इन मसलों पर अपनी कामयाबी पर वोट मांगना जोखिम भरा होता है। वर्ष 2004 में वाजपेयी को यह सबक मिला था।

अगर 2014 और 2019 क्रमशः अच्छे दिन और राष्ट्रीय सुरक्षा के चुनाव थे तो हमें 2024 को किस प्रकार याद करना चाहिए? यह मोदी का चुनाव था। ऐसा चुनाव जहां मोदी का कोई विकल्प नहीं था। इस प्रक्रिया में पार्टी के घोषणापत्र तक को भुला दिया गया। इसकी जगह मोदी की गारंटी ने ले ली। मोदी और भाजपा ने घोषणापत्र की बात भी की तो ज्यादातर मौकों पर कांग्रेस के घोषणापत्र की।

■ बदलती भूराजनीति इस अभियान में भाजपा पर हावी रही। इसने राष्ट्रीय सुरक्षा की बहस को भी जब तब दिशा दी। मसलन प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पूर्ववर्तियों द्वारा आतंकवादियों के मामलों पर पाकिस्तान को फाइल सौंपने की तुलना अपने 'घुस के मारेंगे' के रुख के साथ की। परंतु इस मुद्दे में इतना भी दम नहीं था कि चुनाव के दूसरे चरण तक भी ठहर सके।

इसकी दो वजह हैं। पहली, बीते पांच सालों में ऐसा कोई कदम नहीं उठाया गया। दूसरा, निज्जर-पन्नून मामले में अंतरराष्ट्रीय गड़बड़ी ने ऐसी किसी कामयाबी के दावे को और मुश्किल बना दिया। इसने कुछ हद तक जी20 के बाद की चमक को फीका ही किया। खासतौर पर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि बनकर आने से मना कर दिया और उसी समय क्वाड की शिखर बैठक कराने की योजना परवान नहीं चढ़ सकी।

बदलती भूराजनीति के कारण कुछ सीमाएं भी उत्पन्न हुई हैं। पूर्वी लद्दाख में चीन चार वर्ष से जमा हुआ है और उसने समूची वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गतिविधियां बढ़ा दी हैं। यही वजह है कि इस बार प्रचार में मजबूत विदेश नीति की प्रतिक्रिया नजर नहीं आई।

■ अगर भाजपा 'मोदी नहीं तो कौन' के सिवा कोई अन्य चुनावी थीम नहीं पेश कर सकी तो विपक्ष भी जूझता ही रहा। वह मोदी बनाम कौन की लड़ाई से अवगत था। मोदी ही निशाना थे और उनके भाषणों और साक्षात्कारों में इतनी सामग्री थी कि उससे ढेर सारे मीम बनाए गए और छोटे-छोटे वीडियो साझा किए गए जो तेजी से फैले। अगर सोशल मीडिया पर वायरल होने को पैमाना माना जाए तो इन चुनावों में विपक्ष को जीत मिली। इसके अलावा विभिन्न दलों खासतौर पर 'इंडिया' गठबंधन के दलों ने इस चुनाव को कई स्थानीय और क्षेत्रीय चुनावों में विभाजित करने का प्रयास किया। यह क्षेत्रीय दलों के लिए आसान था लेकिन बड़े और अधिक सीटों वाले राज्यों में इसकी सीमाएं नजर आईं।

■ भारतीय जनता पार्टी के 'अबकी बार 400 पार' के नारे को विपक्ष ने बहुत जल्दी भांप लिया और इसे संविधान बदलने के खतरे से जोड़ दिया। कहा गया कि ऐसा करके कई वर्गों का आरक्षण छीनने की कोशिश है। इस बात ने भाजपा पर असर डाला और उसने यह नारा दोहराना बंद कर दिया। इसके साथ ही सन 1977 के बाद पहली बार संविधान की पवित्रता चुनाव में मुद्दा बनी।

■ इसके बावजूद विपक्ष संस्थानों पर काबिज होने और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बाधित होने को मुद्दा नहीं बना पाया। आपातकाल का जिक्र अपने साथ तीन चुनौतियां लाता है। पहली, इसे कांग्रेस ने लागू किया था। दूसरी आज मतदाताओं का एक बहुत बड़ा वर्ग 1977 के बाद पैदा हुआ है और उसे आपातकाल की कोई याद नहीं है। तीसरा, आपातकाल ने करोड़ों लोगों को प्रभावित किया। आज व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन, एजेंसियों का इस्तेमाल आदि चुनिंदा लोगों तक सीमित है जिसमें विपक्षी नेताओं से लेकर नागरिक समाज और मीडिया तक शामिल हैं। इसे बड़ी नाराजगी में नहीं बदला जा सका।

■ प्रचार अभियान जहां मोदी पर केंद्रित था वहीं भाजपा में अमित शाह के रूप में एक और चुनाव प्रचारक का उभार हुआ। उन्होंने देश भर में 188 रैलियों को संबोधित किया। उन्होंने खूब सुर्खियां बटोरीं। हमने 2017 में भी एक आलेख लिखकर भाजपा में उनके उभार को रेखांकित किया था। अब तक वह चुनाव में जिस पिछले कक्ष को संभालते रहे हैं इस चुनाव में वह उससे आगे बढ़े हैं। वह 2013 से ही भाजपा के दूसरे सबसे कद्दावर नेता रहे हैं। अब वह दूसरे सबसे अधिक नजर आने वाले नेता भी बन गए हैं।

■ आखिर में क्या वाकई इन चुनावों को 44 दिन तक चलना चाहिए था? सन 1996 के चुनाव 11 दिन तक चले थे। 1998 में 20 और 2000 में 21 दिनों तक चुनाव चले थे। 2004 में भी चुनाव 21 दिन तक हुए लेकिन उसके बाद इनमें लगातार इजाफा होता गया। वर्ष 2009 में 28, 2014 में 36 और 2019 में 39 और इस बार 44 दिन तक चुनाव हुए।

यह विडंबना ही है कि एक ओर संचार और संपर्क में सुधार हुआ है हम दुनिया को अपनी बेहतरीन ईवीएम के बारे में बताते हैं तथा बूथ पर कब्जों का अंत हुआ है तो दूसरी ओर चुनावों की अवधि लंबी होती जा रही है।

मुझे पता है कि कहा जाएगा कि कि चुनाव आयोग ने ऐसा इसलिए किया ताकि मोदी अपनी पार्टी के इकलौते संदेशवाहक के रूप में देश के अधिक से अधिक हिस्सों में पहुंच सकें। जैसा कि हमारे आंकड़े बताते हैं, चुनाव प्रचार की अवधि 1996 से लगातार बढ़ रही है। मुझे अंदाजा नहीं कि चुनाव आयोग ऐसा क्यों कर रहा है, सिवाय इसके कि शायद वह 61 दिन तक पहुंच कर आईपीएल के एक सीजन का मुकाबला करना चाहता है। इसके लिए 2029 की प्रतीक्षा करनी होगी।

रोजगार और काम के बारे में देश के युवाओं के विचार

इस चुनावी माहौल में बेरोजगारी को लेकर खूब गर्मागर्म चर्चा हुई, खासतौर पर इस बात को लेकर कि कैसे युवा रोजगार के अभाव में अवसाद से घिरे हुए हैं। एक दिलचस्प सवाल यह उठता है कि बेरोजगारी से सबसे ज्यादा प्रभावित युवा अपनी जिंदगी और दुनिया के नजरिये से रोजगार की स्थिति को किस तरह देखते हैं। वे इसके बारे में क्या सोचते और महसूस करते हैं? क्या उनमें गुस्सा और कुढ़न है? क्या वे खुद को थके और हारे हुए महसूस करते हैं? क्या वे चिंतित हैं? या इनमें से कोई भाव नहीं है?

पिछले महीने भी हमने अपने इस स्तंभ में 'दुनिया और चुनाव के बारे में युवाओं की सोच' शीर्षक वाले लेख में देश के युवाओं से जुड़े 'ड्राइवर्स ऑफ डेस्टिनी' नाम के शोध के कुछ निष्कर्षों का ब्योरा साझा किया गया था। अनुसंधान में शामिल युवाओं के समूह को 'अग्रणी', 'मध्य भारत' का प्रतिनिधि माना गया है यानी, ये कॉलेज शिक्षित (विभिन्न कॉलेज और कोर्स वाले), शहरी (भारत के बड़े और छोटे शहरों के रहने वाले), निम्न मध्यम और मध्यम आय वर्ग के (इसे 'मध्यम वर्ग' न समझें, जो वास्तव में भारतीय घरों के सबसे संपन्न 40 प्रतिशत तबके को दर्शाता है) हैं, जिनमें से कई अपने परिवार में कॉलेज जाने वाली पहली पीढ़ी के हैं।

यह 'उभरता हुआ भारत' और 'महत्त्वाकांक्षी भारत' है और खुदरा क्षेत्र के उद्यमी किशोर बियाणी के मशहूर 1-2-3 फ्रेमवर्क (मार्केटिंग ढांचा जिसमें तीन स्तर के ग्राहक शामिल हैं जिनमें उच्च आय वाला वर्ग, मध्यम आय वाला वर्ग और निम्न आय वाला वर्ग) का इस्तेमाल करते हुए यह देखा जाता है कि इस वर्ग, मध्यम आमदनी वर्ग यानी भारत 2 में पूरी तरह शामिल नहीं है लेकिन वे यहां तक लगभग पहुंच चुके हैं, हालांकि उन्हें भारत 1 नेटवर्क तक पहुंचने का विशेषाधिकार हासिल नहीं है। लेकिन वे इतने भी गरीब नहीं है कि वे वहां के अवसरों से अनजान हो या उन्हें पाने का प्रयास न कर सकें।

इसमें मुख्य बात यह है कि युवा भारत का यह समूह न तो अधिक परेशान है और न ही रोजगार की कमी के चलते बेहद गुस्से में या निराशा में है। ऐसा महसूस होता है कि मौजूदा भारत, 1970 के दशक की बॉलीवुड फिल्मों में अभिताभ बच्चन द्वारा 'ऐंग्री यंग मैन' के तौर पर युवाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले और 'मेरे अपने' में नौकरी मिलने के इंतजार में अपनी जिंदगी बरबाद करने युवाओं तुलना में यह बिल्कुल अलग भारत है।

रमा बीजापुरकर

स्वनियोजित लोग वास्तव में अंशकालिक तौर पर काम करने वाली आबादी (गिग वर्कर) में तब्दील होते जा रहे हैं और वे जिस शब्द का इस्तेमाल करते हैं वह शब्द 'नौकरी' नहीं बल्कि 'काम' है। वे इस बात को साफतौर पर समझते हैं कि काम ढूंढना मुश्किल है और बिना प्रयास के आसानी से काम नहीं मिलता है। वे लगातार काम की तलाश करने का प्रयास कर रहे हैं और यह उनके जीवन का एक बड़ा मुद्दा है। वे यह भी कहते हैं कि वे बहुत कोशिश कर रहे हैं और यह मुश्किल भी है, लेकिन काम करना जरूरी है।

हालांकि, दिलचस्प यह है कि एथनोग्राफर (लोगों के बीच रहकर उन पर शोध करने वाले शोधार्थी) ने इसे 'समस्या' के रूप में नहीं सुना। आम तौर पर काम करने वालों के पास करने के लिए कई तरह के काम होते हैं और इन कामों में लगातार बदलाव होता रहता है और आगे किस तरह के काम मिल सकते हैं यह इस पर भी निर्भर करता है (इससे अंदाजा मिलता है कि इसी के चलते कई क्षेत्रों में लोग जल्दी से नौकरी छोड़ देते थे)।

लेकिन भले ही काम के बारे में उनका नजरिया अल्पकालिक है लेकिन फिर भी उम्मीद है कि उनके लिए चीजें बेहतर होंगी। ये आत्मविश्वास हर तरफ से मिल रही जानकारियों से मिलती है खासतौर पर वे जिस माहौल में रहते हैं और वे सिर्फ वही चुनते हैं जो उन्हें अच्छा लगता है, दूसरी तरफ, वे चीजों को नजरअंदाज भी कर देते हैं। पिछले लेख में हमने बताया था कि वे दुनिया को अपने आसपास और अपने जीवन के सीमित दायरे से ही देखते हैं। इस नजरिये से उन्हें लगता है कि 'मैं ठीक हूं, मैं ये कर सकता हूं।' मुश्किलों का सामना करने की हिम्मत और नई चीजें सीखने की इच्छा भी उनमें काफी होती है। उनका सोचना होता है कि 'मैं कोशिश तो करूंगा, अगर सफल ना हो पाए तब भी कोई बात नहीं, मैं कुछ और कोशिश करूंगा।'

उनका जीवन इंटरनेट और सोशल मीडिया से जुड़ी सूचनाओं से भरा रहता है। सफल कैसे बनें (यूट्यूब पर इस विषय पर वीडियो की भरमार है), जैसे विषय से जुड़े विमर्श में भी उनकी व्यस्तता है और सोशल मीडिया उन लोगों को रोल मॉडल दिखाने में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाता है जिन्होंने अपने जुनून को आमदनी के स्रोत में बदल दिया है। यह सब उनके अंदर बहुत अधिक अराजकता जैसी स्थिति पैदा करता है और लगातार काम की तलाश करने से शारीरिक और मानसिक थकान भी होती है।

हालांकि ये लोग दुखी नहीं हैं और सरकारी नौकरी से उन्हें वाकई खुशी मिल सकती है। उनके लिए ये स्थिरता, सामाजिक प्रतिष्ठा और 'सेट हो जाने' वाली जिंदगी का प्रतीक है। उनका लक्ष्य यूपीएससी, आरबीआई, राज्य सरकार की प्रतियोगी परीक्षाएं, के इर्द-गिर्द केंद्रित है। ये परीक्षाएं योग्यता के आधार पर मिलने वाले अवसरों (हालांकि यह आसान नहीं) का भी प्रतीक हैं। वहीं दूसरी ओर, कुछ लोग जो बहुत जोखिम लेने के लिए तैयार रहते हैं, उनका मानना है कि वे शेयर बाजार में खूब कमाई कर सकते हैं।

यहां एक दिलचस्प बात सामने आई कि उन्हें इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है कि उन्हें नौकरियां कैसे मिलती हैं। उन्हें नहीं लगता कि ये किसी की जिम्मेदारी हो सकती है कि उनके लिए रोजगार के मौके तैयार किए जाएं। वे नौकरियों को 'बाजार' का नतीजा मानते हैं जो किसी अदृश्य शक्ति (हमारे शब्द, उनके नहीं) द्वारा बनाई गई है। इस 'बाजार' के नजरिये से देखा जाए तो नौकरी मिलना मुश्किल है लेकिन इसके लिए कोई दोषी भी नहीं है।

यह कहानी, जबरदस्त जज्बे (अपने आसपास को प्रभावित करने की व्यक्तिगत क्षमता) का मुकाबला एक बेहद मुश्किल माहौल (सीमित चयन वाली परिस्थितियों) से होने से जुड़ा है। हालांकि उनके पास जो क्षमता और जज्बा है वह फिलहाल हमारी उम्मीद है। ये कहानी हमें जल्द से जल्द अलग तरह की संरचनात्मक मदद देने के बारे में सोचने के लिए भी प्रेरित करती है। शायद ये मदद मध्यम वर्ग तक वित्तीय सुविधाओं की समान रूप से पहुंच, बेहतर बाजारों और अंशकालिक काम करने वाले गिग कामगारों की जिंदगी को कम थकाऊ और मुश्किल बनाने के बेहतर बुनियादी ढांचे के रूप में हो सकती है।

(लेखिका ग्राहकों से जुड़ी व्यापार रणनीति के क्षेत्र में कारोबार सलाहकार हैं)

आपका पक्ष

तंबाकू का नशा भी है हानिकारक

विश्व तंबाकू निषेध दिवस दुनिया भर में 31 मई को मनाया गया। तंबाकू से होने वाले दुष्परिणामों से लोगों को आगाह करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस की शुरुआत की थी। इस दिन दुनियाभर में तंबाकू से नुकसानों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम किए जाते हैं। शिक्षण संस्थानों में जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं। मीडिया भी अपना भरपूर योगदान देता है मगर इस दिवस का मकसद तभी पूरा होगा जब लोग खुद से तंबाकू से दूरी बनाएंगे। दुनियाभर में तंबाकू से लाखों लोगों की जान जाती हैं। किसी भी तरह के नशा सेवन से इंसान की असमय मृत्यु की आशंका रहती है। नशे के कारण कई घर बरबाद हो चुके हैं, फिर भी लोग इसके आदी हो जाते हैं। आज लोगों को नशे का नाश करने की जरूरत है, तब ही हम एक स्वस्थ समाज की परिकल्पना कर सकते हैं। सरकार को सख्त कदम उठाने चाहिए ताकि लोग नशे को ना कह सकें। तंबाकू और तंबाकू उत्पादों पर अधिक शुल्क और कर लगा देना चाहिए ताकि इसका सेवन करने वाले अपनी जेब पर बढ़ते बोझ के कारण इसका सेवन रोक दें। साथ ही साथ स्कूली बच्चों को समय-समय पर इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना चाहिए ताकि अगली पीढ़ी भी नशे के इस कुचक्र से दूर रहे और घर आकर अपने माता-पिता को भी नशे के हानिकारक परिणामों के बारे में बता सके।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

हर साल 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस का आयोजन किया जाता है मगर व्यापक जागरूकता के अभाव में इसका सेवन जारी है

दूरसंचार सुविधाओं में कैसे हो सुधार

वास्तव में यदि नियामक और सरकार का जोर इस बात पर हो कि दूरसंचार कंपनियां निश्चित गुणवत्ता की सेवा प्रदान करें तो दूरसंचार सेवा प्रदाताओं को बुनियादी ढांचे में सुधार और आवाज की स्पष्टता को बेहतर बनाने के लिए निश्चित ही सकारात्मक पहल करनी होगी। विभिन्न दूरसंचार कंपनियां प्रतिस्पर्धी बनने के लिए बाजार में निःशुल्क डेटा तो देती हैं, ग्राहकों को लुभाने के लिए कई आकर्षक योजनाएं शुरू करती हैं, लेकिन डेटा स्पीड बहुत कम होने के कारण ग्राहक निर्धारित डेटा का इस्तेमाल नहीं कर पाते और कई बार ग्राहकों से पूर्व निश्चित शर्तों के विपरीत अतिरिक्त पैसों की मांग की जाती है। इस प्रकार की समस्याओं और शिकायतों के निपटारे के लिए ट्राई ऐक्ट में वांछित संशोधन कर अपील प्राधिकरण को ज्यादा शक्तियां प्रदान करने की आवश्यकता है। दूरदराज में दूरसंचार सेवाओं में सुधार के संबंध में आम किस्म की शिकायतों/सुझावों पर खुला मंच या चौपाल आयोजित कर दूरसंचार कर्मियों को उपभोक्ताओं की नजर से उनकी समस्याओं को समझना और उनका मूल्यांकन करना होगा। कॉल ड्रॉप जैसी व्यापक समस्याओं से निपटने के लिए दूरसंचार विभाग की सेवाओं की गुणवत्ता के मानदंडों का विशेष ऑडिट आवश्यक है, जो उसके नेटवर्क के प्रदर्शन पर केंद्रित हो ताकि आमलोगों को इससे राहत मिल सके।

सुधीर कुमार सोमानी, देवास, मप्र

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

पूर्वी दिल्ली के गीता कॉलोनी में रविवार को दिल्ली जल बोर्ड के टैंकर से पेयजल भरकर ले जाते स्थानीय निवासी। दिल्ली के कई इलाकों के लोग गंभीर जलसंकट का सामना कर रहे हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। सोमवार, 3 जून 2024

लोकतंत्र का सवाल

अमेरिका में मैनहटन कोर्ट की ओर से पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को 34 अपराधों में दोषी ठहराना जितनी बड़ी घटना है, उससे कहीं ज्यादा अहम है इस पर ट्रंप और उनके समर्थकों का रिएक्शन। जिस तरह से समर्थक ट्रंप के हक में सड़कों पर उतर गए और सोशल मीडिया पर सिविल वॉर तक की धमकी दे रहे हैं, वह अमेरिकी समाज और राष्ट्र के लिए बिल्कुल अलग तरह की चुनौती का संकेत है।

अभूतपूर्व फैसला | अदालत का फैसला इस मायने में अभूतपूर्व कहा जाएगा कि इससे पहले कभी अमेरिका के किसी भी पूर्व राष्ट्रपति को किसी अदालत ने दोषी नहीं ठहराया है। साथ ही, पहले कभी अदालत की नजर में दोषी साबित हो चुका कोई व्यक्ति राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी भी नहीं बना।

अदालत का ट्रंप के खिलाफ फैसला

लोकप्रियता में गिरावट नहीं | मामला इस लिहाज से चुनावी भी कहा जा सकता है कि इसमें पॉर्न स्टार को पेमेंट की सूचना छिपाकर वोटरों के फैसले को गलत ढंग से प्रभावित करने की बात है। कोर्ट के इस आदेश के बावजूद ट्रंप के चुनाव लड़ने और दोबारा राष्ट्रपति बनने पर किसी तरह की रोक लगती नहीं दिख रही। उनकी लोकप्रियता में भी गिरावट के संकेत नहीं हैं।

कानून का संरक्षण | ट्रंप के पक्ष में सबसे बड़ी बात यह है कि अमेरिकी संविधान किसी अदालत से सजा पाए व्यक्ति को चुनाव लड़ने के अयोग्य नहीं ठहराता। फिर ट्रंप मैनहटन कोर्ट के इस आदेश के खिलाफ अपील भी कर सकते हैं। ऊपरी अदालत का फैसला आने में कुछ साल तो लग ही जाएंगे। उनके खिलाफ चल रहे अन्य मामलों में भी फैसला राष्ट्रपति चुनाव संपन्न होने से पहले आने के आसार नहीं हैं।

अलोकतांत्रिक मिजाज | इसे अमेरिकी लोकतंत्र के भविष्य के लिहाज से गंभीर घटना इसलिए माना जा रहा है कि ट्रंप का पिछला और मौजूदा रवैया लोकतांत्रिक मिजाज से मेल नहीं खाता है। 2020 राष्ट्रपति चुनाव में मिली हार को ट्रंप और उनके समर्थकों ने स्वीकार नहीं किया था। जिस तरह से उनके समर्थक वॉशिंगटन में संसद भवन (कैपिटल) में घुस आए थे, उसे पूरी दुनिया ने हैरत से देखा था।

आशंकाएं बरकरार | आज तक ट्रंप यही कहते हैं और उनके समर्थकों का बड़ा हिस्सा भी यही मानता है कि 2020 में उन्हें गलत ढंग से हारा हुआ बता दिया गया था। हालांकि चुनावी गड़बड़ियों का कोई सबूत उनकी ओर से नहीं दिया जा सका है। ऐसे में ट्रंप समर्थकों का मौजूदा रुख अमेरिका के लिए एक चुनौती तो है ही। सवाल यह भी है कि आगामी राष्ट्रपति चुनाव में अगर वोटरों का फैसला ट्रंप के मन मुताबिक नहीं हुआ तो उनके ये समर्थक किस तरह से रिएक्ट करेंगे। देखना होगा कि दुनिया का यह सबसे पुराना लोकतंत्र इस चुनौती से कैसे निपटता है।

चक्र-व्यू

साइकल की शान

राहुल पाण्डेय

एक जमाना था जब इंसान खुद को साफ करने से पहले अपनी साइकल साफ करता। हवा-ववा सही है? कोई तीली तो नहीं टूटी है? रिम शीशे की तरह चमक रही है या नहीं? मडगार्डों के अंदर कहीं मड तो नहीं जमा है? जो खुद को ज्यादा बड़ा मकैनिक समझता, वह अगले पहिये को अपनी दोनों टांगों के बीच फंसाकर हैंडिल की सिधाई भी चेक करता। साइकल अगर दीवार से लगाकर खड़ी की जाती है तो कभी-कभार उसकी हैंडिल टेढ़ी हो जाती है। बहुत लोग सिर्फ कपड़ा मारकर काम चलाते तो बहुत लोग धोकर पोंछते। पतारू के पापा धोकर पोछने के बाद उस पर पॉलिश भी लगाते। उसके बाद खुद को धुलते और फर्स्ट क्लास कोट पहनकर साइकल पर सवार होते, तो लगता अमिताभ बच्चन जा रहे हैं। मैं और पतारू चौराहे तक उनकी साइकल का पीछा करते, उसकी लकदक देखते। साइकल तो मेरे बाबू की भी कम नहीं थी। मगर वो सिर्फ कपड़ा ही मारते और हफ्ते में एक बार ही धोते। दोनों में एक बात कॉमन थी। पोछने के लिए दोनों साथ में साइकल निकालते और आपस में बतियाते हुए पोछते। जैसे इन दिनों लकदक गाड़ी पर चलना शान की बात है, उन दिनों चमकती हुई साइकल पर चलना शान की बात मानी जाती थी। इंसान चाहे-अनचाहे नॉस्टेल्जिया में डुबकी लगा ही लेता है। मैंने भी लगा ली। कुछ दिन पहले एक साइकल खरीदी। पतारू के पापा की तरह रोज सुबह पॉलिश करके उसे चमकाता। शहर भर के चक्कर लगाता रहा। कभी रेल की पटरी के किनारे चलाई, तो कभी घास के मैदानों पर। ऊबड़-खाबड़ में कुदाई तो कैंची चलाने की असफल कोशिश की। विद्या कसम, बड़ा मजा आ रहा था। एक दिन ऐसे ही साइकल से दफ्तर जा रहा था। आगे से दाहिने मुड़ना था, सो मैं दाहिनी ओर डिवाइडर की तरफ सटकर साइकल चला रहा था। पीछे से कार और बाइक वाले आराम से निकलते रहे। जब मोड़ नजदीक आने को हुआ तो अचानक एक कार वाला पीछे से लगातार हॉर्न बजाने लगा। मैं हटता तो कहां हटता! उसने कार मेरी साइकल से सटा दी। क्या करता, जल्दी से कूदकर नीचे उतर गया। उसने शीशा उतारा, एक गाली बकी और पूछा- अंधा है क्या? मैं क्या बोलता? उसकी निगाह में साइकल वालों के लिए जो नफरत थी, उसे कोई भी जवाब संतुष्ट नहीं कर सकता था। मैं चुपचाप पैदल ही साइकल लेकर आगे बढ़ गया। मगर सवाल उसका सही था। नॉस्टेल्जिया के गड्ढे में गिरने पर अगर ऐसे सवाल सामने आएं, तो उनका बुरा नहीं मानना चाहिए। पर उस नफरत का क्या करूं, जो साइकल वालों के प्रति उस कार वाले की आंखों में दिख रही थी?

एकदा

आइंस्टाइन के गांधीजी

1939 की बात है। महात्मा गांधी का 70वां जन्मदिन मनाया जा रहा था। इस मौके पर एशिया, यूरोप, अफ्रीका और अमेरिकी महाद्वीप में जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे थे। यह आयोजन महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा से प्रभावित लोगों ने खुद आयोजित किए थे। जन्मदिन मनाने वालों में 20वीं सदी के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन भी थे। उनसे गांधी जी के जन्म दिन के अवसर पर कुछ लिखने के लिए कहा गया तो उन्होंने लिखा, 'आने वाली पीढ़ियां इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस का ऐसा आदमी सचमुच इस धरती पर कभी चलता-फिरता था।' उनकी इस टिप्पणी को उस समय रेडियो से भी प्रसारित किया गया था। आइंस्टाइन गांधी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने गांधी को एक ज्ञानी राजनेता बताया था। दोनों एक-दूसरे से कभी मिले तो नहीं, लेकिन चिट्ठियों से वैचारिक आदान-प्रदान करते रहे।

Subrata Dhar

उनके निधन पर भी आइंस्टाइन ने लिखा, 'आखिरकार गांधी जी को अपने ही सिद्धांतों के कारण जान गंवानी पड़ी। देश में सांप्रदायिक तनाव और कानून व्यवस्था की जर्जर स्थिति में भी उन्होंने सशस्त्र बलों की सुरक्षा लेने से इंकार कर दिया।' आइंस्टाइन की इस टिप्पणी के लगभग छह दशक बाद भी पूरी दुनिया उनके कथन की अहमियत को समझ रही है है। आज 70 से भी अधिक देशों में महात्मा गांधी की मूर्तियां स्थापित हैं जहां उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के सामने उनकी मूर्ति स्थापित है, जो कि अब पूरे विश्व की धरोहर है। पूरी दुनिया के राष्ट्राध्यक्ष उन्हें नमन करते हैं। उनके वैश्विक सम्मान पर भारत हमेशा गौरवान्वित होता रहेगा।

संकलन : **हरिप्रसाद राय**

सबकी नज़रें टिकीं 4 जून को आने वाले चुनाव नतीजों पर, क्या ये एग्जिट पोल जैसे ही होंगे?

एग्जिट (Exit) पोल (Poll) सही साबित होंगे या गलत

राहुल वर्मा

एक तारीख को आए एग्जिट पोल के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। सभी ने प्री-पोल सर्वे में कहा था कि भारतीय जनता पार्टी (BJP) आराम से चुनाव जीत रही है। मगर किसी ने उनकी सीटें इतनी बढ़कर आने की कल्पना शायद नहीं की थी। खास तौर से चुनाव के दौरान ढेर सारी ऐसी बातें उठीं कि कई जगह कांटे का मुकाबला हो गया है! यह कहा गया कि हो सकता है BJP को आसानी से बहुमत के लिए आवश्यक 272 सीटें भी ना मिलें! उस लिहाज से ये चौंकाने वाले आंकड़े हैं।

पहले से ज्यादा सीटें | सवाल उठता है कि क्या 4 जून को जब असली नतीजे आएंगे, तो चीजें बदल जाएंगी? मेरा मानना है कि नहीं। ज्यादातर एग्जिट पोल में राष्ट्रीय स्तर पर जो संख्या दी गई है, वह लगभग एक जैसी है। सभी ने कहा है कि BJP आराम से 320 या उससे ऊपर जा सकती है और NDA 370-375 के ऊपर। वहीं कांग्रेस अपनी सीटों में मामूली सा ही इजाफा करेगी। चूंकि सारे पोल्स में एक समानता है तो नतीजे इसके उलट आने बहुत ही मुश्किल हैं। हद से हद 10-15 सीटें इधर-उधर हो सकती हैं जिससे जाहिर है, मूल नतीजे पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। दूसरे शब्दों में, अब यह मान लिया जाए कि BJP पूर्ण बहुमत से, और 2019 के मुकाबले में ज्यादा सीटें और वोट लेकर सत्ता में आ रही है।

नफा-नुकसान | दूसरी बड़ी बात हमने एग्जिट पोल में यह देखी कि BJP अपने कोर स्टेट में 2014-2019 जैसा ही प्रदर्शन कर रही है। ये राज्य हैं- हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात और मध्य प्रदेश। उसे थोड़ा-बहुत जो नुकसान हो सकता है, वह हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान, झारखंड और बिहार में हो सकता है। इसी कड़ी में आप असम और नॉर्थ ईस्ट भी जोड़ सकते हैं। मगर ये नुकसान बहु त ही छोटे होंगे।

क्यों खारिज नहीं किए जा सकते
- राष्ट्रीय फिगर सबके एक जैसे हैं
- साल 2004 जैसे नहीं हैं हालात
- बहुत बड़ा है वोट शेयर का अंतर

कल्पना से परे | BJP बंगाल की खाड़ी के किनारे लगभग सभी राज्यों में बड़ा फायदा पाने जा रही है। मेरे ख्याल से इतने लाभ की कल्पना शायद BJP ने भी नहीं की होगी। बंगाल में माना जा रहा था कि शायद दो-चार सीटें बढ़ेंगी, वहां पर वह बड़ी जीत हासिल कर सकती है। ओडिशा-तेलंगाना में भी यही हो रहा है। आंध्र में TDP के साथ गठबंधन में काफी सीटें जीत रही है। अगर एग्जिट पोल सही होता है तो यह पहली बार होगा जब देश के हर बड़े राज्य में BJP का कम से कम एक सांसद होगा।

इंडिया का हाल | एग्जिट पोल बताते हैं कि कांग्रेस ने केरल और पंजाब में अपना गढ़ बचाकर रखा है। थोड़ा-बहुत उसे लाभ है तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा और राजस्थान में। पर मोटी बात यह है कि कांग्रेस के प्रदर्शन में खास सुधार नहीं हुआ है। सबसे बड़ा झटका लगता दिख रहा है आम आदमी पार्टी को, जिसके पास शायद कोई भी सीट ना हो, एक-दो सीटें पंजाब से आ जाएं तो बात अळग है। भारत राष्ट्र समिति को भी तेलंगाना में धक्का लग रहा है। बीजू जनता दल को ओडिशा में तो तृणमूल कांग्रेस को वेस्ट बंगाल में झटका लग रहा है।

AI Image

विपक्ष की रणनीति | यह स्थिति इस वजह से भी हुई कि शायद विपक्ष की जो रणनीति चुनाव के दौरान बन रही थी, वह सफल नहीं हुई। विपक्ष ने सितंबर 2023 से लेकर फरवरी 2024 तक अपना समय गठबंधन की इन बातों में गंवाया कि कौन बाहर जा रहा है, कौन कितनी सीटें लड़ेगा? अंततः उसका उन्हें खामियाजा भुगतना पड़ रहा है।

छह गुना अंतर | कुछ लोग कह रहे हैं कि ऐसा ही एग्जिट पोल 2004 में भी आया था। पर यह समझना जरूरी कि 2004 में स्थिति बुनियादी तौर पर अलग थी। उस समय BJP और कांग्रेस दोनों समान रूप से मजबूत पार्टियां थीं। दोनों के पास 25% के आसपास वोट शेयर था। दोनों डेढ़ सौ सीटों के आसपास की पार्टियां थीं। इसलिए रिवर्सल आसान था। लेकिन 2019 में BJP कांग्रेस से वोट शेयर के मामले में दोगुनी बड़ी पार्टी हो गई। सीटों के मामले में यह अंतर कहीं ज्यादा है। कांग्रेस के पास 50 सीटें हैं तो BJP के पास 300 सीटें। छह गुना है सीटों का अंतर।

तीन बातें | 1 जून को जो एग्जिट पोल में दिखा है अगर वह 4 जून को सच होता है तो यह भारतीय राजनीति के लिए एक बड़ा बदलाव होगा। पहला बदलाव 2014 से शुरू हुआ। जिसमें BJP जो पहले सिर्फ उत्तर-पश्चिम की पार्टी थी, वह 2019 में पूर्वोत्तर राज्यों में पहुंच गई, और 2024 में उसने अपना दायरा बढ़ा लिया। वह बंगाल की खाड़ी से सटे राज्यों और साउथ में भी चली गई। दूसरी बात, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली BJP सरकार लगातार तीसरे टर्म में जब वापस आ रही है तो हर बार अपना वोट और सीट शेयर बढ़ाती जा रही है।

इतिहास बनेगा | यह बहुत ही अनोखी चीज है। ऐसा पहले भारत में कभी नहीं हुआ। नेहरू जी भी तीन टर्म जीतकर आए थे पर उनकी पार्टी का फैलाव बढ़ नहीं रहा था। यही चीज इंदिरा जी के साथ भी हुई। तीसरी बात, अगर ये नतीजे सही हुए तो आने वाले समय में विपक्ष के लिए मुश्किलें बढ़ने वाली हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि विधानसभा चुनाव के स्तर पर मुकाबला टक्कर का नहीं होगा और BJP आसानी से जीत जाएगी। पर नैशनल लेवल पर BJP को चुनौती देने का विपक्ष का जो सपना है, अब वह पांच साल के लिए मुल्तवी हो चुका है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक और CPR में फेलो हैं)

सच दिखाने वाला आपका पक्का दोस्त है आईना

'अंदाज अपना देखते हैं आईने में वो, और ये भी देखते हैं कोई देखता न हो।' आईना, आईने में झांकता चेहरा, उस चेहरे में झांकती आंखें और उन आंखों की फितरत - सब कुछ साफ हो जाता है निजाम रामपुरी का यह शेर सुनकर। रामपुर के रहने वाले निजाम साहब थे सूफी मिजाज के शायर, नर्म लहजे वाले। पता नहीं किसे देखकर उन्हें ख्याल आया इस शेर का। लेकिन, उन्होंने उस ख्याल को कागजों पर उतारने के लिए वक्त निकाला, यानी ख्याल उम्दा था और गंभीर भी। आईने में झांकते ऐसे लोगों से परिचय तो हम सभी का है।

शीशे की चमक मजबूर कर देती है एक बार उसे देखने के लिए। कोई आकर्षण खींचता हो जैसे। लेकिन, यही तिलिस्म है कि वह आकर्षण शीशे का नहीं, बल्कि हमारा खुद का होता है। खुद से खुद का प्यार।

आईना जरिया है अपने प्रति प्यार जताने का। कोई भी हमें हमसे ज्यादा प्यार नहीं कर सकता। यह हमें याद दिलाता है कि हर व्यक्ति विशेष है और हर चेहरा अपने आप में एक कहानी। वह हमारे अंदर की सचाई बाहर लाता है। हमारे चेहरे के हर दाग, हर झुर्री, हर रंग को दिखाता है, बिना कुछ भी छिपाए या बदले। उसे हकीकत को चाशनी में लपेट कर देना नहीं आता। जो भी बात है साफ और सीधी, भले कड़वी ही सही।

कभी-कभी हमें वह चीजें भी दिखाता है, जो हम अपने से देख नहीं पाते। यहीं से शुरू होता है उसका जादू। दक्षिण सूडान में जन्मीं और अब ब्रिटिश नागरिक बन चुकीं मॉडल एलेक वीक का कहना है कि ज्ञान खरीदा नहीं जा सकता, लेकिन आप एक आईना लेकर उसमें ज्ञान को बढ़ते हुए देख सकते हैं। वह ज्ञान बढ़ता है हमारे अनुभवों के साथ, हमारी उम्र के संग।

AI Image
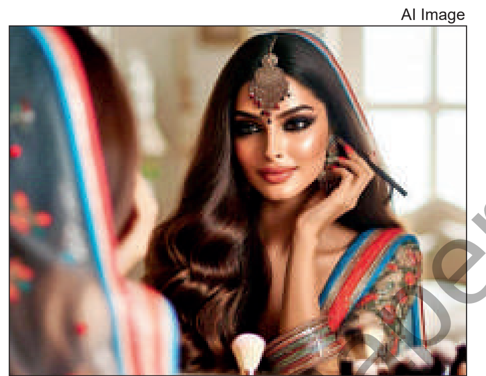
जीवन आनंद

एक नई दृष्टि देता है आईना। कमियां दिखाता है, ताकि बेहतर करने की प्रेरणा मिल सके। खूबियां जाहिर करता है, जिससे आत्मविश्वास बढ़े। मौन होकर भी वह सारी बातें खोल कर रख देता है। उसकी मूक भाषा जुड़ती है सीधे दिल से। यही खूबी तो होती है एक सच्चे दोस्त की। एक सीनियर ने कुछ दिनों पहले कहा कि असली दोस्त वह है, जिसके साथ रहते हुए कुछ बोलने की जरूरत न पड़े।

दोस्ती में भाषा का कोई काम नहीं, जज्बातों का है। इस कसौटी पर आईना खरा उतरता है बिल्कुल। उसका मौन रहना खलता नहीं और उससे मन कभी ऊबता नहीं। हमारी खुशियों और दुखों में बराबर का साझीदार बन जाता है। चेहरे पर मुस्कान देख मुस्कुराता है और गम देख उदास हो जाता है।

खुद को आईने में देखना आनंद है, क्योंकि हमें हमारे अस्तित्व की याद दिलाता है। बताता है कि हम हैं कौन, किन परिस्थितियों में हैं और क्या कर सकते हैं। शीशे में मुंह देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि क्या हद है हमारी। और किसी को आईना दिखाकर वाकिफ करा सकते हैं कि क्या वास्तविकता है उसकी। कितनी बार हम खुद के भीतर झांकने की कोशिश करते हैं? शायद बिरले ही, तभी जब कोई और विकल्प नहीं होता। हालांकि आईना हमें वह मौका हर दिन देता है।

'सुंदरता अनंत काल तक स्वयं को दर्पण में निहारना है' - खलील जिब्रान के ये शब्द असली महत्व समझाते हैं आईने का। सुंदरता है तो उसे सराहने के लिए आईना चाहिए ही। सुधार के लिए भी जरूरत है आईने की। जल्दबाजी में नहीं, थोड़ा ठहर कर देखिए तो उसमें आत्मा तक दिख जाती है। और यही आईने का जादू है कि उसकी न अपनी आत्मा है और न अपना शरीर, फिर भी वह है।

शेयर करें अपने अनुभव
जीवन की दिनचर्या के अनुभवों में आप कैसे आनंद महसूस करते हैं, हमें बताएं **nbtreader@timesgroup.com** पर, और सब्जेक्ट में लिखें- **'जीवन आनंद'**

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
hindi.speakingtree.in

हम एक ही प्रभु की संतान हैं, तो प्यार से रहें

संत राजिन्दर सिंह जी महाराज

किसी न किसी रूप में सभी पिता-परमेश्वर की पूजा करते हैं। हर धर्म की अपनी-अपनी उपासना पद्धति होती है और सबका मूल उद्देश्य केवल प्रभु का ध्यान करना है। ज्यादातर लोग पूजा के स्थानों पर जाकर सेवाओं में भाग लेते हैं और पिता-परमेश्वर को याद करते हैं। विभिन्न धर्मों और शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि अपने अंदर जाकर ही इंसान को प्रभु को पाने का रास्ता मिलता है। इसके लिए हमें अपने शरीर और मन को शांत करना पड़ता है।

प्रभु का अनुभव हम ध्यान-अभ्यास के जरिए कर सकते हैं। इसके लिए बाहर से ध्यान हटाने की जरूरत है। पिता-परमेश्वर आनंद, चेतनता और प्रेम के महासागर हैं। और इसका अनुभव तब होता है, जब हम ध्यान-अभ्यास में बैठते हैं और अपने अंतर में प्रभु के साथ बात करते हैं। ध्यान-अभ्यास करने के लिए हम कोई शांत जगह ढूंढकर आराम से बैठते हैं, जिससे हम ज्यादा देर तक स्थिर रह सकें। हम अपनी आंखें बंद करते हैं और अपना ध्यान दो भौहों के बीच 'शिवनेत्र' पर एकाग्र करते हैं, जिसे तीसरी आंख या दिव्य-चक्षु भी कहा जाता है। मन को स्थिर रखने के लिए हम प्रभु के नामों का जाप करते हैं।

ध्यान-अभ्यास की इस कला को सीखने के लिए किसी पूर्ण गुरु की जरूरत होती है। पूर्ण गुरु वही हैं जो हमें अपने अंदर प्रभु की ज्योति और श्रुति का अनुभव कराते हैं। इस अनुभव को प्राप्त करने के बाद ही हम अपने अंतर में आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत करके प्रभु के अंतरीय मंडलों का पता लगा सकते हैं। जब भी हम कुछ नया सीखना चाहते हैं तो हम शिक्षक के पास जाते हैं। ठीक उसी प्रकार यदि हमें आध्यात्मिक विद्या में निपुण होना है तो हमें किसी पूर्ण गुरु के चरण-कमलों में जाना ही होगा। प्रभु के दिव्य प्रकाश का जो अनुभव गुरु हमें देते हैं, उसे किसी ग्रंथ या साहित्य से नहीं पाया जा सकता। प्रभु के प्रति सच्चे प्यार, चिंतन और ध्यान-अभ्यास के जरिए ही हमें उन्हें पाना है। प्रतिदिन ध्यान-अभ्यास में समय देने से हमें अपने सच्चे स्वरूप यानी आत्मा के बारे में जानने में मदद मिलती है।

जब हम अपने भीतर प्रवेश करते हैं तो पता चलता है कि हमारे अंदर प्रभु का प्रकाश ही प्रकाश है। उसके बाद ही अनुभव होता है कि प्रभु का जो प्रकाश हमारे अंदर है, वही दूसरों में भी है तो हमें दूसरे भी पराए नहीं लगते। इस दुनिया के बाहरी मतभेद जो इंसान को इंसान से अलग करते हैं, धीरे-धीरे हमारे अंदर से मिटने लगते हैं। हम सभी लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं और उनके भीतर भी प्रभु के प्रकाश को देखते हैं।

प्रभु के चिंतन का अर्थ है सभी लोगों से प्यार करना और हर एक के प्रति दयालुता का व्यवहार करना और एक नैतिक जीवन जीना, जिसमें हम किसी को भी चोट न पहुंचे। सभी को प्रभु के एक ही परिवार के सदस्यों के रूप में प्यार करें और निस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करें। आइए! हम प्रभु से प्यार करें और उनका चिंतन करें। ध्यान-अभ्यास के जरिए प्रभु के प्रकाश को अपने भीतर खोजना है। अगर हम ऐसा करेंगे तो निश्चित रूप से अपने भीतर ही प्रभु को पाएंगे।

चीन को कैसे हरा सकता है अमेरिका

मृत्युंजय राय

अमेरिका में राजनीति के दोनों पक्ष यानी डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी इस बात पर एक राय रखते हैं कि उसके दबदबे को चुनौती चीन ही दे सकता है। 1991 में शीत युद्ध खत्म होने के बाद से अमेरिका दुनिया की अकेली महाशक्ति रहा है। लेकिन अब अमेरिका को चीन से चुनौती मिल रही है।

AI Image

विचार विंडो

Dmitri Alperovitch और Garrett Graff ने इसी चुनौती का जिक्र **'World on the Brink'** नाम की किताब में किया है। दोनों ने यह भी बताया है कि अमेरिका कैसे इस चुनौती पर विजय पा सकता है। अपने जन्मस्थान रूस से टीनएज में अमेरिका जा बसने वाले Dmitri Alperovitch वॉशिंगटन में एक थिंक टैंक के चेयरमैन हैं और Garrett Graff जर्नलिस्ट। Dmitri के नाम यूक्रेन पर रूस के हमला करने की भविष्यवाणी का श्रेय भी है। दोनों ने चीन को काबू में करने के लिए जो उपाय सुझाए हैं, उनमें से कुछ पर अमेरिकी प्रशासन ने अमल भी शुरू कर दिया है। इनमें चिप टेक्नॉलजी के निर्यात पर नियंत्रण, सप्लाई चेन को सुरक्षित बनाने और आर्टिफिशल इंटेलिजेंस में रिसर्च फंडिंग जैसी बातें शामिल हैं, लेकिन कुछ ऐसे उपाय भी हैं, जिन पर अमल नहीं हो रहा है। इनमें यूक्रेन युद्ध के सबक भी शामिल हैं। लेखकों का सुझाव है कि अमेरिका को अपने रक्षा खर्च के ढांचे में बदलाव करना चाहिए। उसे F-16 जैसे महंगे हथियारों के बजाय भरोसेमंद और जिनका अधिक प्रॉडक्शन किया जा सके, वैसे हथियारों पर अधिक ध्यान देना होगा। इस सिलसिले में वे जेवलिन मिसाइल का जिक्र करते हैं।

किताब में ताइवान मसले का भी जिक्र है, जिसके बारे में माना जाता है कि वह अमेरिका और चीन के बीच अगले टकराव की वजह बन सकता है। इस बारे में लेखकों का कहना है कि धीरज से अमेरिका को लाभ हो सकता है। वे लिखते हैं कि उसे इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि ताइवान अपने सुरक्षा उपायों को मजबूत करे। इसके साथ वे यह भी लिखते हैं कि इस बीच अमेरिका और पश्चिम में उसके सहयोगी देशों को चीन पर अपनी निर्भरता कम करनी चाहिए।

किताब का संदेश यह भी है कि आज जब अमेरिका और चीन के बीच प्रतिद्वंद्विता बढ़ रही है, बाइडन और उसके बाद आने वाली सरकार को सिंपल स्ट्रैटिजी पर फोकस करना चाहिए।

इसके अलावा किताब उन कमजोरियों की ओर भी इशारा करती है, जिनसे चीन प्रभावित हो सकता है। मसलन- चीन में युवा कामकाजी आबादी कम हो रही है और बुजुर्गों की संख्या में इजाफा हो रहा है। यह भी कहा जा रहा है कि चीन मध्यम आय वर्ग वाला देश बनकर न रह जाए। चीन फ्यूल और खाने की चीजों के लिए भी दूसरे देशों पर आश्रित है। लेकिन इन बातों के साथ लेखक यह सलाह भी देते हैं कि अमेरिका को अपनी बढ़त बनाए रखने के लिए सजग रहना होगा। खासतौर पर डेमोग्राफी, टेक्नॉलजिकल और जियो-पॉलिटिकल बढ़त पर। उसे दुनिया में सहयोगियों की संख्या बढ़ानी होगी और इमिग्रेशन नीतियों को लचीला रखना होगा ताकि प्रतिभाशाली लोग वहां आकर बसते रहें। लेकिन चीन ने कई मुश्किल चुनौतियों पर बहुत ही कम समय में विजय पाई है। एक वर्ग ऐसा भी है, जो मानता है कि टेक्नॉलजी वॉर में वह अमेरिका को हरा सकता है। सोलर सेक्टर में वह अपना दबदबा कायम कर चुका है और इलेक्ट्रिकल वीइकल्स में चीनी कंपनियां दुनिया पर छाने को तैयार हैं। इसलिए दुनिया पर वर्चस्व की यह जंग एकतरफा नहीं होगी और अच्छा होगा कि अमेरिका यह बात समझ ले।

परदे के पीछे बदलाव

प्रणव प्रियदर्शी

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की पहली और काफी हद तक इकलौती महिला गैफर हैं हेतल डेढ़िया, जो करीब दो दशक पहले इस फील्ड में आईं। फिल्म इंडस्ट्री में गैफर कहते हैं हेड लाइटिंग डिजाइनर को। उस वक्त तो कोई इस भूमिका में किसी महिला की कल्पना भी नहीं कर सकता था। पर हेतल ने इस कल्पना को सचाई में तब्दील किया। हेतल के साथ अच्छी या बुरी एक बात यह रही कि उनके पिता मूलचंद डेढ़िया देश के जाने-माने गैफर रहे हैं। हेतल मात्र नौ साल की थीं जब शेखर कपूर निर्देशित फिल्म 'बैंडिट क्वीन' की शूटिंग के दौरान उन्होंने क्रेन के सहारे मून बॉक्स को 100 फीट की ऊंचाई पर पहुंचाए जाते, फिर उससे आसमान में चमकते चांद का इफेक्ट पैदा होते देखा और प्रभावित हुईं। मगर पिता के इस लाइन में होने के अलावा जो दूसरा फैक्टर हेतल को इस तरफ खींच रहा था, वह था यह तथ्य कि इस फील्ड में कोई लड़की नहीं है। यह तथ्य उनके जीवन के दूसरे फैसलों पर भी हावी रहा। मसलन, दसवीं के बाद जब हेतल ने पढ़ाई छोड़ी तो कॉलेज जाने की उमर में वह एक गेमिंग क्लब में स्नूकर खेलती रहीं। कारण वही कि उस समय स्नूकर लड़कियां नहीं खेलती थीं। फिर जब जिंदगी में कुछ करने का, कोई प्रफेशन चुनने का सवाल सामने आया तो उन्होंने पिता के ही फील्ड में हाथ आजमाने का फैसला किया। बहरहाल, पिता को जब उनके फैसले का पता चला तो उन्हें कोई खुशी नहीं हुई। वह उस फील्ड के हर पहलू से अच्छी तरह वाकिफ थे और नहीं चाहते थे कि बेटी वह सब झेले। उन्होंने हेतल को समझाया कि यह मर्दों की लाइन है। पर यही सचाई तो हेतल बदलना चाहती थी। बदला भी उन्होंने। अपने बेहतर काम से न केवल अपने लिए सम्मानजनक स्थान बनाया बल्कि इस मान्यता को भी सफलतापूर्वक चुनौती दी कि यह मर्दों का फील्ड है। गायत्री रंगाचारी शाह और मल्लिका कपूर की हाल में प्रकाशित पुस्तक 'चेंजमेकर्स' में हेतल उन 20 महिलाओं में शामिल की गई हैं जो परदे के पीछे हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को रूपांतरित कर रही हैं।

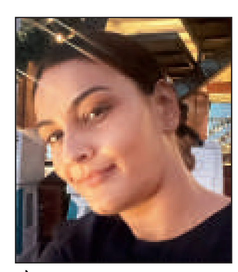

आधी दुनिया

रीडर्स मेल www.edit.nbt.in

■ जीवन चलने का नाम
27 मई को 'जीवन आनंद' कॉलम में प्रकाशित लेख 'सोलो ट्रैवेलिंग जिंदगी जीने की ट्रेनिंग देती है' बेहद रोचक लगा। घर से निकलने पर महसूस होता है कि जिंदगी में कितनी चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों से हमें खुद अकेले लड़ना होता है। इन चुनौतियों से पार पाने के अपने ही मजे हैं। लेख में सोलो ट्रैवेलिंग के ऑप्शंस के बारे में पढ़ने को मिला। जीवन के हसीन पलों को संजोने का अवसर मिलता है। ट्रैवेलिंग पर निकलें तो दूसरों की संस्कृति, भाषा समझना भी आनंद देता है। यहीं समझने को मिलता है कि जीवन चलने का नाम है।

पैंथर तोमर, किशन गंज

■ यात्रा के फायदे
यात्रा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 27 मई के लेख 'सोलो ट्रैवेलिंग जिंदगी जीने की ट्रेनिंग देती है' में पढ़ने को मिला कि किस तरह हम सोलो ट्रैवेलिंग का लुत्फ उठा सकते हैं। यात्राएं कई प्रकार की होती हैं, जैसे कि व्यावसायिक, धार्मिक, शैक्षिक। प्रत्येक यात्रा का अपना महत्व और अनुभव होता है। व्यावसायिक यात्राएं नए व्यापारिक अवसर हासिल करने और नेटवर्किंग बनाने का साधन होती हैं। धार्मिक यात्राएं मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की ताजगी देती हैं। हमें यात्रा को अपने जीवन का नियमित हिस्सा बनाना चाहिए।

कपिल सिंह, नोएडा

■ कोई भेदभाव नहीं
20 मई को ' जीवन आनंद' कॉलम में 'देश में सब बराबर, बताती है वोटिंग की लाइन' पढ़ने को मिला। हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र तो है ही यह धर्मनिरपेक्ष भी है। यहां सभी को समान अधिकार मिले हुए हैं। मतदाता धर्म-जाति का भेदभाव भूलकर वोट डालने के लिए कतार में खड़े होते हैं। हालांकि कुछ राजनेता वोट बैंक की खातिर लोगों को बांटने का काम करते हैं, पर इनका असर स्थायी नहीं होता। यह अच्छी बात है।

राजेश कुमार चौहान, ईमेल से

nbtedit@timesgroup.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

सेंसर की खराबी से रेकॉर्ड हुआ था अधिक तापमान - एक खबर
- यहां गर्मी से सबका तेल निकल रहा है, इन्हें रेकॉर्ड की पड़ी है!

प्रीति गोयल

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए, राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्सः 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

हिन्दुस्तान
1936 सत्य • सार्थक • सदैव

सत्तारूढ़ की वापसी

मतदान का लंबा सफर खत्म होने के बाद अब मतगणना की शुरुआत हो चली है। एक ओर, जहां एग्जिट पोल की चर्चा तेज है वहीं दूसरी ओर, दो राज्यों- अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम विधानसभा चुनाव के नतीजे भी आ गए हैं। अरुणाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने फिर से जीत दर्ज की है, तो वहीं सिक्किम में मजबूत क्षेत्रीय दल सिक्किम क्रांतिकारी मोरचा अर्थात एसकेएम ने लगातार दूसरी बार बड़ी जीत दर्ज की है। इन दोनों राज्यों में लोकसभा सीटों के लिए वोटों की गिनती 4 जून को होगी, मगर इनमें विधानसभा चुनावों के लिए वोटों की गिनती पहले कर दी गई है, क्योंकि वर्तमान विधानसभा का कार्यकाल 2 जून को समाप्त हो रहा था। एक खास बात यह भी है कि अरुणाचल प्रदेश के 60 विधानसभा क्षेत्रों में से दस में मतदान की जरूरत नहीं पड़ी थी। मुख्यमंत्री पेमा खांडू और उनके डिप्टी चोवा मीन सहित 10 सत्तारूढ़ उम्मीदवारों ने अपनी-अपनी सीट निर्विरोध जीत ली थी। यह एक संकेत है कि दो बार सत्ता में रहने के बावजूद अरुणाचल प्रदेश में भाजपा नेताओं की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है। दूसरी ओर, विपक्ष बहुत मामूली सीटों के साथ अपनी साख बचाने की कोशिश करता नजर आ रहा है।

वैसे अरुणाचल में भाजपा जितनी मजबूत है, उससे कहीं ज्यादा मजबूत सिक्किम में एसकेएम है। इस क्षेत्रीय दल ने विपक्ष का लगभग सफाया कर दिया है। सिक्किम में कांग्रेस या भाजपा के लिए कोई आधार नहीं बचा है, वहां विपक्षी दलों को अपनी यात्रा शून्य से शुरू करनी पड़ेगी। राज्य में सिक्किम क्रांतिकारी मोरचा की लोकप्रियता का अध्ययन होना चाहिए। आमतौर पर क्षेत्रीय दल एक चुनाव जीतने के बाद दूसरा चुनाव बुरी तरह हार जाते हैं, पर सिक्किम में सत्तारूढ़ पार्टी का और मजबूती के साथ उभरना दूसरी पार्टियों के लिए सीखने का मौका है। ठीक इसी तरह से अरुणाचल प्रदेश में भाजपा की जीत अध्ययन का विषय है। अरुणाचल प्रदेश के पेमा खांडू और सिक्किम के प्रेम सिंह तमांग की गिनती मजबूत क्षत्रपों में होनी चाहिए। ये छोटे-छोटे राज्यों के लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं, जिन्होंने जनता की सेवा से अपने लिए रास्ता तैयार किया है।

अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा जितनी मजबूती से उभरी है, उससे कहीं ज्यादा मजबूती सिक्किम में एसकेएम ने सत्ता में वापसी कर दिखाई है।

अब सवाल यह उठता है कि अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के विधानसभा नतीजों से क्या संकेत लिया जाए? पहला संकेत तो यही है कि भाजपा के प्रति उतनी नाराजगी नहीं है, जितनी विपक्षी दलों को लग रही थी। दूसरा संकेत यह है कि क्षेत्रीय स्तर पर जो मजबूत नेता हैं, उनको हिलाने में राष्ट्रीय पार्टियां अब बहुत सक्षम नहीं रहीं। क्षेत्रीय स्तर पर जो नेता अपना मोरचा सही ढंग से संभाल रहे हैं, उन्हें जीतने में ज्यादा परेशानी नहीं हो रही है। तीसरा संकेत, अगर कांग्रेस अपना खेमा मजबूत रख पाती, तो पूर्वोत्तर में इतनी कमजोर न होती। एक समय था, जब पेमा खांडू कांग्रेस में हुआ करते थे, उनके जैसे जमीनी आधार पर मजबूत नेता अगर पार्टी छोड़ जाएंगे, तो जाहिर है, पार्टी को फिर अपनी जमीन तैयार करने के लिए बहुत मशक्कत करनी पड़ेगी। चौथा संकेत, भाजपा के लिए अभी अनेक राज्य बड़ी चुनौती हैं। वह अरुणाचल प्रदेश में जीत गई है, पर सिक्किम विधानसभा में भी उसके पास सीटें होतीं, तो ज्यादा बेहतर होता। एक मजबूत राष्ट्रीय पार्टी की व्यापक क्षेत्रीय उपस्थिति अनिवार्य है। भाजपा हो या कांग्रेस देश की तमाम विधानसभाओं में उनकी मौजूदगी के गहरे निहितार्थ होंगे। बहरहाल, हमें लोकसभा चुनावों के नतीजों का इंतजार करना चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 02 जून, 1949

गवर्नरों की नामजदगी

आज से दो वर्ष पूर्व, विधान परिषद् के जुलाई सन् १९४७ के अधिवेशन में, जब सरदार पटेल ने प्रांतीय गवर्नरों की नियुक्ति के लिए निर्वाचन-प्रणाली का प्रस्ताव उपस्थित किया था, तो उसे परिषद् ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया था। विगत मंगलवार को परिषद् ने श्री ब्रजेश्वर प्रसाद के एक संशोधन को स्वीकार करते हुए अपने पूर्व निर्णय को उलट दिया और निश्चय किया कि गवर्नरों का निर्वाचन नहीं होगा, बल्कि भारत के राष्ट्रपति केन्द्रीय तथा प्रांतीय प्रधानमंत्रियों (तब सूबाई मुख्यमंत्रियों को भी प्रधानमंत्री कहा जाता था) के परामर्श से उनकी नामजदगी करेंगे।

यह पहला निर्णय नहीं है जिसे विधान परिषद् ने परिवर्तित करने की आवश्यकता समझी है। अभी इसी अधिवेशन की बात है कि उसने अल्पसंख्यक सलाहकार समिति की रिपोर्ट को स्वीकार कर धारासभाओं में अल्पसंख्यकों के लिए स्थान सुरक्षित करने के अपने पूर्व निर्णय को उलट दिया। त्रुटियों में संशोधन करने के लिए सदैव उद्यत रहना प्रगति और विकास का परिचायक होता है। अतः हमें यह कहने में लेशमात्र भी संकोच नहीं कि यदि विधान परिषद् के अब तक के निर्णयों में कहीं कोई त्रुटि रह गई है तो उसका निराकरण करना परिषद् के सदस्यों के लिए अपमानजनक नहीं, बल्कि उनकी विवेक-शक्ति का द्योतक है। जैसा कि नेहरू जी ने दोनों अवसरों पर कहा, दो वर्ष पहले और अब की स्थिति में महान अंतर पड़ गया है और इसी अन्तर के प्रकाश में विधान की कुछ धाराओं में परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। जब विधान का स्वरूप पहली बार तैयार किया गया था, तब ब्रिटिश और अमरीकी शासन-पद्धतियों का समन्वय कर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के सार्वजनिक निर्वाचन का प्रस्ताव स्वीकार किया गया था। किंतु बाद में निर्णय हुआ कि भारत का राष्ट्रपति अमरीकी राष्ट्रपति की भांति विविध अधिकार-विभूषित नहीं होगा और उसका निर्वाचन लोकसभा करेगी। स्वभावतः ऐसे ही परिवर्तन की आवश्यकता गवर्नरों की नियुक्ति के संबंध में भी थी और जैसा कि विधान परिषद् के विद्वान सदस्यों ने कहा है, अधिकार विहीन गवर्नरों का निर्वाचन करना न केवल जन शक्ति और धन का अपव्यय होता बल्कि उससे कुछ विषमताएं भी उत्पन्न हो सकती थीं।

कन्याकुमारी में साधना से नए संकल्प

यहां स्कैन करें

नरेंद्र मोदी | प्रधानमंत्री, भारत

25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं, निरंतर योगदान का समय है।

लोकतंत्र की जननी में लोकतंत्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव आज 1 जून को पूरा हो रहा है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद मैं दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं...काशी और अनेक सीटों पर मतदान चल रहा है। कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं... मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं।

वाकई, 2024 के चुनाव में कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। मां भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारतमाता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मेरे मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वह ज्वार, उनका आशीर्वाद ...उनकी आंखों में मेरे लिए विश्वास, दुलार...मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया। इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। कन्याकुमारी के उगते सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता का निरंतर एहसास कराया। ऐसा लग रहा था, जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

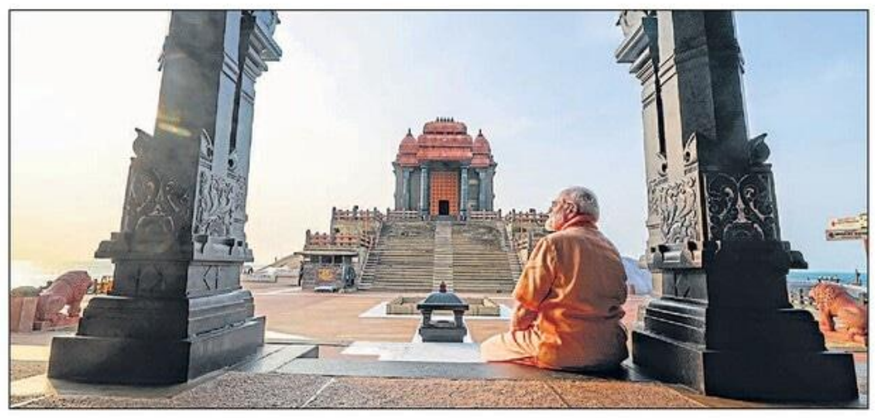

कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहां एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम! यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं।

भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया, उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदंडों पर नहीं तौला। इसीलिए, *इदं न मम* यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है। भारत के कल्याण से विश्व का कल्याण, भारत की प्रगति से विश्व की प्रगति, इसका एक बड़ा उदाहरण हमारी आजादी का आंदोलन भी है।

आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। 'प्रो-पीपल गुड गवर्नेंस' जैसे अभिनव प्रयोग की आज विश्व में चर्चा हो रही है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त करने, पारदर्शिता लाने, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं। भारत में सस्ता डाटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुंच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है।

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। ये सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं और उन सपनों को जीना शुरू करना है। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है, जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। भारत सुधार को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकते हैं। हमें जीवन के हर क्षेत्र में सुधार की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है। ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुए अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा। हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से बाहर निकालना है। हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है।

भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है, ज्यादा अनुभव किया है। जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवें दशक को अपनी आजादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं, निरंतर योगदान का समय है।

स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद 1947 में भारत आजाद हो गया। आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर यह कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें... मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

(यह लेख प्रधानमंत्री ने 1 जून की शाम कन्याकुमारी से दिल्ली लौटते हुए कलमबद्ध किया है)

एग्जिट पोल पर हमारे ऐतबार से जुड़े पुराने सवाल-जवाब

यहां स्कैन करें

हरजिंदर | वरिष्ठ पत्रकार

चाहे अखबारों में हो, पत्रिकाओं में या फिर टीवी चैनलों पर, एग्जिट पोल के नतीजों का प्रकाशन-प्रसारण एक चेतावनी या 'डिसक्लेमर' के साथ होता है- 'एग्जिट पोल मतदान बाद किए गए सर्वेक्षण पर आधारित हैं, ये चुनाव नतीजों का संकेत भर हो सकते हैं, ये असल चुनाव नतीजे नहीं हैं।' अगर एग्जिट पोल के नतीजे असल परिणाम होते, तो मतगणना जैसी दुःसाध्य कवायद के इंतजार की शायद जरूरत ही न रह जाती।

पिछले दो आम चुनावों या पिछले कुछ समय में हुए विधानसभा चुनावों को भी देखें, तो अक्सर एग्जिट पोल के नतीजे वास्तविक नतीजों के काफी करीब रहे हैं। लेकिन ऐसे उदाहरण भी कम नहीं हैं, जब ये वास्तविकता से काफी दूर थे। इसका एक बड़ा उदाहरण 2022 में हुआ पश्चिम बंगाल विधानसभा का चुनाव है। ज्यादातर राष्ट्रीय स्तर के खबरिया चैनलों ने वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनवा दी थी। बाद में जब नतीजे आए, तो वहां तृणमूल कांग्रेस ने आसानी से बहुमत हासिल कर लिया। एक और उदाहरण 2004 के आम चुनाव हैं। चुनाव की शुरुआत में माहौल प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के पक्ष में दिख रहा था, लेकिन बाद में माहौल बदल गया था और एग्जिट पोल इस बदलाव को पकड़ नहीं पाए।

जितने भी लोकतांत्रिक देश हैं, वहां एग्जिट पोल निर्वाचन परंपरा का जरूरी हिस्सा बन चुके हैं और सभी जगहों पर वे सही व गलत होते रहे हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि इस समय हमारे सामने 2024 के आम चुनाव के एग्जिट पोल के जो नतीजे हैं, हम उन सबको शक की नजर से देखने लगें। हमें यह मानकर चलना होगा कि एग्जिट पोल एक ऐसी वैज्ञानिक पद्धति है, जिसमें त्रुटियों की गुंजाइश काफी ज्यादा रहती है और इस बात को एग्जिट पोल व राजनीति के तमाम विशेषज्ञ भी स्वीकार करते हैं। दुनिया में जितने भी लोकतांत्रिक देश हैं, उन सभी में चुनाव-पूर्व सर्वेक्षण व एग्जिट पोल निर्वाचन परंपरा का जरूरी हिस्सा बन चुके हैं और तकरीबन सभी जगहों पर वे सही व गलत, दोनों ही होते रहे हैं। समस्या इसमें है भी नहीं, समस्या अक्सर इससे आगे आती है।

जीवन में हम अक्सर बहुत सी चुनौतियों की व्यवस्था को एक औपचारिकता मानकर उनसे आंखें मूंद लेते हैं। जैसे, यहां कूड़ा फैलाना मना है, वगैरह। अक्सर यही व्यवहार एग्जिट पोल के साथ दी जाने वाली सूचना के साथ भी किया जाता है। टीवी चैनलों पर एग्जिट पोल के बाद होने वाली बहसों को देखिए। वहां चर्चा इस पर चलने लगती है कि किसकी रणनीति गलत रही और किसकी सही? किसने किस मसले को गंभीरता से लिया और किसने असली मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया? ऐसी बातचीत लगातार चलती रहती है, यह जानते व मानते हुए भी कि सारा बहस-मुबाहिसा जिस धरातल पर किया जा रहा है, वह बहुत ठोस नहीं है।

एग्जिट पोल हमेशा से ऐसे नहीं थे। एक दौर था, जब यह कवायद कुछ बड़े अखबार ही किया करते थे। वे एग्जिट पोल शुरुआती चरणों में ही महत्वपूर्ण होते थे, क्योंकि आखिरी चरण के मतदान के साथ ही मतगणना भी शुरू हो जाती थी। इस बीच तीन चीजें हुई हैं। एक तो मतगणना आखिरी चरण के दो-तीन दिन बाद ही होती है। दूसरी, मीडिया को पाबंद कर दिया गया है कि वे आखिरी चरण का मतदान खत्म होने से पहले एग्जिट पोल के नतीजों का प्रसारण नहीं कर सकते। तीसरी चीज यह हुई कि 24 घंटे लाइव रहने वाले अनगिनत टीवी चैनल हमारे बीच आ चुके हैं और सबसे ज्यादा असर इसी का पड़ा है। जब आखिरी चरण का मतदान खत्म हो जाता है, तब यह समस्या खड़ी हो जाती है कि अब आगे दर्शकों को कैसे जोड़े रखा जाए? ठीक यहीं पर उनकी मदद के लिए आगे आता है एग्जिट पोल। इसके नतीजों का सिरा पकड़कर वे अगले दो-तीन दिन आसानी से बिता सकते हैं।

चुनाव को लेकर हम अक्सर कुछ धारणाएं बना लेते हैं और वही धारणाएं जमीनी सच लगने लगती हैं। जब ये धारणाएं एग्जिट पोल से मेल खाती नहीं दिखतीं, तो उनको स्वीकारना आसान नहीं होता।

मनोविज्ञान यह कहता है कि अक्सर जब हम पूरी शिद्दत से किसी चीज को देखना चाहते हैं, तो वही चीज हमें दिखाई भी देने लग जाती है, जबकि वह हकीकत में वैसी नहीं होती। मनोविज्ञान का यह नियम सिर्फ राजनीतिक विश्लेषकों और पत्रकारों पर लागू नहीं होता, उन पर भी लागू होता है, जो एग्जिट पोल का आयोजन करते हैं!

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

एकांत को वापस लाइए

आजकल पर्यावरण बहुत बड़ी समस्या बन गया है। न केवल बाहर का, बल्कि हमारे भीतर का भी पर्यावरण नष्ट हो गया है। इसी का असर बाहरी वातावरण पर हो रहा है। वेदों में झांकें, तो हमारे पूर्वज प्रकृति के साथ इतने घुले-मिले थे कि हर नैसर्गिक तत्व को उन्होंने देवता बना दिया था। पानी, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी, सब कुछ एक वरदान था। लोगों के मन में प्रकृति के प्रति श्रद्धा और विस्मय का भाव था। मगर टेक्नोलॉजी आई और सब गड़बड़ हो गया। अब हमें पर्यावरण के पीछे का विज्ञान समझ में आ गया, तो उसके प्रति आदर भी खो गया।

यह बात तो तय है कि आज का मनुष्य जिस तरह का धन-लोभी और हिंसक बन गया है, वह पर्यावरण का संरक्षण नहीं कर सकता। *अथर्ववेद* में बताया गया है कि पर्यावरण के संरक्षण के लिए कौन से गुण आवश्यक हैं : 'जो मनुष्य सत्य, मृदुता, संकल्प, तप, ज्ञान तथा त्याग के गुणों से युक्त है, वही पृथ्वी का संरक्षण कर सकता है।' लेकिन इस कसौटी पर आज कौन खरा उतर सकता है?

आधुनिक मनुष्य को संवेदनशील बनाने के लिए ओशो ने दो उपाय बताए हैं- एकांत का वरण और प्रकृति का सत्संग। क्या संबंध है दोनों का? आजकल लोग लगातार भीड़ में बने रहते हैं। अकेले बैठे हैं, तब भी मोबाइल के जरिये दुनिया से जुड़े हैं। इससे मस्तिष्क थक जाता है, ऊर्जा रिसने लगती है। एकांत को वापस लाइए। जब आप एकांत में होते हैं, यानी बिल्कुल अपने साथ रहते हैं, तब पता चलता है कि अंदर तो खजाना है। हमने कभी अपनी सुध ली ही नहीं। अकेले में मन अपने आप शांत होने लगेगा। आप रिलैक्स होंगे। ऐसा शांत और शिथिल मन ही प्रकृति से मित्रता कर पाएगा।

दूसरी बात, प्रकृति के पास जब जाना हो, तो अकेले जाएं, यार-दोस्तों के साथ पिकनिक न मनाएं। किसी फूल के पास ऐसे बैठें, जैसे प्रेमी या प्रेमिका के पास बैठे हैं, अगर आपके मन से सारे विचार चले जाएं और बाहर सिर्फ फूल रह जाए, तो थोड़ी देर में पाएंगे कि फूल जैसी कोई सुंदर चीज आपके भीतर भी खिल गई है। झील के किनारे घड़ी भर बैठे रह जाएं, तो थोड़ी देर बाद आपको पता चलेगा कि भीतर भी झील जैसी किसी शांत चीज ने जन्म ले लिया है।

जब आप एकांत में होते हैं, यानी बिल्कुल अपने साथ रहते हैं, तब पता चलता है कि अंदर तो खजाना है। हमने कभी अपनी सुध ली ही नहीं। अकेले में मन अपने आप शांत होने लगेगा।

हम जो लगातार देखते हैं, वैसे ही हो जाते हैं। अगर हम पूरे प्राणों से किसी चीज के साथ आत्मीय हो जाएं, तो हमारे भीतर भी वैसी ही घटना घटनी शुरू हो जाती है। जब प्रकृति के साथ आत्मीय होंगे, तो ही उससे प्रेम कर पाएंगे, उसका सम्मान करेंगे। तब प्रकृति को नष्ट करने से पहले आपके प्राण कांप जाएंगे।

अमृत साधना

निर्मला सीतारमण | वित्त मंत्री, भारत सरकार

भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपना नजरिया संशोधित करते हुए विख्यात रेटिंग एजेंसी 'स्टैंडर्ड ऐंड पूअर्स ग्लोबल' ने इसे 'स्थिर' से 'सकारात्मक' की श्रेणी में रखा है। यह एक स्वागत योग्य बात है। यह भारत के ठोस आर्थिक विकास को दिखाता है।

गांधी किसी फिल्म के मोहताज नहीं

पिछले कुछ वर्षों में इस देश में फिल्म को इतिहास समझने वाली एक खास पीढ़ी पैदा हो चुकी है। उसको लगता है कि जो फिल्म में दिख रहा है, वही असल में देश का इतिहास है। इन दिनों एक बार फिर फिल्म के नाम पर गांधीजी की चर्चा जोरों पर है। कहा गया है कि महात्मा गांधी को *गांधी* फिल्म आने के बाद लोग जान सके। मगर सच यही है कि सन् 1982 में आई इस फिल्म से दशकों पहले दांडी मार्च का आयोजन करके गांधी पूरी दुनिया में एक बड़े राजनीतिक स्टार बन चुके थे। यहां तक कि लंदन में जब चार्ली चैपलिन उनसे मिलने आए, तो लोग चैपलिन की जगह गांधी को देखने टूट पड़े। अमेरिकी अखबारों के शीर्ष पत्रकार उनकी राजनीति को समझने में हफ्तों लगाते थे! गांधी *टाइम* पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर भी दिखाई दिए थे। तो, यह थी दुनिया में गांधी की लोकप्रियता।

दरअसल, इन दिनों गांधी को कमतर आंकने की एक सुनियोजित साजिश चल रही है। जिस इंसान ने अपने जीवन के बेशकीमती 40 साल इस देश की आजादी की लड़ाई में झोंक दिए, जिसने महज अपनी लाठी के बल पर हिन्दुस्तान को आजाद करा दिया, जिसकी वेशभूषा महज एक धोती रही, उसका इस तरह अपमान गले नहीं उतरता। कहा गया कि मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला को लोग गांधी से ज्यादा जानते हैं, जबकि ये दोनों तो गांधी को ही अपना आदर्श मानते थे। इसी तरह, महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन भी महात्मा गांधी से काफी ज्यादा प्रभावित थे। कहना यह भी गलत नहीं होगा कि रवींद्रनाथ टैगोर का वह महात्मा, जो अपने आखिरी दिनों में इस दुनिया में हिंसा से निराश था, मौत के बाद पूरी दुनिया का महात्मा बन गया। जब अपने यहां लोग आजादी और नई सत्ता का स्वागत कर रहे थे, तब महात्मा गांधी ने खुद को अकेला कर लिया और नोआखाली से दिल्ली तक भाग-भागकर उन्होंने मनुष्यता को बचाने का काम किया। लिहाजा, यह विडंबना ही है कि जिस देश की आजादी गांधीजी ने अंग्रेजों से लड़कर जीती, उसी देश के लोग राजनीतिक चेतना के स्तर पर इतने विपन्न हो चुके हैं कि वे कभी गांधी की प्रतिमा की लाठी तोड़ देते हैं, कभी चश्मा, तो कभी प्रतिमा ही खंडित कर देते हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि गांधी किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, बल्कि यह एक चेतना का नाम है। वह हमारे देश के महात्मा हैं, हमारे राष्ट्रपिता हैं और हम उनसे हर दिन कुछ न कुछ नया सीख सकते हैं। इसलिए गांधीजी को महज फिल्मों तक सीमित करना गलत होगा। गांधी पूरी दुनिया के थे, हैं और रहेंगे।

जयप्रकाश नवीन, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

महात्मा गांधी

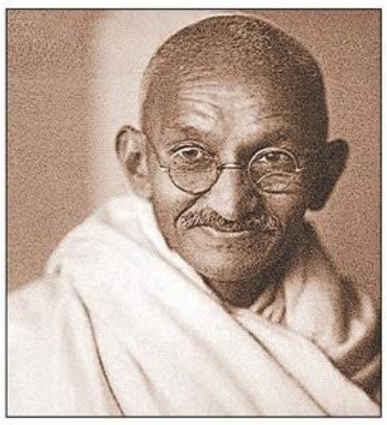

एक वक्तव्य से इतना आहत क्या होना

जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की आवाज उठा रहे थे, उस समय वह दरभंगा राज के शासक महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के नियमित संपर्क में थे। गांधीजी और महाराज का नियमित पत्राचार हुआ करता था और महाराज उन्हें प्रचुर आर्थिक सहायता भी पहुंचा रहे थे। दरभंगा महाराज भारत के पहले ऐसे राजनेता थे, जिन्होंने ब्रिटिश सरकार को सार्वजनिक पत्र लिखकर दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ हो रहे रंगभेद का विरोध किया था। क्या कभी कांग्रेस व कांग्रेसी इतिहासकारों ने इस तथ्य से आपको परिचित कराया? हमारे पाठ्यक्रमों में इस महत्वपूर्ण पक्ष को क्यों शामिल नहीं किया गया?

महात्मा गांधी को नहीं जानना या उनके बारे में पूरी जानकारी न होना अपराध नहीं है। गांधी के दर्शन से सहमति-असहमति हमारा निजी विचार है और यदि कोई उनके विचारों से सहमत नहीं है, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वह व्यक्ति समाजद्रोही है। कोई भी विचारधारा शत-प्रतिशत समावेशी नहीं हो सकती और कोई भी व्यक्ति संपूर्णता में दोषों से मुक्त नहीं हो सकता, तो फिर महात्मा गांधी कैसे अपवाद हो गए? महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता मानना ही पड़ेगा, यह क्या तुगलकशाही है! जो लोग भारत को माता का दर्जा देते हैं और देवी स्वरूप उसकी पूजा करते हैं, वे आपसे सवाल तो पूछेंगे कि भला कोई व्यक्ति भारतमाता का पिता हो सकता है क्या? मगर आप जवाब देने के बजाय सवाल पूछने वाले व्यक्ति को गोडसेवादी कहना शुरू कर देते हैं।

जिस भारत का अध्यात्म और जीवन-दर्शन हमें देवताओं और अवतारों की भी आलोचना का अधिकार देता है, वहां आप महात्मा गांधी के मूल्यांकन पर रोक लगा देते हैं। आप भगवान राम का मूल्यांकन कर सकते हैं, उन पर आरोप लगा सकते हैं, लेकिन महात्मा गांधी को आलोचना से परे मानते हैं। असल में, गांधीजी आपके 'पॉलिटिकल बुलेटप्रूफ' हैं, जिनका इस्तेमाल आप सिर्फ अपने बचाव के लिए करते हैं। गांधीजी तो कांग्रेस का विघटन कर देना चाहते थे। आप तो गांधीवादी हैं, तो कर दीजिए कांग्रेस का विघटन। देखा जाए, तो अकेले महात्मा गांधी ही इस देश के विचार और समाज सुधारक नहीं थे। मगर ब्रांड महात्मा को स्थापित करने के लिए दूसरी पुण्यात्माओं को इतिहास से बाहर नहीं आने दिया गया या फिर उनके बारे में झूठी बातें फैलाई गईं। उदाहरणस्वरूप, आपने सावरकर के साथ क्या किया? बेशक, गांधीजी में कई गुण थे, जो उन्हें भारतीय इतिहास का अद्भुत पुरुष बनाता है, लेकिन उन पर सवाल भी कम नहीं थे। सो, प्रधानमंत्री के एक वक्तव्य पर इतना आहत मत होइए।

विजय देव झा, टिप्पणीकार

https://t.me/AllNewsPaperPaid

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 3 जून, 2024

दैनिक जागरण

कुसंग के परिणाम जीवनपर्यंत भुगतने पड़ते हैं

विपक्ष का विचित्र रवैया

इससे विचित्र और हास्यास्पद और कुछ नहीं कि कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दल एक ओर जोर-शोर से यह दावा करने में लगे हैं कि उनके गठबंधन को लोकसभा चुनाव में 295 सीटें मिल रही हैं और दूसरी ओर उनके नेता मतगणना में गड़बड़ी की निराधार आशंकाएं जताकर भ्रम फैलाने में लगे हैं। भ्रम फैलाने की इसी कोशिश के तहत कांग्रेस के नेता जयराम रमेश ने यह अनर्गल दावा कर दिया कि मतगणना को प्रभावित करने के लिए गृह मंत्री अमित शाह ने देश के 150 जिलों के जिलाधिकारियों को फोन किया है। उन्होंने यह बेतुका आरोप लगाते हुए यह समझा होगा कि इससे उन्हें एक फर्जी नैरेटिव खड़ा करने में मदद मिलेगी, लेकिन चुनाव आयोग ने उन्हें यह नोटिस जारी कर उनका खेल खराब कर दिया कि अपने आरोपों के बारे में प्रमाण प्रस्तुत करें। स्पष्ट है कि वह ऐसा करने से रहे। चुनाव आयोग को ऐसे अनर्गल आरोपों के खिलाफ और अधिक सख्त रवैया अपनाना चाहिए, क्योंकि विपक्षी नेता उसे बदनाम करने का सुनियोजित अभियान छेड़े हुए हैं। इसी के तहत मतदान प्रतिशत के अंतरिम और अंतिम आंकड़ों को लेकर व्यर्थ की चीख-पुकार मचाई गई। इसके बाद यह हल्ला मचाया जाने लगा कि मतगणना के तौर-तरीकों में बदलाव किया जा रहा है। यह भी अफवाह फैलाई गई कि प्रत्याशियों के एजेंटों को मतगणना स्थल के करीब नहीं फटकने दिया जाएगा। जब इससे बात नहीं बनी तो यह कहा जाने लगा कि चुनाव आयोग ने पुरानी परंपरा का परित्याग करते हुए डाक मतपत्रों को बाद में गिनने का फैसला किया है। इसे तूल देने के लिए विपक्षी नेता चुनाव आयोग के दरवाजे तक भी पहुंच गए, लेकिन यह आरोप भी हवा-हवाई ही साबित हुआ, क्योंकि आयोग ने यह स्पष्ट किया कि पोस्टल बैलेट की गणना पहले की तरह होगी।

विपक्षी नेताओं की इन हरकतों से यदि कुछ स्पष्ट है तो यही कि वे अपनी संभावित हार का ठीकरा चुनाव आयोग, मीडिया आदि पर फोड़ने की पूरी तैयारी कर चुके हैं। यही कारण है कि उन्होंने एक्जिट पोल के नतीजों को न केवल अस्वीकार कर दिया, बल्कि उन्हें भाजपा प्रायोजित भी करार दिया। एक्जिट पोल को लेकर कांग्रेस इतनी दुविधाग्रस्त थी कि पहले उसने टीवी चैनलों पर होने वाली चर्चा का बहिष्कार करने का फैसला किया और फिर फजीहत होती देखकर उसमें शामिल होने का निर्णय लिया। यह वही कांग्रेस है जिसने कुछ माह पहले तेलंगाना के एक्जिट पोल नतीजों को खुशी-खुशी स्वीकार किया था और यह उम्मीद जताई थी कि नतीजे उन्हीं के अनुरूप रहेंगे। इस बार विपक्षी दलों को न तो एक्जिट पोल पर भरोसा है और न चुनाव आयोग पर। हैरानी नहीं कि नतीजे आते ही वे जनता पर भी भरोसा करना छोड़ दें। यदि कांग्रेस का यही रवैया रहा तो उसके दुर्दिन खत्म होने में और भी अधिक समय लगेगा।

बिजली संकट

आमजन की रातों की नींद और दिन का चैन यदि बिजली के कारण छिन जा रहा हो तो फिर यह चिंता और चिंतन स्वाभाविक है कि इसका वास्तविक जिम्मेदार कौन है? उत्तर प्रदेश में बिजली विभाग अब उन लोगों के विरुद्ध अभियान चलाने जा रहा है जो कटिया डालकर बिजली चोरी कर रहे हैं। यह भी बता रहा है कि ट्रांसफार्मर इसलिए फुंक रहे हैं, क्योंकि लोग कटिया लगाकर उसकी क्षमता से अधिक लोड डाल रहे। कुल मिलाकर यह तस्वीर उभारने की कोशिश है कि वर्तमान में लोग जिस संकट का सामना कर रहे हैं, उसके लिए आमजन के बीच का ही एक वर्ग जिम्मेदार है। ठीक है, ऐसा है भी, लेकिन प्रश्न पैदा होता है कि यह सबकुछ क्या पहली बार और अचानक हो रहा है? साल भर विभाग क्या करता रहा? अब विभाग ऐसे लोगों की धरपकड़ करता भी है तो उन बिजली उपभोक्ताओं का संकट क्या एक झटके में दूर हो जाएगा जो पूरी निष्ठा के साथ विद्युत शुल्क का भुगतान करते हैं? साफ बात है कि बिजली विभाग ने उन उपभोक्ताओं के साथ छल किया है जो एक जिम्मेदार नागरिक की तरह समय से शुल्क जमा करते हैं और यह आशा करते हैं कि उसके बदले उन्हें उचित सेवा मिलेगी। बिजली चोरी (लाइन लास) रोकने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए, लेकिन उसके लिए कोई समय-सीमा नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह सतत प्रक्रिया का हिस्सा बनना चाहिए। देखने में आया है कि आधारभूत संरचना के संबंध में विभागीय आकलन की ही अनदेखी की जाती है। जब समस्या प्रचंड होती है तो उसी का रोना रोया जाता है। फिलहाल तो वही उपाय किये जा सकते हैं, जो क्षमता में हैं, लेकिन इससे विभाग और विभाग के जिम्मेदार प्रतिनिधियों को भविष्य के लिए सबक लेना चाहिए।

> बिजली विभाग ने उन उपभोक्ताओं के साथ छल किया है जो एक जिम्मेदार नागरिक की तरह समय से शुल्क जमा करते हैं

साधना से निकले नए संकल्प

नरेन्द्र मोदी

अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं

कन्याकुमारी स्थित विवेकानंद राक मेमोरियल में साधनारत प्रधानमंत्री मोदी। प्रेट्र

अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। मां भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे।.. मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था। कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद-विवाद, वार-पलटवार... आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से अलिप्त हो गया। इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था। मैं ईश्वर का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिए। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया। ऐसा लग रहा था, जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानाडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था।

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अंतर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान है। यह वह शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था। यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। संत तिरुवल्लुवर की रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदंडों पर नहीं तौला। इसीलिए, 'इदं न मम' यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है।

अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है। जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला। आज भारत का गवर्नेंस माडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। गरीब के सशक्तीकरण से लेकर समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है। बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे माडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। यह पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकी संघ जी-20 समूह का हिस्सा बना। नए भारत का यह स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे।

हमें नए स्वप्न देखने हैं। हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा और इसके लिए यह जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका संपूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत की सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है, जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में रिफार्म की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे रिफार्म 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए। यह भी समझना होगा कि रिफार्म कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने रिफार्म, परफार्म और ट्रांसफार्म का विजन सामने रखा। रिफार्म का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी परफार्म करती है और फिर जब जनता इससे जुड़ जाती है, तो हम ट्रांसफार्मेशन होते हुए देखते हैं।

भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्यूफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा। हमें हर पल इस पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुए अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा। हमें एक राष्ट्र के रूप में पुराने पड़ चुके सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से बाहर निकालना है। हमें याद रखना है कि नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद 1947 में भारत आजाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही एक स्वर्णिम अवसर है। इस अवसर पर हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र की प्रगति एवं उत्थान के लिए पूर्ण रूप से समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर यह कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित राष्ट्र बनाएं।

response@jagran.com

भारी पड़ती जल निधियों की अनदेखी

पंकज चतुर्वेदी

यदि हम नदियों-तालाबों को पानी की अमूल्य निधियां मान लें तो कभी किसी का कंठ सूखा नहीं रहेगा

जल संकट से जूझती देश की राजधानी। प्रेट्र

यह कैसी विडंबना है कि जिस शहर के बीच से सदानीरा यमुना जैसी नदी तकरीबन 27 किमी के दायरे में बहती हो, वह हर साल गर्मियों में पानी की किल्लत के लिए कुख्यात हो जाता है। दिल्ली सरकार अपने जल-पिटारे की परवाह साल भर करती नहीं और जब पानी के लिए लोग परेशान होते हैं तो हरियाणा पर आरोप लगाकर सुप्रीम कोर्ट का रुख करती है। जब दिल्ली में यमुना लबालब होती है, तो यहां के नाले-कारखाने उसमें जहर घोलते हैं और जब पानी का संकट खड़ा होता है तो नदी की याद आती है। यह हाल देश के लगभग सभी बड़े शहरों का हो चला है। अपने तालाबों पर मिट्टी डालकर कंक्रीट से तन गया बेंगलुरु तो केपटाउन की तरह जल-शून्य की चेतावनी से बेहाल है। मुंबई की पांच नदियां नाला बन गईं और बरसात में जो पानी शहर की प्यास बुझाता, अब वह संकरे रास्तों से बहकर समुद्र के खारे पानी में मिल जाता है और जरूरत के समय लोग भूजल और टैंकर के जरिये जैसे-तैसे जिंदगी काटते हैं। चाहे हैदराबाद हो या चेन्नई या फिर पटना या श्रीनगर, नक्शे पर वहां नदी-तालाब-नहर का जाल है। दुर्भाग्य है कि जब इंद्र देवता अपना आशीष बरसाते हैं तो इन जल भंडारों को अधिक से अधिक जल से भरने के बजाय समाज उनमें मिट्टी भरकर जमीन का लोभ करता है। जब तक यह सिलसिला इसी प्रकार से चलता रहेगा तब तक पानी की कहानी में कोई सुधार नजर नहीं आएगा।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भले ही लोग इससे खुश हों कि उनके पास पानी का बिल आता नहीं, लेकिन सच यह है कि दिल्ली की कोई 31 प्रतिशत आबादी को नल से स्वच्छ पेयजल नहीं मिलता। हजारों टैंकर हर दिन कालोनियों में जाते हैं। उनके लिए पानी जुटाने के लिए पाताल को इतनी गहराई तक खोद दिया गया है कि सरकारी भाषा में कई जगह अब यह 'डार्क जोन' बन गया है। दिल्ली के करीब गाजियाबाद में, जो यमुना-हिंडन के त्रिभुज पर है, तमाम कालोनियां पानी के लिए तरसती हैं, क्योंकि दोनों नदियां अब कूड़ा ढोने का जरिया बन गई हैं। गुरुग्राम में भी जरूरत की तुलना में 105 एमएलडी कम पानी की आपूर्ति हो रही है। दिल्ली में 983 तालाब-झील-जोहड़ हैं। जल संसाधन मंत्रालय की गणना बताती है कि इनमें से किसी को भी प्यास बुझाने के काबिल नहीं माना जाता। दिल्ली गंगा और भाखड़ा से सैकड़ों किमी दूर से पानी मंगवाती है, लेकिन अपने ही तालाबों को इस लायक नहीं रखती कि वे बरसात का पानी जमा कर सकें। तीन चौथाई जल निधियों का इस्तेमाल तो महज सीवर की गंदगी बहाने में ही होता है।

बेंगलुरु की तरह हैदराबाद और चेन्नई में भी जैसे ही विदेशी कंपनियां आना शुरू हुईं और आबादी बढ़ने के साथ मकान की जरूरत बढ़ी, तालाब-नदियों को ही समेटा गया और जल संकट को खुद आमंत्रित कर लिया गया। ऐसे उदाहरण देश के हर कोने में हैं। बीते एक दशक में सरकार ने हर घर नल, अमृत सरोवर और अटल भूजल जैसी महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू कीं, लेकिन इन सभी में न जन भागीदारी रही और न ही आम लोगों में जिम्मेदारी का भाव। वास्तव में प्रकृतिजन्य जितनी भी समस्याएं हैं, उनके निदान के लिए हमें अतीत में ही झांकना होगा। एक ताजा रिपोर्ट चेता चुकी है कि अगले कुछ वर्षों में देश के 30 शहर जलहीन सीमा तक सूख जाएंगे। इनमें इंदौर, बठिंडा और कोयंबटूर जैसे शहर भी हैं। यह कड़वा सच है कि जलवायु परिवर्तन का बुरा असर पड़ रहा है, लेकिन इसके साथ ही गांवों से शहरों की तरफ तेज पलायन, अनियोजित शहरीकरण, कम बरसात, अधिक गर्मी और उथले जलस्रोतों में अधिक वाष्पीकरण और साथ ही जल के बदतर प्रबंधन के कारण जल संकट प्रकृति से अधिक इंसान को ज्यादा कठघरे में खड़ा करता है। यह सवाल लगभग हर तीसरे साल खड़ा होता है कि 'औसत से कम पानी बरसा तो क्या होगा? देश के 13 राज्यों के 135 जिलों की कोई दो करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि प्रत्येक दस साल में चार बार पानी के लिए त्राहि-त्राहि करती है। इसे लगभग नजरअंदाज किया जाता है कि यदि सामान्य से कुछ कम बारिश हो, पर जल प्रबंधन ठीक हो तो उसके असर को गौण किया जा सकता है।

भारत में दुनिया की कुल जमीन का 2.45 प्रतिशत क्षेत्रफल है। जबकि दुनिया के कुल जल संसाधनों में से चार प्रतिशत ही हमारे पास हैं और जनसंख्या की भागीदारी 16 प्रतिशत है। हमें हर साल बारिश से कुल 4000 घन मीटर पानी प्राप्त होता है, जबकि उपयोग लायक भूजल 1869 घन मीटर है। इसमें से महज 1122 घन मीटर पानी ही काम आता है। देश के उत्तरी हिस्से में नदियों में पानी का अस्सी प्रतिशत जून से सितंबर के बीच रहता है। दक्षिणी राज्यों में यह आंकड़ा 90 प्रतिशत का है। शेष आठ महीनों में पानी का जुगाड़ न तो बारिश से होता है और न ही नदियों से। भारत में औसतन 110 सेंटीमीटर बारिश होती है, जो अधिकांश देशों से ज्यादा है। यह बात और है कि हम बरसने वाले कुल पानी का महज 15 प्रतिशत ही संचित कर पाते हैं। शेष पानी नालियों, नदियों से होते हुए समुद्र में जाकर मिल जाता है और बेकार हो जाता है। प्रकृति जीवनदायी संपदा यानी पानी हमें एक चक्र के रूप में प्रदान करती है और इस चक्र को गतिमान रखना हमारी जिम्मेदारी है। प्रकृति के खजाने से हम जितना पानी लेते हैं, उसे वापस भी हमें ही लौटाना होता है। जल संकट का निदान पुराने तालाबों, कुओं और बावड़ियों, नदियों को उनके मूल स्वरूप में लौटाने में ही छिपा है। भूजल लंबे समय तक ठोस विकल्प नहीं हैं। यदि हम नदी-तालाब को पानी की अमूल्य निधियां मान लें तो कभी किसी का कंठ सूखा नहीं रहेगा।

(लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं)

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ऊर्जा

स्वयं से प्रेम करें

स्वयं से प्रेम करना सुखी जीवन का आधार है। स्वयं से प्रेम का अर्थ है स्वयं को निखारना, अपनी अच्छाइयों को खोजना, अपने लिए सम्मान प्राप्त करना, सोच सदैव सकारात्मक रखना और अपने आप को प्रेरित करते रहना और अपने साथ हुई हर अच्छी-बुरी घटना की जिम्मेदारी खुद पर लेना। स्वयं से प्रेम की भावना सफलता का एक ऐसा कारक है जिसे हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। आस्कर वाइल्ड ने कहा है कि अपने दिल में प्यार रखिए, क्योंकि इसके बिना जीवन ऐसा है, जैसे बिना सूरज की रोशनी के मुरझाया हुआ पौधा।

आप दूसरों को प्रेम और सम्मान तभी बांट पाएंगे जब आप के पास वह पर्याप्त मात्रा में होगा। स्वयं से प्रेम करना बहुत सहज एवं स्वाभाविक है। जब आप अपने आप से पूरी तरह से प्रेम करना सीख जाते हैं, तो आप फलने-फूलने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाते हैं। स्वयं से प्रेम के अभाव में हम अपने लक्ष्यों और सपनों और खुश एवं स्वस्थ रहने की युक्ति को भूल जाते हैं। चार्ल्स बुकोव्स्की ने कहा है, 'यदि आपमें प्यार करने की क्षमता है, तो पहले खुद से प्यार करें।'

कुछ लोग स्वयं से प्रेम करने को अनुचित समझते हैं। लोगों के दिल में यह धारणा बस गई है कि जो व्यक्ति स्वयं से प्रेम करता है वह स्वार्थी होता है और वह दूसरों से प्रेम कर ही नहीं सकता। वास्तव में यह एक मिथक प्रतीत होता है। अपने आप से प्रेम करना गलत हो ही नहीं सकता, क्योंकि जो व्यक्ति अपने आप से प्रेम नहीं करता वह किसी अन्य के लिए ऐसी भावना को कैसे विस्तार दे सकता है। जो अपने आप से संतुष्ट नहीं वह किसी और को संतुष्ट कैसे रख सकता है। ब्यू टापलिन ने कहा है, 'आत्म-प्रेम एक महासागर है और आपका दिल एक बर्तन है। इसे पूर्ण बनाएं और उसमें से कुछ मात्रा उन लोगों के जीवन में स्वतः फैल जाएगी, जिन्हें आप प्रिय मानते हैं, लेकिन इसकी पहल आपको करनी होगी।' इसलिए स्वयं से प्रेम का भाव विकसित करने के दिशा में कदम बढ़ाइए।

नृपेंद्र अभिषेक नृप

डिमेंशिया से बुजुर्गों का बचाव

राजेंद्र शर्मा

देश में जैसे जैसे बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है, डिमेंशिया की बीमारी का खतरा भी बढ़ रहा है। डिमेंशिया के लिए बड़ा कारण आज की हमारी सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक परिवेश बनता जा रहा है। जहां एक तरफ एकल परिवार, अपने में खोये रहना और दिन प्रतिदिन की भागम भाग है, वहीं दूसरी ओर पढ़ने-पढ़ाने की आदत कम होना एक प्रमुख कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अगले 25 वर्षों में डिमेंशिया के रोगियों की संख्या में तीन गुना बढ़ोतरी हो जाएगी। डिमेंशिया में मनोभ्रम की स्थिति हो जाती है और भूलने या निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है। इसमें बुजुर्ग धीरे-धीरे अपनी याददाश्त खोने लगते हैं। भारत के संदर्भ में यह इसलिए भी गंभीर हो जाती है, क्योंकि यहां भी आने वाले वर्षों में बुजुर्गों की संख्या अधिक हो जाएगी।

दरअसल पहले लोगों में लिखने-पढ़ने की आदत होती थी। किस्सागोई की परंपरा थी तो गांवों-शहरों में चौपालें होती थीं। बड़े बुजुर्ग वहां बैठकर गांव-मोहल्ले में घटने वाली घटनाओं पर नजर रखते थे, वहीं आपसी चर्चा, ताश, शतरंज आदि खेल या इसी तरह की गतिविधियां चलती रहती थीं। इसके अपने फायदे भी थे। इस चौपाल से जहां मोहल्ले की सुरक्षा चाक-चौबंद रहती थी, वहीं असामाजिक गतिविधियों पर अंकुश भी लगता था। आपसी दुख दर्द साझा करने से मन का बोझ भी कम हो जाता था। परंतु आज हालात इसके ठीक विपरीत होते जा रहे हैं। चौपालों की परंपरा लगभग खत्म हो गई है। अब तो सब अपने ड्राइंग रूप में स्मार्टफोन पर व्यस्त रहते हैं और एक दूसरे से बात करने, सुनने व सुनाने का तो समय ही नहीं रह गया है। इसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगे हैं। संवेदनहीनता, एकाकीपन, स्वार्थता, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा जैसी समस्याएं सामने आने लगी हैं।

एक अध्ययन में सामने आया है कि लिखने-पढ़ने की आदत से बुजुर्गों को डिमेंशिया की बीमारी से काफी हद से बचाया जा सकता है। जितना अधिक बुजुर्गों की इन गतिविधियों में व्यस्तता होगी, उतनी अधिक संभावनाएं इसके खतरे को कम करने की होगी। स्वजनों के साथ नियमित संवाद कायम रखने या हंसने-बोलने से भी इसका खतरा कम होता जाता है। इस खतरे को देखते हुए सामाजिक संगठनों आदि को भी सक्रिय होना होगा, क्योंकि आने वाले समय में यह समस्या और बढ़ेगी। ऐसे में मनोविश्लेषकों, चिकित्सकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को गंभीरता से प्रयास करने होंगे। एकल परिवार, नौकरी के कारण एक दूसरे से दूरी, प्रतिस्पर्धा के चलते अलग तरह की कुंठा और मानसिक परेशानी सबको परेशान करने लगी है। समय रहते इसका समाधान तलाशना होगा।

> आगामी दशक में भारत में बुजुर्गों की संख्या बढ़ने वाली है, लिहाजा डिमेंशिया की समस्या से बचाव आवश्यक है

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

मेलबाक्स

हादसों पर लगाम लगाना आवश्यक

'लापरवाही की भेंट चढ़ती जिंदगियां' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने एक गंभीर समस्या पर समग्रता में प्रकाश डालते हुए उसका संभावित समाधान भी प्रस्तुत किया है। यह कोई नई बात नहीं है कि आए दिन ऐसे मामले सामने आते रहते हैं फिर चाहे वह हादसे होर्डिंग की लापरवाही से हों या आग की लापरवाही से। प्रश्न हमेशा यही रहा कि आखिर जिम्मेदार है कौन, इतने उपायों के बावजूद यह घातक अनदेखी हो कैसे जाती है? यह सवाल सही है कि सुरक्षा के उपाय यदि लागू हैं तो वे कितने और किस हद तक सफल हैं? नियम और सुरक्षा के कानून तो लागू हैं, परंतु उन्हें सही से अमल में नहीं लाया जाता। ऐसे में शासन-प्रशासन के स्तर पर यह सुनिश्चित होना चाहिए कि मानवीय लापरवाही से होने वाले हादसे किसी भी सूरत में न हों। सरकार और न्यायपालिका को नए प्रविधान या दंड निश्चित करने चाहिए, जिससे शासन के प्रत्येक स्तर पर सतर्कता और ईमानदारी का भाव बढ़े। ऐसे समुचित प्रयास ही हादसों पर लगाम लगा पाने में सक्षम होंगे। एक सजग नागरिक होने के नाते हमारी भी जिम्मेदारी है कि हम शासन-प्रशासन को जवाबदेह बनाएं।

नैंसी सिंह, आगरा

चुनावी प्रक्रिया के सबक

संपादकीय लेख 'चुनाव प्रक्रिया के सबक' अत्यंत सटीक है। एक जून को लंबी चुनावी प्रक्रिया संपन्न हो गई। साथ ही एक्जिट पोल के नतीजे भी आ गए। सभी टीवी चैनल इस बात पर एकमत हैं कि एनडीए साढ़े तीन सौ से चार सौ के बीच सीटें लाकर नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार सत्ता की कमान दे रहा है। भाजपा अकेले भी 2019 की अपनी 303 सीटों में बढ़ोतरी कर रही है। लेकिन कांग्रेस और आइएनडीआइए के कई नेताओं ने एक्जिट पोल पर भी मोदी अंधविरोध नहीं छोड़ा। कांग्रेस के बड़े नेता जयराम रमेश ने कहा है कि एक्जिट पोल मोदी ने तैयार करवाए हैं। ऐसे ही अंधविरोध ने कांग्रेस को रसातल में ला दिया है। इस तर्क से तो प्रतीत हो रहा है यदि चार जून को मोदी बड़ी बहुमत से जीत गए तो हार का ठीकरा चुनाव आयोग और ईवीएम पर फोड़ा जाएगा। इस चुनाव में कुछ नए तथ्य सामने आए हैं। प्रमुख हैं, नरेन्द्र मोदी का करिश्मा न केवल कायम है, अपितु बढ़ रहा है और पूरे देश में फैल गया है। हिंसा अपेक्षाकृत कम हुई, लेकिन बंगाल ने हर चुनाव, हर दौर में हिंसा का रिकार्ड कायम रखा। यह सात चरण में और भारी केंद्रीय बलों की तैनाती के बावजूद हुआ। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि बंगाल में राज्य प्रायोजित हिंसा पिछले दशक से कायम है। लगता है कि इस बार बंगाल की जनता ममता बनर्जी को सबक सिखा रही है। एक बहुत ही दुखद पहलू है।

सीपी बंसल, दिल्ली

बढ़ते तापमान से बदहाल धरती

इन दिनों धरती का तापमान आसमान को छू रहा है। गांवों से कहीं ज्यादा शहर के लोग परेशान हैं। कई जिलों और राज्यों में तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। उत्तर भारत में पारा मौत की वजह बनने लगा है, बड़ी संख्या में लोग लू के चलते बीमार हैं। मौसम विभाग के अनुसार अनुमान यही है कि आने वाले कुछ दिनों तक गर्मी का भयावह प्रकोप ऐसे ही जारी रहने वाला है। गर्मी, धूप और लू से बचने के लिए लोगों को स्वयं भी सचेत रहना होगा। हमें यह समझना होगा कि प्रकृति को सम्मान देकर ही हम इससे बच पाएंगे। जब हम प्रकृति का सम्मान नहीं करते हैं तो वह परोक्ष रूप से तो हमें हानि पहुंचाती ही है, हमारे सामने कई समस्याएं खड़ी करती है। आज प्रकृति को बचाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, लेकिन प्रकृति के जख्म बढ़ते जा रहे हैं। ये कार्यक्रम केवल कुछ लोगों की जेब भर रहे हैं। इनके जरिये औपचारिकताएं निभाई जा रही हैं। इस दौर में हमें प्रकृति का महत्व समझना होगा। इसलिए जरूरी है कि हम सतर्क रहें, सादा जीवन जिएं और इस हेतु दूसरों को भी प्रेरित करें। अधिकाधिक पौधरोपण करें, प्लास्टिक का प्रयोग बंद करें। प्रकृति का महत्व को समझकर ही हम इस पृथ्वी की रक्षा कर सकते हैं।

मनीष सुमन, फुलकाहा, अररिया, बिहार।

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

संपादकीय जागरण

सोमवार, 3 जून, 2024 : ज्येष्ठ कृष्ण 12 वि. 2081

कुसंग के परिणाम जीवनपर्यंत भुगतने पड़ते हैं

विपक्ष का विचित्र रवैया

इससे विचित्र और हास्यास्पद और कुछ नहीं कि कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दल एक ओर जोर-शोर से यह दावा करने में लगे हैं कि उनके गठबंधन को लोकसभा चुनाव में 295 सीटें मिल रही हैं और दूसरी ओर उनके नेता मतगणना में गड़बड़ी की निराधार आशंकाएं जताकर भ्रम फैलाने में लगे हैं। भ्रम फैलाने की इसी कोशिश के तहत कांग्रेस के नेता जयराम रमेश ने यह अनर्गल दावा कर दिया कि मतगणना को प्रभावित करने के लिए गृह मंत्री अमित शाह ने देश के 150 जिलों के जिलाधिकारियों को फोन किया है। उन्होंने यह बेतुका आरोप लगाते हुए यह समझा होगा कि इससे उन्हें एक फर्जी नैरेटिव खड़ा करने में मदद मिलेगी, लेकिन चुनाव आयोग ने उन्हें यह नोटिस जारी कर उनका खेल खराब कर दिया कि अपने आरोपों के बारे में प्रमाण प्रस्तुत करें। स्पष्ट है कि वह ऐसा करने से रहे। चुनाव आयोग को ऐसे अनर्गल आरोपों के खिलाफ और अधिक सख्त रवैया अपनाना चाहिए, क्योंकि विपक्षी नेता उसे बदनाम करने का सुनियोजित अभियान छेड़े हुए हैं। इसी के तहत मतदान प्रतिशत के अंतरिम और अंतिम आंकड़ों को लेकर व्यर्थ की चीख-पुकार मचाई गई। इसके बाद यह हल्ला मचाया जाने लगा कि मतगणना के तौर-तरीकों में बदलाव किया जा रहा है। यह भी अफवाह फैलाई गई कि प्रत्याशियों के एजेंटों को मतगणना स्थल के करीब नहीं फटकने दिया जाएगा। जब इससे बात नहीं बनी तो यह कहा जाने लगा कि चुनाव आयोग ने पुरानी परंपरा का परित्याग करते हुए डाक मतपत्रों को बाद में गिनने का फैसला किया है। इसे तूल देने के लिए विपक्षी नेता चुनाव आयोग के दरवाजे तक भी पहुंच गए, लेकिन यह आरोप भी हवा-हवाई ही साबित हुआ, क्योंकि आयोग ने यह स्पष्ट किया कि पोस्टल बैलेट की गणना पहले की तरह होगी।

विपक्षी नेताओं की इन हरकतों से यदि कुछ स्पष्ट है तो यही कि वे अपनी संभावित हार का ठीकरा चुनाव आयोग, मीडिया आदि पर फोड़ने की पूरी तैयारी कर चुके हैं। यही कारण है कि उन्होंने एक्जिट पोल के नतीजों को न केवल अस्वीकार कर दिया, बल्कि उन्हें भाजपा प्रायोजित भी करार दिया। एक्जिट पोल को लेकर कांग्रेस इतनी दुविधाग्रस्त थी कि पहले उसने टीवी चैनलों पर होने वाली चर्चा का बहिष्कार करने का फैसला किया और फिर फजीहत होती देखकर उसमें शामिल होने का निर्णय लिया। यह वही कांग्रेस है जिसने कुछ माह पहले तेलंगाना के एक्जिट पोल नतीजों को खुशी-खुशी स्वीकार किया था और यह उम्मीद जताई थी कि नतीजे उन्हीं के अनुरूप रहेंगे। इस बार विपक्षी दलों को न तो एक्जिट पोल पर भरोसा है और न चुनाव आयोग पर। हैरानी नहीं कि नतीजे आते ही वे जनता पर भी भरोसा करना छोड़ दें। यदि कांग्रेस का यही रवैया रहा तो उसके दुर्दिन खत्म होने में और भी अधिक समय लगेगा।

गंभीर समस्या

दिल्ली में सरकारी जमीन और यमुना बाढ़ क्षेत्र के साथ ही सड़कों और फुटपाथ पर भी अतिक्रमण है। दिल्ली का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहां सड़कों पर अवैध रूप से रेहड़ी-पटरी लगी हुई नहीं दिखे। नई दिल्ली नगर पालिका परिषद क्षेत्र में स्थिति कुछ ठीक है, परंतु राजधानी के अन्य स्थानों पर समस्या गंभीर है। लोग फुटपाथ और सड़क के एक हिस्से में वाहन खड़े कर देते हैं। इससे यातायात अवरुद्ध होता है। राहगीर सड़क पर चलने को मजबूर होते हैं, जिससे दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।

कुछ दिन पहले हाई कोर्ट ने भी इसे लेकर सख्त टिप्पणी की है। इस स्थिति के लिए निगम, लोक निर्माण विभाग, डीडीए, दिल्ली पुलिस सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी जिम्मेदार हैं। उनकी लापरवाही और भ्रष्टाचार के कारण यह समस्या दूर नहीं हो रही है। भ्रष्टाचार के कारण ही 2014 में केंद्र सरकार की ओर से लागू आजीविका संरक्षण एवं रेहड़ी-पटरी विक्रेता गतिविधि विनियमन पर राजधानी में सही तरह से काम नहीं हुआ। इसके तहत रेहड़ी-पटरी वालों का सर्वे करने के साथ वार्डों में टाउन वेंडिंग प्लान तैयार किया जाना है। इस कानून का उद्देश्य अतिक्रमण दूर करने के साथ रेहड़ी पटरी वालों को आजीविका कमाने का अवसर देना है। इसे जमीन पर उतारने में निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। निगम अधिकारियों को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। इससे निगम का राजस्व बढ़ेगा और गरीबों को बिना किसी परेशानी के कारोबार करने का अवसर मिलेगा।

आजीविका संरक्षण एवं रेहड़ी-पटरी विक्रेता गतिविधि विनियमन लागू होना चाहिए, यह लोगों के हित में हैं, इससे अतिक्रमण हट सकेगा

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या एक्जिट पोल्स के नतीजे वास्तविक जनादेश की झलक पेश कर रहे हैं?

आज का सवाल
क्या आपको लगता है कि पूरी चुनाव प्रक्रिया पर बार-बार सवाल उठाकर कांग्रेस ने अपनी साख गिरा ली है?

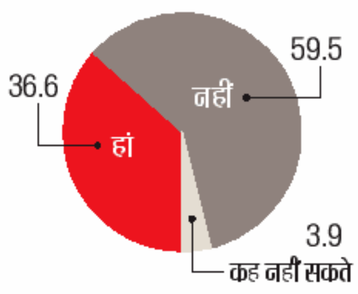

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

साधना से निकले नए संकल्प

नरेन्द्र मोदी

अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं

अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। मां भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे।.. मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था। कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद-विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से अलिप्त हो गया। इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था। मैं ईश्वर का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिए। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया। ऐसा लग रहा था, जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानाडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था।

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अंतर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान है। यह वह शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था। यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। संत तिरुवल्लुवर की रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदंडों पर नहीं तौला। इसीलिए, 'इदं न मम' यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है।

अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है। जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला। आज भारत का गवर्नेंस माडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। गरीब के सशक्तीकरण से लेकर समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है। बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे माडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

कन्याकुमारी स्थित विवेकानंद राक मेमोरियल में साधनारत प्रधानमंत्री मोदी ● प्रेट्र

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। यह पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकी संघ जी-20 समूह का हिस्सा बना। नए भारत का यह स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे।

हमें नए स्वप्न देखने हैं। हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा और इसके लिए यह जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका संपूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत की सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है, जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में रिफार्म की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे रिफार्म 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए। यह भी समझना होगा कि रिफार्म कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने रिफार्म, परफार्म और ट्रांसफार्म का विजन सामने रखा। रिफार्म का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी परफार्म करती है और फिर जब जनता इससे जुड़ जाती है, तो हम ट्रांसफार्मेशन होते हुए देखते हैं।

भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्यूफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा। हमें हर पल इस पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुए अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा। हमें एक राष्ट्र के रूप में पुराने पड़ चुके सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से बाहर निकालना है। हमें याद रखना है कि नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद 1947 में भारत आजाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही एक स्वर्णिम अवसर है। इस अवसर पर हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र की प्रगति एवं उत्थान के लिए पूर्ण रूप से समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर यह कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित राष्ट्र बनाएं।

response@jagran.com

भारी पड़ती जल निधियों की अनदेखी

पंकज चतुर्वेदी

यदि हम नदियों-तालाबों को पानी की अमूल्य निधियां मान लें तो कभी किसी का कंठ सूखा नहीं रहेगा

यह कैसी विडंबना है कि जिस शहर के बीच से सदानीरा यमुना जैसी नदी तकरीबन 27 किमी के दायरे में बहती हो, वह हर साल गर्मियों में पानी की किल्लत के लिए कुख्यात हो जाता है। दिल्ली सरकार अपने जल-पिटारे की परवाह साल भर करती नहीं और जब पानी के लिए लोग परेशान होते हैं तो हरियाणा पर आरोप लगाकर सुप्रीम कोर्ट का रुख करती है। जब दिल्ली में यमुना लबालब होती है, तो यहां के नाले-कारखाने उसमें जहर घोलते हैं और जब पानी का संकट खड़ा होता है तो नदी की याद आती है। यह हाल देश के लगभग सभी बड़े शहरों का हो चला है। अपने तालाबों पर मिट्टी डालकर कंक्रीट से तन गया बेंगलुरु तो केपटाउन की तरह जल-शून्य की चेतावनी से बेहाल है। मुंबई की पांच नदियां नाला बन गईं और बरसात में जो पानी शहर की प्यास बुझाता, अब वह संकरे रास्तों से बहकर समुद्र के खारे पानी में मिल जाता है और जरूरत के समय लोग भूजल और टैंकर के जरिये जैसे-तैसे जिंदगी काटते हैं। चाहे हैदराबाद हो या चेन्नई या फिर पटना या श्रीनगर, नक्शे पर वहां नदी-तालाब-नहर का जाल है। दुर्भाग्य है कि जब इंद्र देवता अपना आशीष बरसाते हैं तो इन जल भंडारों की अधिक से अधिक जल से भरने के बजाय समाज उनमें मिट्टी भरकर जमीन का लोभ करता है। जब तक यह सिलसिला इसी प्रकार से चलता रहेगा तब तक पानी की कहानी में कोई सुधार नजर नहीं आएगा।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भले ही लोग इससे खुश हों कि उनके पास पानी का बिल आता नहीं, लेकिन सच यह है कि दिल्ली की कोई 31 प्रतिशत आबादी को नल से स्वच्छ पेयजल नहीं मिलता। हजारों टैंकर हर दिन कालोनियों में जाते हैं। उनके लिए पानी जुटाने के लिए पाताल को इतनी गहराई तक खोद दिया गया है कि सरकारी भाषा में कई जगह अब यह 'डार्क जोन' बन गया है। दिल्ली के करीब गाजियाबाद में, जो यमुना-हिंडन के त्रिभुज पर है, तमाम कालोनियां पानी के लिए तरसती हैं, क्योंकि दोनों नदियां अब कूड़ा ढोने का जरिया बन गई हैं। गुरुग्राम में भी जरूरत की तुलना में 105 एमएलडी कम पानी की आपूर्ति हो रही है। दिल्ली में 983 तालाब-झील-जोहड़ हैं। जल संसाधन मंत्रालय की गणना बताती है कि इनमें से किसी को भी प्यास बुझाने के काबिल नहीं माना जाता।

जल संकट से जूझती देश की राजधानी ● प्रेट्र

दिल्ली गंगा और भाखड़ा से सैकड़ों किमी दूर से पानी मंगवाती है, लेकिन अपने ही तालाबों को इस लायक नहीं रखती कि वे बरसात का पानी जमा कर सकें। तीन चौथाई जल निधियों का इस्तेमाल तो महज सीवर की गंदगी बहाने में ही होता है।

बेंगलुरु की तरह हैदराबाद और चेन्नई में भी जैसे ही विदेशी कंपनियां आना शुरू हुईं और आबादी बढ़ने के साथ मकान की जरूरत बढ़ी, तालाब-नदियों को ही समेटा गया और जल संकट को खुद आमंत्रित कर लिया गया। ऐसे उदाहरण देश के हर कोने में हैं। बीते एक दशक में सरकार ने हर घर नल, अमृत सरोवर और अटल भूजल जैसी महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू कीं, लेकिन इन सभी में न जन भागीदारी रही और न ही आम लोगों में जिम्मेदारी का भाव। वास्तव में प्रकृतिजन्य जितनी भी समस्याएं हैं, उनके निदान के लिए हमें अतीत में ही झांकना होगा। एक ताजा रिपोर्ट चेता चुकी है कि अगले कुछ वर्षों में देश के 30 शहर जलहीन सीमा तक सूख जाएंगे। इनमें इंदौर, बठिंडा और कोयंबटूर जैसे शहर भी हैं। यह कड़वा सच है कि जलवायु परिवर्तन का बुरा असर पड़ रहा है, लेकिन इसके साथ ही गांवों से शहरों की तरफ तेज पलायन, अनियोजित शहरीकरण, कम बरसात, अधिक गर्मी और उथले जलस्रोतों में अधिक वाष्पीकरण और साथ ही जल के बदतर प्रबंधन के कारण जल संकट प्रकृति से अधिक इंसान को ज्यादा कठघरे में खड़ा करता है। यह सवाल लगभग हर तीसरे साल खड़ा होता है कि 'औसत से कम पानी बरसा तो क्या होगा? देश के 13 राज्यों के 135 जिलों की कोई दो करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि प्रत्येक दस साल में चार बार पानी के लिए त्राहि-त्राहि करती है। इसे लगभग नजरअंदाज किया जाता है कि यदि सामान्य से कुछ कम बारिश हो, पर जल प्रबंधन ठीक हो तो उसके असर को गौण किया जा सकता है।

भारत में दुनिया की कुल जमीन का 2.45 प्रतिशत क्षेत्रफल है। जबकि दुनिया के कुल जल संसाधनों में से चार प्रतिशत ही हमारे पास हैं और जनसंख्या की भागीदारी 16 प्रतिशत है। हमें हर साल बारिश से कुल 4000 घन मीटर पानी प्राप्त होता है, जबकि उपयोग लायक भूजल 1869 घन मीटर है। इसमें से महज 1122 घन मीटर पानी ही काम आता है। देश के उत्तरी हिस्से में नदियों में पानी का अस्सी प्रतिशत जून से सितंबर के बीच रहता है। दक्षिणी राज्यों में यह आंकडा 90 प्रतिशत का है। शेष आठ महीनों में पानी का जुगाड़ न तो बारिश से होता है और न ही नदियों से। भारत में औसतन 110 सेंटीमीटर बारिश होती है, जो अधिकांश देशों से ज्यादा है। यह बात और है कि हम बरसने वाले कुल पानी का महज 15 प्रतिशत ही संचित कर पाते हैं। शेष पानी नालियों, नदियों से होते हुए समुद्र में जाकर मिल जाता है और बेकार हो जाता है। प्रकृति जीवनदायी संपदा यानी पानी हमें एक चक्र के रूप में प्रदान करती है और इस चक्र को गतिमान रखना हमारी जिम्मेदारी है। प्रकृति के खजाने से हम जितना पानी लेते हैं, उसे वापस भी हमें ही लौटाना होता है। जल संकट का निदान पुराने तालाबों, कुओं और बावड़ियों, नदियों को उनके मूल स्वरूप में लौटाने में ही छिपा है। भूजल लंबे समय तक ठोस विकल्प नहीं हैं। यदि हम नदी-तालाब को पानी की अमूल्य निधियां मान लें तो कभी किसी का कंठ सूखा नहीं रहेगा।

(लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

स्वयं से प्रेम करें

स्वयं से प्रेम करना सुखी जीवन का आधार है। स्वयं से प्रेम का अर्थ है स्वयं को निखारना, अपनी अच्छाइयों को खोजना, अपने लिए सम्मान प्राप्त करना, सोच सदैव सकारात्मक रखना और अपने आप को प्रेरित करते रहना और अपने साथ हुई हर अच्छी-बुरी घटना की जिम्मेदारी खुद पर लेना। स्वयं से प्रेम की भावना सफलता का एक ऐसा कारक है जिसे हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। आस्कर वाइल्ड ने कहा है कि अपने दिल में प्यार रखिए, क्योंकि इसके बिना जीवन ऐसा है, जैसे बिना सूरज की रोशनी के मुरझाया हुआ पौधा।

आप दूसरों को प्रेम और सम्मान तभी बांट पाएंगे जब आप के पास वह पर्याप्त मात्रा में होगा। स्वयं से प्रेम करना बहुत सहज एवं स्वाभाविक है। जब आप अपने आप से पूरी तरह से प्रेम करना सीख जाते हैं, तो आप फलने-फूलने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाते हैं। स्वयं से प्रेम के अभाव में हम अपने लक्ष्यों और सपनों और खुश एवं स्वस्थ रहने की युक्ति को भूल जाते हैं। चार्ल्स बुकोव्स्की ने कहा है, 'यदि आपमें प्यार करने की क्षमता है, तो पहले खुद से प्यार करें।'

कुछ लोग स्वयं से प्रेम करने को अनुचित समझते हैं। लोगों के दिल में यह धारणा बस गई है कि जो व्यक्ति स्वयं से प्रेम करता है वह स्वार्थी होता है और वह दूसरों से प्रेम कर ही नहीं सकता। वास्तव में यह एक मिथक प्रतीत होता है। अपने आप से प्रेम करना गलत हो ही नहीं सकता, क्योंकि जो व्यक्ति अपने आप से प्रेम नहीं करता वह किसी अन्य के लिए ऐसी भावना को कैसे विस्तार दे सकता है। जो अपने आप से संतुष्ट नहीं वह किसी और को संतुष्ट कैसे रख सकता है। ब्यू टापलिन ने कहा है, 'आत्म-प्रेम एक महासागर है और आपका दिल एक बर्तन है। इसे पूर्ण बनाएं और उसमें से कुछ मात्रा उन लोगों के जीवन में स्वतः फैल जाएगी, जिन्हें आप प्रिय मानते हैं, लेकिन इसकी पहल आपको करनी होगी।' इसलिए स्वयं से प्रेम का भाव विकसित करने के दिशा में कदम बढ़ाइए।

नृपेंद्र अभिषेक नृप

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

हादसों पर लगाम लगाना आवश्यक

'लापरवाही की भेंट चढ़ती जिंदगियां' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने एक गंभीर समस्या पर समग्रता में प्रकाश डालते हुए उसका संभावित समाधान भी प्रस्तुत किया है। यह कोई नई बात नहीं है कि आए दिन ऐसे मामले सामने आते रहते हैं फिर चाहे वह हादसे होर्डिंग की लापरवाही से हों या आग की लापरवाही से। प्रश्न हमेशा यही रहा कि आखिर जिम्मेदार है कौन, इतने उपायों के बावजूद यह घातक अनदेखी हो कैसे जाती है? यह सवाल सही है कि सुरक्षा के उपाय यदि लागू हैं तो वे कितने और किस हद तक सफल हैं? नियम और सुरक्षा के कानून तो लागू हैं, परंतु उन्हें सही से अमल में नहीं लाया जाता। ऐसे में शासन-प्रशासन के स्तर पर यह सुनिश्चित होना चाहिए कि मानवीय लापरवाही से होने वाले हादसे किसी भी सूरत में न हों। सरकार और न्यायपालिका को नए प्रविधान या दंड निश्चित करने चाहिए, जिससे शासन के प्रत्येक स्तर पर सतर्कता और ईमानदारी का भाव बढ़े। ऐसे समुचित प्रयास ही हादसों पर लगाम लगा पाने में सक्षम होंगे। एक सजग नागरिक होने के नाते हमारी भी जिम्मेदारी है कि हम शासन-प्रशासन को जवाबदेह बनाएं।

नैंसी सिंह, आगरा

भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना

भारत एक सशक्त एक लोकतंत्रिक राष्ट्र है। विश्व में तीसरी आर्थिकी के रूप में स्थापित होने के कगार पर है। निस्संदेह बढ़ती जनसंख्या और लोगों के सोच-विचार व जीवनशैली में बड़ा बदलाव आया है। इसके साथ-साथ भ्रष्टाचार में भी बढ़ोतरी हुई है। देश के विकास में अनेकों बाधाओं में भ्रष्टाचार चिंता का विषय है। भ्रष्टाचार पर पूरी तरह अंकुश लगाने के लिए केंद्रीय तथा राज्य सरकारों के अतिरिक्त जनता के सहयोग की जरूरत है। जनता-जनार्दन लोकतंत्र की तीसरी आंख है। राजनीतिज्ञों की गतिविधियों और भ्रष्ट नेताओं पर कड़ी नजर रखे हुए है। निस्संदेह देश के विकास में अनेकों बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं, जिन्हें एकजुट होकर जड़ से खत्म करने की जरूरत है। देश स्वतंत्र हुए 77 वर्ष बीते चुके हैं। सरकारें आईं और गईं परंतु भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में सभी प्रयास असफल हुए। इसका मुख्य कारण देश के लगभग सभी तंत्र भ्रष्टाचार के लपेटे में हैं। बिना पंजीकरण अथवा लाइसेंस के अवैध तरीके से अस्पताल, नरसिंग-होम चल रहे हैं। फार्मा कंपनियां अवैध तरीके से दवाएं बना रही हैं। बिना पंजीकरण के कैमिस्ट जानलेवा नकली दवाएं बाजार में खुलेआम बेच रहे हैं। झोलाछाप की भी कमी नहीं है। सरकार की कार्रवाई अंधेरे में लाठी चलाने जैसी है। माना कि बढ़ती जनसंख्या समस्या है किंतु भ्रष्टाचार की रोकथाम के संसाधनों के बावजूद सरकार भ्रष्टाचार पर पूरी तरह अंकुश लगाने में असमर्थ क्यों है और तो और स्वतंत्र देश में न्यायालयों, पुलिस विभाग, शिक्षा प्रणाली भी भ्रष्टाचार से प्रभावित है। डिग्रियां बिकाऊ हैं, जिधर देखो अवैध कोचिंग सेंटर चल रहे हैं। अवैध निर्माण के कार्यों में खुलेआम भ्रष्टाचारियों का बोलबाला है। मनी लांड्रिंग व स्टटेबाजों पर भी नकेल कसना मुश्किल है। यकीन मानिए भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान केवल सख्त कार्रवाई से संभव है।

कृष्ण खन्ना, नई दिल्ली

चुनावी प्रक्रिया के सबक

संपादकीय लेख 'चुनाव प्रक्रिया के सबक' अत्यंत सटीक है। एक जून को लंबी चुनावी प्रक्रिया संपन्न हो गई। साथ ही एक्जिट पोल के नतीजे आ गए। सभी चैनल इस बात पर एकमत हैं कि एनडीए 350 से 401 के बीच सीटें लाकर नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार सत्ता की कमान दे रहा है। भाजपा अकेले भी 2019 की अपनी 303 सीटों में बढ़ोतरी कर रही है। लेकिन कांग्रेस और इंडी गठबंधन के कई नेताओं ने एक्जिट पोल पर भी मोदी अंधविरोध नहीं छोड़ा। कांग्रेस के बड़े नेता जयराम रमेश ने कहा है कि एक्जिट पोल मोदी ने तैयार करवाए हैं। ऐसे ही अंधविरोध ने कांग्रेस को रसातल में ला दिया है। इस तर्क से तो प्रतीत हो रहा है यदि चार जून को मोदी प्रचंड बहुमत से जीत गए तो हार का ठीकरा चुनाव आयोग और ईवीएम पर फोड़ा जाएगा। इस चुनाव में कुछ नए तथ्य सामने आए हैं। प्रमुख हैं, नरेन्द्र मोदी का करिश्मा न केवल कायम है, अपितु बढ़ रहा है और पूरे देश में फैल गया है। हिंसा अपेक्षाकृत कम हुई, लेकिन बंगाल ने हर चुनाव, हर दौर में हिंसा का रिकार्ड कायम रखा। यह सात राऊंड में और भारी केंद्रीय बलों की तैनाती के बावजूद हुआ। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि बंगाल में राज्य प्रायोजित हिंसा पिछले दशक से कायम है। शालीनता की मांग तो यह है कि हार स्वीकार कर हार के कारणों पर आत्मावलोकन और फिर सुधार किया जाए। लेकिन कांग्रेस और इंडी गठबंधन के आचरण से लगता नहीं कि वह ऐसा करेगा।

सीपी बंसल, दिल्ली

X पोस्ट

विपक्षी दल एक्जिट पोल के सदमे से उबरे भी नहीं थे कि अरुणाचल प्रदेश में भाजपा की शानदार जीत ने उनके जले पर और नमक छिड़क दिया।

जयवीर शेरगिल @JaiveerShergill

एक्जिट पोल देखने के बाद अब मेरा यूट्यूब पर मौजूद कथित पत्रकारों और उनकी पत्रकारिता से भरोसा पूरी तरह उठ गया। नवल कांत सिन्हा @navalkant

एक्जिट पोल के अनुमान सही साबित होते हैं तो समझिए कि महिलाओं और युवाओं ने मोदी पर व्यापक रूप से भरोसा जताया है। पल्लवी घोष @_pallavighosh

एक्जिट पोल के अनुमान यही संकेत करते हैं कि भाजपा की विचारधारा का सभी राज्यों में विस्तार हो रहा है और भारतीय समाज में उसकी पैठ मजबूत होती जा रही है।

शीला भट्ट @sheela2010

140 करोड़ लोगों के देश में इक्का-दुक्का घटनाओं को छोड़ दें तो इतना बड़ा काम शांतिपूर्ण ढंग से निपट गया। भीषण गर्मी के बावजूद लोग बड़ी संख्या में वोट देने निकले। एक लोकतांत्रिक देश के रूप में दुनिया को दिखाने के लिए इससे बड़ी और क्या उपलब्धि हो सकती है। उन लोगों पर हंसी ही आती है, जो भारत के लोकतंत्र पर सवाल उठाते हैं।

अखिलेश शर्मा @akhileshsharma1

जनपथ

रहे बनाते योजना करें जाति पर चोट,
लेकिन पड़े चुनाव में जाति-धर्म पर वोट।
जाति-धर्म पर वोट काम की वैल्यू जीरो,
लोग जाति के बीच ढूंढते अपना हीरो।
'जातिवाद' का गीत रहे जो हरदम गाते,
वही जाति के बीच दूरियां रहे बनाते!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय संपादक-प्रदीप कुमार शुक्ल*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 34 अंक 320

****

प्रवाह

महोत्सव विश्वास का
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

आध्यात्मिकता वास्तव में भारतीय मन की कुंजी है। अनंत की भावना यहां जन्मजात है। -महर्षि अरबिंद

सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते एएनसी के सामने चौदह दिनों के भीतर उन्हीं विपक्षी दलों के साथ मिलकर गठबंधन सरकार बनाने की चुनौती है, जो उसे भ्रष्ट बताते आए हैं। जाहिर है, देश में पहले स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनावों के आयोजन के करीब तीस साल बाद दक्षिण अफ्रीका एक बार फिर निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है।

ऐतिहासिक बदलाव

दक्षिण अफ्रीका के ऐतिहासिक चुनावों में रंगभेद के खिलाफ संघर्ष करने वाले पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला की पार्टी सत्ताधारी अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस (एएनसी) का विगत तीस साल में पहली बार बहुमत गंवाना महज राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव नहीं, बल्कि एक युग का अंत भी माना जा सकता है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1912 में स्थापित अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस ने दक्षिण अफ्रीका को रंगभेद से मुक्ति दिलाने में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ही, नेल्सन मंडेला जैसे महान नेता के नेतृत्व में इस पार्टी ने देश को नस्लीय समानता व लोकतंत्र की दिशा में भी अग्रसर किया। लेकिन पिछले कई वर्षों से पार्टी अगर अपनी लोकप्रियता और प्रभाव खोती दिख रही है, तो इसकी वजह साफ है। दरअसल, एएनसी के इतने अरसे तक सत्ता में रहने के बावजूद, आर्थिक और सामाजिक बदलाव कभी समाज के निचले पायदानों तक नहीं पहुंच सके। वर्ष 2012 से जीडीपी की वृद्धि दर का औसतन 0.8 फीसदी सालाना रहना देश की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था को ही दर्शाता है। यही नहीं, आय में असमानता का आलम यह है कि शीर्ष 0.1 फीसदी लोगों के पास देश की 25 फीसदी संपदा सिमटी हुई है। बेरोजगारी दर 40 फीसदी से अधिक तक पहुंच चुकी है। हत्याओं की दर पूरी दुनिया में सबसे अधिक है। शिक्षा व बुनियादी क्षेत्र की बदहाली से पूरे देश में इस कदर निराशा व्याप्त है कि 2022 में हुए एक सर्वे में शामिल हर पांच में से चार लोगों ने माना था कि देश गलत दिशा में जा रहा है। दरअसल, राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा ने 2018 में सत्ता संभालने के बाद नेल्सन मंडेला से प्रेरित एक नई तरह की राजनीति करने का वादा किया था और उन्होंने काफी कुछ किया भी, लेकिन भ्रष्टाचार से जकड़े देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए अभी काफी कुछ किया जाना शेष है। इन हालात में, ताजा चुनावी नतीजों का संदेश साफ है कि लोकतंत्र में जनता की आवाज सबसे महत्वपूर्ण होती है और अगर सत्ता में बैठे लोग जन-आकांक्षाओं को नजर अंदाज करते हैं, तो जनता उन्हें बदलने का साहस रखती है। हैरत नहीं, अगर यह बदलाव दूसरे अफ्रीकी देशों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत बने, जहां लोकतंत्र शैशवावस्था में है। सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते एएनसी के सामने चौदह दिनों के भीतर उन्हीं विपक्षी दलों के साथ मिलकर गठबंधन सरकार बनाने की चुनौती है, जो उसे भ्रष्ट बताते आए हैं। जाहिर है, देश में पहले स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनावों के आयोजन के करीब तीस साल बाद दक्षिण अफ्रीका एक बार फिर निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है, जहां से उसके लोकतांत्रिक भविष्य का नया अध्याय लिखा जाना तय है।

साधना से निकले नए संकल्प

नए भारत का यह स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन यह 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का एहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, लोकतंत्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव एक जून को पूरा हो गया। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के कितने सारे अनुभव, कितनी सारी अनुभूतियां हैं। मैं स्वयं में एक असीम ऊर्जा का प्रवाह महसूस कर रहा हूं। मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद-विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया। इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, पर कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था। इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता का निरंतर एहसास कराया। ऐसा लग रहा था, जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

साथियो, कन्याकुमारी का यह स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कश्मीर से कन्याकुमारी...यह हर देशवासी के अंतर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान है। कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहां एक और महान संगम दिखता है-भारत का वैचारिक संगम! यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएं यहां राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी एकता का अमिट संदेश देती है।

साथियो, स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था-*एवरी नेशन हैज अ मैसेज टू डिलीवर, अ मिशन टू फुलफिल, अ डेस्टिनी टू रीच*। भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत की स्वतंत्रता से अन्य देशों को भी प्रेरणा और बल मिला, उन्होंने आजादी प्राप्त की। अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है, जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला और सहयोग मिला। आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। प्रो-पीपल गुड गवर्नेंस, आकांक्षी जिला, आकांक्षी प्रखंड जैसे अभिनव प्रयोगों की आज विश्व में चर्चा हो रही है। गरीब के सशक्तीकरण से लेकर लास्ट माइल डिलीवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त बनाने में, पारदर्शिता लाने में, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं। भारत में सस्ता डाटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुंच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है। पूरा विश्व टेक्नोलॉजी के इस डेमोक्रेटाइजेशन को शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन जी-20 ग्रुप का हिस्सा बना। साथियो, नए भारत का यह स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन यह 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का एहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है। वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमारे रिफॉर्म 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए। इसीलिए मैंने रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म का विजन सामने रखा। रिफॉर्म का दायित्व नेतृत्व को होता है। उसके आधार पर ब्यूरोक्रेसी परफॉर्म करती है और फिर जब जनता इससे जुड़ जाती है, तो हम ट्रांसफॉर्मेशन होते हुए देखते हैं। भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। हमें स्पीड, स्केल, स्कोप और स्टैंडर्ड्स, चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें जीरो डिफेक्ट-जीरो इफेक्ट के मंत्र को आत्मसात करना होगा। साथियो, हमें गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत-भूमि में जन्म दिया है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुए अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा। हमें पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से बाहर निकालना है। नकारात्मकता से मुक्ति सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है।

हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

edit@amarujala.com

साइबर दुनिया और चीन की साजिशें

प्रसंगवश

दीपक वोहरा
पूर्व राजनयिक

मेटा की लेटेस्ट रिपोर्ट से पता चलता है कि लोकसभा चुनाव के दौरान चीन ने किस तरह फेसबुक और इंस्टाग्राम पर फर्जी खातों की मदद से सरकार के खिलाफ सिखों को भड़काने वाली सामग्री पोस्ट कर एक फर्जी आंदोलन खड़ा करने की साजिशें रचीं।

कुछ स्वयंभू 'विशेषज्ञ' बता रहे हैं कि चीन महाशक्ति देश के रूप में अमेरिका की जगह लेना चाह रहा है, इसलिए उसके पास भारत के खिलाफ षड्यंत्र रचने का समय नहीं है। यह सरासर बकवास है। चीन यह बात अच्छी तरह से समझता है कि भारत को कमजोर किए बिना दुनिया पर वर्चस्व कायम करने की उसकी मंशा कभी पूरी नहीं हो सकती है। इसलिए सैन्य से लेकर आर्थिक और मानचित्रण तक-वह भारत के खिलाफ हर तरह की आक्रामकता आजमाने का प्रयास करता है। उसके योजनाकार भारत के खिलाफ साजिश रचने पर काफी समय खर्च करते हैं। चीन की 'तीन युद्ध' रणनीति का काफी विश्लेषण किया गया है, जो झाउ वंश के रणनीतिकार सन त्जु की पुस्तक *द आर्ट ऑफ वार* से प्रेरित थी, खासकर बिना लड़े जीतने की उसकी अवधारणा, क्योंकि वह चीनियों की सीमित शारीरिक क्षमता से वाकिफ थे। चीन अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को कमजोर करना, सीमाओं को बदलना और वैश्विक (खासकर सोशल) मीडिया को नष्ट करना चाहता है। उसके पास सूचनाओं में हेरफेर करने वाली एक सेना है, और वह जहां तक संभव हो सके, अपने विरोधियों को भ्रमित करने के लिए उसका उपयोग करने की कोशिश करता है।

आजकल एल्गोरिद्म एवं बॉट्स के साथ सोशल मीडिया में हेरफेर करना अपेक्षाकृत आसान हो गया है, जो इंटरनेट पर स्वचालित ढंग से असीमित 'व्यूज' और 'लाइक्स' पैदा कर सकते हैं, जिन्हें मानव गतिविधियों की तरह तैयार किया गया है। मौजूदा लोकसभा चुनाव के दौरान भी ऐसा देखने को मिला है। वर्तमान सरकार के कुछ विदेश-समर्थित सोशल मीडिया आलोचक हैं, जिनके 'आधिकारिक' रूप से लाखों फॉलोअर्स हैं। चीन ने सोशल मीडिया के जरिये ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और अमेरिका में चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश की है। लेकिन वह पकड़ा गया और उसने आहत होने का नाटक किया। मेटा जैसी दिग्गज सोशल मीडिया कंपनी के सतर्क होने और दुर्भावनापूर्ण खातों को निष्क्रिय करने के बाद चीन (और उसका अनुयायी पाकिस्तान) सोशल मीडिया का दुरुपयोग करने वाले प्रमुख देश के रूप में उभरा है। यानी सोशल मीडिया को चीन ने पूरी तरह से एंटी-सोशल (असामाजिक) बना दिया।

वर्ष 2020 में गलवान की घटना (जो चीन की भयंकर भूल थी) के बाद उसकी चर्चित सेना पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलएल) कागजी शेर साबित हुई। इसलिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अब गैर-पारंपरिक युद्ध करने की कोशिश कर रही है। उसके निशाने पर विशेष रूप से विदेश में बसा सिख समुदाय का एक छोटा-सा वर्ग है, जो भारत को अस्थिर करने के बारे में सोच रहा है। अपने पुराने पिछलग्गू पाकिस्तान के उकसावे में आकर चीन ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद यही घिसी-पिटी रणनीति अपनाई। लेकिन कश्मीर में जब उसकी दाल नहीं गली और कश्मीर के लोगों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में जुड़ने के आर्थिक और राजनीतिक लाभ दिखने लगे, तो चीन ने अपना ध्यान विदेश में बसे कट्टरपंथी सिखों की तरफ लगाया। उसकी यह साजिश भी विफल होने वाली है, क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था आसमान छू रही है और दुनिया भारत के साथ दोस्ती के फायदे समझ रही है।

पिछले पांच वर्षों में चीन ने भारत पर काफी आर्थिक दबाव बनाया, उसके बावजूद महामारी पर काबू पाने में हमारी सफलता और आर्थिक सुधार से चीन चिंतित हो उठा है। हालांकि भारत और चीन के बीच खुले युद्ध की फिलहाल कोई आशंका नहीं है, लेकिन वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर छिटपुट झड़पों और कभी-कभार जमीन हड़पने के प्रयासों से इन्कार नहीं कर सकते। चीनी राजनयिकों ने स्पष्ट धमकियां देने की रणनीति अपनाने की कोशिश की और मेजबान देशों को नाराज किया, जिससे चीन की छवि को नुकसान ही पहुंचा। पूर्व मंगोलियाई राष्ट्रपति, जो शी से 30 बार मिल चुके हैं, ने लिखा कि शी दिखाते हैं कि 'व्यक्तिगत रूप से करिश्माई होने के साथ विश्व मंच पर खतरनाक और निरंकुश होना संभव है। वह दुष्ट भी हो सकते हैं।' अपने सभी 19 पड़ोसियों को चुनौती देने की हठधर्मिता की चीन भारी कीमत चुका रहा है, जिसके लिए उसके राष्ट्रपति का अहंकार जिम्मेदार है।

दूसरा पहलू

हमारे देश में विदेशी नस्ल के पिल्लों के अवैध कारोबार पर रोक जागरूकता से ही संभव है। इन्हें गोद लीजिए, लेकिन खरीदिए मत।

इन्हें खिलौना या शोपीस समझकर घर मत लाइए

वह सड़क के किनारे बैठा था और परेशान-सा होकर गुजरने वाली हर गाड़ी को देख रहा था। शायद उम्मीद थी कि मालिक आएंगे और घर ले जाएंगे। पैर में चोट लगने से वह थोड़ा लंगड़ा भी रहा था। जर्मन शेफर्ड नस्ल का लगभग दो साल का टफी अब कभी पहले जैसा जीवन नहीं जी पाएगा। बीमारी की वजह से मालिक ने उसे बेसहारा छोड़ दिया है। यह केवल टफी की कहानी नहीं है, अपने देश में हर साल सैकड़ों कुत्तों को उनके मालिक सड़कों पर या कहीं भी लावारिस मरने के लिए छोड़ जाते हैं। आपको याद होगा पीएम नरेंद्र मोदी ने कुछ समय पहले *मन की बात* में कहा था कि भारतीय नस्ल के श्वानों को अपनाना चाहिए।

भूपेंद्र कुमार

विशेषज्ञों के अनुसार, विदेशी नस्ल के श्वानों के अनुरूप भारत का वातावरण नहीं है। प्रधानमंत्री ने भी *मन की बात* में कहा था कि भारतीय नस्ल के श्वानों को अपनाना चाहिए।

2018 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग तीन करोड़ पालतू और सात करोड़ लावारिस श्वान हैं। देश भर में 1.25 लाख दुकानें हैं, जो पिल्लों की बिक्री करती हैं। यह कारोबार लगभग 1,200 करोड़ रुपये का है।

आगरा हो या नोएडा, आपको जगह-जगह ऐसे बोर्ड मिल जाएंगे, जिन पर लिखा होगा-पिल्ले ही पिल्ले। बच्चे का मन मचला और आपने हजारों रुपये का पिल्ला खरीद लिया। बिना यह जाने कि यह कितनी बड़ी जिम्मेदारी है। हफ्ते-दस दिन तो शौक में गुजर जाते हैं, फिर यह बोझ लगने लगता है। बच्चे की तरह ही पिल्लों को भी कई तरह की दवाएं देनी होती हैं। ड्राई फ्रूट या अंगूर जैसे फल कितने खतरनाक हो सकते हैं, यह पता होना चाहिए। यह कोई खिलौना नहीं है, इसके साथ वक्त बिताना होगा। नोएडा में डिस्पेंसरी ऑफ स्ट्रे एनिमल्स के संजय महापात्र कहते हैं, अगर आपको कुत्ते पसंद हैं तो इन्हें गोद लीजिए। खरीदिए मत। इसी चक्कर में झुग्गियों तक में बड़ी खराब स्थिति में ब्रीडिंग कराने वाले मिल जाएंगे, इनके यहां छोटीसी जगह में पिल्लों को तैयार करने की मानो फैक्टरी होती है। 2018 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग तीन करोड़ पालतू और सात करोड़ लावारिस श्वान हैं। देश भर में 1.25 लाख दुकानें हैं, जो पिल्लों की बिक्री करती हैं, यह कारोबार लगभग 1,200 करोड़ रुपये का है।

आगरा में कैस्पर होम्स के नाम से स्वयंसेवी संगठन चलाने वाली विनीता अरोड़ा एनिमल वेलफेयर बोर्ड की सदस्य भी हैं। वह कहती हैं, हम जब इन धंधेबाज लोगों से पिल्लों या कुत्तों को बचाने की कोशिश करते हैं, तो ये हिंसक तक हो जाते हैं। कानूनन ब्रीडर को एनीमल वेलफेयर बोर्ड में रजिस्टर्ड होना चाहिए। सोशल मीडिया पर पिल्लों की खरीद-फरोख्त गैरकानूनी है। भारत में लोग विदेशी नस्लें, मसलन साइबेरियन हस्की और सेंट बरनार्ड नस्ल का शौक रखते हैं, पर इन्हें यहां का वातावरण माफिक नहीं आता। इसलिए उन्हें खरीदने के बजाय किसी भी डॉग शेल्टर की मदद ली जा सकती है।...और हां, टफी को नोएडा में इलाज के बाद नया सहृदय परिवार मिल गया है।

आंकड़े

यूपीआई से लेनदेन

भारत ने यूपीआई लेनदेन में इस वर्ष मई में नया रिकॉर्ड बनाया है। पहली बार 14 अरब रुपये से ज्यादा लेनदेन हुआ है।

नोट: आंकड़े अरब रुपयों में हैं। | स्रोत: NPCI

दक्ष प्रजापति ने अपनी 13 कन्याओं का विवाह कश्यप ऋषि के साथ किया। मान्यता है कि इनसे उत्पन्न हुईं संतानों से यह समस्त सृष्टि भर गई।

निर्गुण भगवान के सगुण दर्शन

अंतर्यात्रा
संकलित

सृष्टि की इच्छा से पितामह भगवान ब्रह्मा ने छह मानसिक पुत्र मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु उत्पन्न किए। मरीचि के पुत्र कश्यप ऋषि हुए। दक्ष प्रजापति ने अपनी 13 कन्याओं अदिति, दिति, दनु, काला, दनायु, सिंहिका, क्रोधा, प्राधा, विश्वा, विनता, कपिला, मुनि और कद्रू का विवाह कश्यप के साथ किया। मान्यता है कि इनकी संतानों से ही यह संपूर्ण सृष्टि भर गई।

महर्षि कश्यप अदिति से सबसे ज्यादा स्नेह करते थे। उन्हीं से इंद्र इत्यादि समस्त देवता और बारह आदित्य पैदा हुए। कश्यप और अदिति की भगवान में अटूट भक्ति थी। इन्हीं दंपती के घर में भगवान ने वामन समेत तीन बार अवतार लिया। दूसरी ओर, सभी दैत्य दिति के पुत्र हैं। दनु के पुत्र दानव हुए। काला और दयानु के भी दानव ही हुए। सिंहिका के सिंह, व्याघ्र हुए।

क्रोधा के क्रोध करने वाले असुर, विनता के गरुड़, अरुण आदि छह पुत्र हुए। कद्रू के सर्प, नाग आदि हुए। मनु से समस्त पुत्र मनुष्य उत्पन्न हुए। इस प्रकार समस्त स्थावर-जंगम, पशु-पक्षी, देवता-दैत्य, मनुष्य हम सब सगे भाई-भाई हैं। एक कश्यप ऋषि की हम संतान हैं। वृक्ष, पशु, पक्षी हम सब कश्यप गोत्रीय ही हैं। कश्यप ऋषि की पुराणों में बहुत सी कथाएं हैं। उनमें वामन, बलि, अदिति आदि के प्रसंग में बहुत-सी बातें हैं। कहा जाता है कि अदिति और कश्यप के महातप के प्रभाव से ही जीवों को निर्गुण भगवान के सगुण रूप में दर्शन हो सके।

अमर उजाला
पुराने पन्नों से — 07 मई, 1950

मित्र राष्ट्रसंघ को विश्व मंच न बनाया, तो युद्ध छिड़ जाएगा

मित्रराष्ट्रसंघ को विश्वमंच न बनाया गया तो युद्ध छिड़ जायगा

मित्र राष्ट्रसंघ के महामंत्री मुशिये ट्रिग्वेली ने अपनी यूरोप व मास्को यात्रा को लेकर कहा कि हालात बहुत नाजुक हैं। यदि हमने मित्र राष्ट्रसंघ को विश्व मंच न बनाया, तो यह तनातनी विश्वयुद्ध कराकर रहेगी।

कान्स ने खोले सफलता के द्वार

उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के बरनावा गांव की 23 साल की लड़की नैन्सी त्यागी ने समारोह में अपने सिले कपड़े पहनकर सफलता के झंडे गाड़ दिए।

क्षमा शर्मा | **प्रेरणा**

फ्रांस में हुआ कान्स फिल्म फेस्टिवल इस बार इसलिए बेहद खास रहा कि इसमें उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के गांव बरनावा की तेईस साल की लड़की नैन्सी त्यागी ने सफलता के झंडे गाड़ दिए। इसे वहां ब्रूट एजेंसी की तरफ से भेजा गया था। बेहद गरीब परिवेश से आई इस लड़की को कपड़े सिलने का बेहद शौक है। यह तमाम सेलिब्रिटीज को देखकर कपड़े सिलती थी और उसके फोटो इंस्टाग्राम पर लगाती थी। शुरू में उसे बहुत ट्रोल भी किया गया, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। धीरे-धीरे इसकी फैन फॉलोइंग बढ़ी और आज इसके साढ़े आठ लाख फॉलोअर्स हैं। अब हो सकता है और भी बढ़ गए हों।

नैन्सी ने कान्स में गुलाबी रंग का जो गाउन पहना, उसे उसने खुद सिला था। इसमें एक हजार मीटर कपड़ा और बनाने में एक महीना लगा। जिस कान्स में बड़ी-बड़ी सेलिब्रिटीज दुनिया के मशहूर डिजाइनर्स के बेहद महंगे कपड़े पहनती हैं, वहां नैन्सी ने खुद का

सिला गाउन पहनकर सबको चकित कर दिया। मशहूर अभिनेत्री सोनम कपूर ने कहा कि वह उसके लिए भी कपड़े सिले। नैन्सी ने फ्रांस में भी पत्रकारों के सवालों के जवाब हिंदी में ही दिए और हिंदी भाषी होने पर गर्व प्रकट किया। उसने कहा कि कम से कम उसे हिंदी तो आती है। उसका कहना है कि अंग्रेजी न आने पर भी वह वहां जा सकी, जहां जाने के सपने बहुत से लोग देखते हैं। शुरू में उसके पिता ने उसका विरोध किया था, मगर कान्स की सफलता के बाद अब वह भी उसका हौसला बढ़ाने लगे हैं। बताते चलें कि नैन्सी के पिता टीवी मैकेनिक हैं और मां एक फैक्टरी में काम करती हैं। उसका कहना था कि मां की हाड़-तोड़ मेहनत उससे देखी नहीं जाती थी। नैन्सी को लगता था कि कहीं मां का स्वास्थ्य न खराब हो जाए। वह उनके लिए ही कुछ करना चाहती थी।

नैन्सी बारहवीं के बाद दिल्ली आ गई थी। वह यूपीएससी करना चाहती थी, मगर पैसे की तंगी के साथ अंग्रेजी न आने की समस्या भी थी। हालांकि उसे बाद में यह भी पता चला कि यूपीएससी की परीक्षा हिंदी में भी दी जा सकती है। लेकिन एक बार में चयन हो जाए, यह जरूरी नहीं है।

वैसे भी गांव वाले माता-पिता से कहते रहते थे कि क्या लड़की पर पैसे खर्च कर रहे हो, लड़के पर करो। मगर नैन्सी ने एक कैमरा खरीदा और सोशल मीडिया का रुख किया और सहारा लिया अपने शौक यानी कपड़ों को सिलने का। बचपन में वह गुड़ियों के लिए कपड़े बनाती थी, फिर अपने लिए बनाने लगी। नैन्सी की मदद करने के लिए उसकी मां ने अपने गहने तक बेच दिए। उसका कहना है कि उसकी मां ने हमेशा उसे बहुत सहारा दिया। इसलिए वह भी उनके लिए कुछ करना चाहती है।

कुल मिलाकर देखा जाए, तो सिलाई मशीन उसका सबसे बड़ा सहारा बनी। भारत में अरसे से सिलाई मशीन की सहायता से न जाने कितनी महिलाओं ने अपना और अपने परिवार का पेट पाला है। पति के न रहने पर बहुत-सी महिलाएं कपड़े सिलकर अपना गुजारा करती रही हैं। ऐसी बहुत-सी महिलाओं को मैं निजी तौर पर जानती हूं। कई तो रिश्ते में भी हैं।

एक जमाने में सिलाई मशीन कंपनियां महिलाओं को कपड़े सिलना सिखाने के लिए स्कूल भी चलाती थीं। नैन्सी के मामले में सिलाई मशीन ने उसकी गरीबी तो दूर की ही, उसके सपनों को भी पूरा किया। यह बात भी उसके अभूतपूर्व आत्मविश्वास को दर्शाती है कि उसने एक अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में खुद के बनाए कपड़े पहने और खूब प्रशंसा हासिल की।

उससे एक संवाददाता ने जब यह पूछा कि कोई तुमसे अगर अभी शादी करने के बारे में कहे, तो क्या करोगी? उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया-भगा दूंगी। नैन्सी का कहना है कि सोशल मीडिया पर सफलता के लिए कन्टेंट में दम होना चाहिए। फिर उसने यह भी कहा कि चार-पांच दिन से कुछ नहीं सिला है, तो ऐसा लग रहा है कि कुछ काम ही नहीं किया है।

नैन्सी से प्रेरणा लेकर उसके रिश्तेदारों में कई लड़कियां ऐसा करना चाहती हैं। बात भी सही है, अपने बीच से यदि कोई सफल होता है, तो बाकी औरों के लिए भी सफलता के नए द्वार खोलता है। लड़कियों के मामले में तो यह बात और भी सही है। नैन्सी आगे ही आगे बढ़ती जाएगी, अपने प्रयत्नों से उसने राह के सारे कांटे हटा दिए हैं। आज वह चर्चित मीडिया और फैशन इन्फ्लुएंसर है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

भारत के स्वर्ण भंडार को समृद्ध करने की जरूरत

सोने की अहमियत सिर्फ आभूषणों तक सीमित नहीं है। अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के साथ यह संकट काल से निपटने में भी मदद करता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने ब्रिटेन से भारत का करीब 100 टन सोना वापस मंगाकर अपने स्वर्ण भंडार को और मजबूत कर लिया है। पिछले 33 साल में यह पहला मौका है, जब ब्रिटेन से भारत का इतना सोना वापस लाया गया है। मुद्रा संकट से निपटने के लिए यह सोना 1991 में तत्कालीन चंद्रशेखर सरकार के समय ब्रिटेन भेजा गया था। उस दौर में हमारी अर्थव्यवस्था संक्रमण काल से गुजर रही थी। मुद्रा के बंदोबस्त के लिए हमें अपना सोना गिरवी रखना पड़ा।

अब तस्वीर काफी बदल चुकी है। भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है। ब्रिटेन से सोना मंगाने का स्पष्ट संकेत है कि अब हमें अपना सोना विदेश में रखने की जरूरत नहीं है। आरबीआइ स्वर्ण भंडार को लेकर गरिमा के अनुरूप नीतियों में बदलाव कर रहा है। आने वाले दिनों में विदेश से और भारतीय सोना लौटने के आसार हैं। सोने का भंडार किसी भी देश की आर्थिक स्थिरता के लिए महत्त्वपूर्ण है। कुछ समय से आरबीआइ स्वर्ण भंडार बढ़ाने पर खास ध्यान दे रहा है। पिछले कुछ महीनों में उसने 27.5 टन सोना खरीद कर अपने स्वर्ण भंडार में जोड़ा है। इस साल मार्च के आखिर तक इस भंडार में 822.1 टन सोना था। अब ब्रिटेन से लौटा 100 टन सोना भी इसमें जुड़ गया है। इसके बाद भी कुल स्वर्ण भंडार (गोल्ड रिजर्व) के मामले में भारत अभी अमरीका, जर्मनी, इटली, फ्रांस, रूस और चीन जैसे देशों से पीछे है।

भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसे देखते हुए हमें अपने स्वर्ण भंडार को और समृद्ध करने की जरूरत है। रूस-यूक्रेन और इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध के कारण मुद्रा की अस्थिरता के साथ भू-राजनीतिक जोखिमों के खिलाफ बचाव के रूप में दुनिया के कई प्रमुख बैंक सोना खरीदने पर जोर दे रहे हैं। डॉलर के अवमूल्यन और नकारात्मक ब्याज दरों के कारण हाल ही सिंगापुर के मौद्रिक प्राधिकरण, पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना और तुर्की गणराज्य के केंद्रीय बैंक ने काफी सोना खरीदा। विश्व स्वर्ण परिषद (डब्ल्यूजीसी) के मुताबिक इस साल जनवरी-मार्च में केंद्रीय बैंकों ने 290 टन सोना खरीदा। विभिन्न केंद्रीय बैंकों की सोने की खरीद के कारण सर्राफा बाजारों में सोने की कीमतें लगातार उछल रही हैं। इससे भारत जैसे देश के आम उपभोक्ता भी सीधे प्रभावित हो रहे हैं। आरबीआइ को अपना स्वर्ण भंडार बढ़ाने के साथ यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बाजार में आम आदमी की सोने तक पहुंच बनी रहे।

पेज एक से जारी : हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा

अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए करें समर्पित, विकसित भारत की नींव रखें : मोदी

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद-विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया।

इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था। मैं ईश्वर का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिए। मैं यह भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा। इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, वननेस का निरंतर अहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

साथियो, कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था। इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वाभाविक रूप से होता था। कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान है। ये वो शक्तिपीठ है, जहां मां शक्ति ने कन्याकुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर मां शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे। कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहां एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम !

यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान

स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आजाद हो गया। आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें।

नायकों के विचारों की ये धाराएं यहां राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की ये धरती एकता का अमिट संदेश देती है।

कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा।

साथियो, स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था- एवरी नेशन हेज ए मैसेज टु डिलिवर,ए मिशन टु फुलफिल, ए डेस्टनी टु रीच. भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्ति गत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदण्डों पर नहीं तौला। इसीलिए, 'इदं न मम' यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है। भारत के कल्याण से विश्व का कल्याण, भारत की प्रगति से विश्व की प्रगति, इसका एक बड़ा उदाहरण हमारी आजादी का आंदोलन भी है।15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। उस समय दुनिया के कई देश गुलामी में थे। भारत की स्वतन्त्रता से उन देशों को भी प्रेरणा और बल मिला, उन्होंने आजादी प्राप्त की। अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है। जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला।

आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अपूर्व है। प्रो-पीपल, गुड गवर्नेंस, एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट, एस्पिरेशनल ब्लॉक जैसे अभिनव प्रयोग की आज विश्व में चर्चा हो रही है। गरीब के सशक्तीकरण से लेकर लास्ट माइल डिलीवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त करने में, पारदर्शिता लाने में, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं। भारत में सस्ता डेटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुंच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है। पूरा विश्व टेक्नोलॉजी के इस डेमोक्रेटाइजेशन को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं। आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए ही बड़ा अवसर नहीं है। यह पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्त्वपूर्ण आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन जी-20 ग्रुप का हिस्सा बना। ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है।

साथियो, नए भारत का यह स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्त्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है और उन सपनों को जीना शुरू करना है। हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए यह जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका सम्पूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है, जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है। 21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है। और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमें रिफॉर्म को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा। भारत रिफॉर्म को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में रिफॉर्म की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे रिफॉर्म 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए। हमें यह भी समझना होगा कि किसी भी देश के लिए रिफॉर्म कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने देश के लिए रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्मेशन का विजन सामने रखा। रिफॉर्म का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी परफॉर्म करती है और फिर जब जनता जनार्दन इससे जुड़ जाती है, तो ट्रांसफॉर्मेशन होते हुए देखते हैं। भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। हमें स्पीड, स्केल, स्कोप और स्टैंडर्ड चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें 'जीरो डिफेक्ट-जीरो इफेक्ट' के मंत्र को आत्मसात करना होगा।

साथियो, हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है। ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुए अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा। हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से, प्रोफेशनल पेसिमिस्ट के दबाव से बाहर निकालना है। हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है। भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है।

जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवे दशक को अपनी आजादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं निरंतर योगदान का समय है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आजाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूं कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

नेतृत्व

सभी बनें अपने लीडर

जब कर्मचारी अपने आपको मूल्यवान और प्रभावशाली महसूस करते हैं, तो वे अपनी पूरी ऊर्जा से काम करते हैं।

एक बार प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक और रणनीतिकार, चाणक्य ने एक राजा को उसके राज्य के शासन के लिए विकेंद्रीकृत प्रबंधन की सलाह दी। इसमें स्थानीय गांवों का शासन 'ग्रामणी' या ग्राम प्रधानों के रूप में जाने जाने वाले विश्वसनीय लीडरों द्वारा करने का प्रावधान था। इन ग्राम प्रधानों को अपने समुदायों के मामलों का प्रबंधन करने के लिए महत्त्वपूर्ण स्वायत्तता दी गई थी। इसमें कृषि, व्यापार और कानून प्रवर्तन से संबंधित मामले शामिल थे।

शासन के लिए इस विकेंद्रीकृत दृष्टिकोण ने न केवल राजा की प्रभावी रूप से शासन करने की क्षमता को बढ़ाया, बल्कि ग्रामीणों के बीच स्वामित्व और जवाबदेही की भावना को भी बढ़ावा दिया। आधुनिक संगठन 'होलाक्रेसी' नामक इसी अवधारणा के माध्यम से सशक्तीकरण और स्वायत्तता के समान सिद्धांतों को अपना सकते हैं। होलाक्रेसी संगठन के शीर्ष पर शक्ति को समेकित करने के बजाय स्व-संगठित टीमों में अधिकार और निर्णय लेने को वितरित करती है। यह प्रत्येक टीम के प्रत्येक सदस्य को स्पष्ट उद्देश्य और जिम्मेदारियों के साथ काम करने में मदद करती है और उन्हें सशक्त बनाती है।

प्रो. हिमांशु राय
निदेशक,
आइआइएम इंदौर
@patrika.com

पारंपरिक पदानुक्रम में, निर्णय लेने की प्रक्रिया धीमी हो सकती है, क्योंकि इसके लिए अक्सर कई स्तरों की स्वीकृति की आवश्यकता होती है। यह अंतराल बदलाव को स्वीकारने या आंतरिक चुनौतियों के अनुकूल होने की क्षमता में बाधा डालता है। इसके विपरीत, होलाक्रेसी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को तेज बनाती है और संगठन के भीतर पारदर्शिता और स्पष्टता को बढ़ाती है। प्रत्येक भूमिका और उसकी जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से परिभाषित और प्रलेखित किया जाता है, जिससे ज्ञात हो कि कौन किसके लिए जवाबदेह है। जब हर कोई अपनी भूमिका और दूसरों की भूमिकाएं जानता है, तो सहयोग अधिक सरल हो जाता है। ऐसे में, जब कर्मचारी अपने आपको मूल्यवान और प्रभावशाली महसूस करते हैं, तो वे अपनी पूरी ऊर्जा और रचनात्मकता से काम करते हैं। होलाक्रेसी को लागू करने के लिए एक विचारशील और रणनीतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। यह विश्वास और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ शुरू होती है और सबसे पहले, इसके लिए शिक्षा आवश्यक है। एक लीडर और शिक्षक के रूप में, मैं शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व देता हूं। मेरे लिए, होलाक्रेसी को अपनाने का मतलब है स्वयं को इसके दर्शन और तंत्र में समाहित कर देना। यह मुझे ही नहीं, मेरे संस्थान में ही निरंतर सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देती है। मैं दो-तरफा प्रवाह से ज्ञानार्जन में विश्वास करता हूं। अर्थात, जब मैं अपनी टीम को कुछ सिखाता हूं, तो स्वयं भी उनसे वह सीखता हूं जो मैं नहीं जानता। ज्ञान का यह पारस्परिक आदान-प्रदान सुनिश्चित करता है कि हमारी यात्रा विविध दृष्टिकोणों और अंतर्दृष्टि से समृद्ध हो। इसमें छोटी शुरुआत का महत्त्व समझना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, एक बार में पूरे संगठन में नया परिवर्तन बदलने की कोशिश करने के बजाय, एक विशिष्ट विभाग या प्रोजेक्ट टीम में बदलाव हो। यह दृष्टिकोण नियंत्रित वातावरण में प्रयोग और परिशोधन की अनुमति देता है। दीर्घकालिक लक्ष्य चाहे कितना भी बड़ा हो, मैं अक्सर मासिक लक्ष्य की योजना बनाता हूं और छोटे पैमाने पर प्रयोग शुरू करता हूं। हम इस दौरान सामने आई किसी भी चुनौती या सफलता से सीख सकते हैं।

इसके बाद, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को फिर से परिभाषित करना एक होलाक्रेटिक सिस्टम में महत्त्वपूर्ण कदम है। भूमिकाएं लचीली होनी चाहिए और संगठन की विकसित होती जरूरतों पर आधारित होनी चाहिए। होलाक्रेसी की सफलता के लिए आपसी विश्वास और खुले संचार की संस्कृति सर्वोपरि है। ऐसा वातावरण बनाने के लिए जहां होलाक्रेसी पनप सके, टीम के सदस्यों और लीडरों के बीच उच्च स्तर का विश्वास होना चाहिए।

विश्व साइकिल दिवस आज : शरीर के अंगों में समन्वय बनाने में साइकिलिंग है मददगार

सेहतमंद बने रहने के लिए सुबह चलाएं साइकिल, दूर रहें खतरनाक बीमारियां से

डॉ. सुरेश पाण्डेय
कई पुस्तकों के लेखक एवं साइकिलिंग के सकारात्मक संदेश की मुहिम के विस्तारक
@patrika.com

हम सभी सप्ताह में कम से कम एक दिन परिवार सहित साइकिल चलाते हुए कुछ घंटे प्रकृति के साथ गुजारने का संकल्प लें। इस छोटे से कदम से कई स्वास्थ्य समस्याएं कम हो सकती हैं एवं पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिल सकती है।

नियमित रूप से साइकिलिंग करने से शरीर में रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। अमरीका की यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना में हुई एक रिसर्च में पाया गया है कि जो लोग सप्ताह में कम से कम पांच दिन आधे घंटे तक साइकिल चलाते हैं, उनके बीमार पड़ने की संभावना 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। असल में साइकिल चलाते समय हम सामान्य की तुलना में गहरी सांसें लेते हैं और ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं। इसके कारण शरीर में रक्त संचार भी बढ़ जाता है, साथ ही फेफड़ों के अंदर तेजी से हवा अंदर और बाहर होती है। इससे फेफड़ों की क्षमता में भी सुधार होता है और फेफड़ों में मजबूती आती है। इसके चलते हृदयाघात यानी दिल के दौरे होने की संभावना कम हो जाती है। साथ ही हृदय से जुड़ी दूसरी बीमारियां होने का खतरा भी कम हो जाता है।

प्रकृति के सान्निध्य में सुबह के शांत वातावरण मे साइकिलिंग करने से मस्तिष्क में सेरोटोनिन, डोपामिन, आक्सीटोसिन, एंडोरफिन जैसे हैप्पीनेस हार्मोन रिलीज होते हैं जिससे तनाव घटता है एवं मन प्रसन्न रहता है। अमरीका एवं यूरोपीय देशों हुए शोधों में पाया गया है कि नियमित रूप से साइकिल चलाने वाले व्यक्तियों में तनाव और अवसाद दूसरों की तुलना में काफी कम होते हैं। नियमित रूप से साइकिलिंग करने वाले महसूस कर सकते हैं कि उनका शारीरिक एवं मानसिक स्टैमिना बढ़ गया है। साथ ही शरीर में नई ऊर्जा और ताकत आ गई है। जो लोग नियमित रूप से साइकिलिंग करते हैं, उनकी मांसपेशियां काफी मजबूत होती हैं। साइकिलिंग से पैरों की मांसपेशियों (जिसे पेरिफेरल हार्ट कहा जाता है) की अच्छी एक्सरसाइज हो जाती है। इसके फलस्वरूप वेरीकोज वेंस या खून की नाड़ियों में थक्का जमने, स्ट्रोक आदि की आशंका बहुत कम हो जाती है।

साइकिलिंग के माध्यम से शरीर के सभी अंगों के बीच अच्छा समन्वय स्थापित हो जाता है। हाथ, पैर, आंखें इन सभी के बीच अच्छा समन्वय होना शरीर के संतुलन को बेहतर करता है। सवेरे के समय साइकिल चलाते समय सूर्योदय को देखने के साथ-साथ पक्षियों की चहचहाट भी सुनाई देती है। साइकिलिंग का रूट हर दिन बदला जा सकता है जिससे रोजाना नए-नए दृश्य नजर आते हैं। नित नए दृश्य दिखाई देने के कारण मस्तिष्क की संचार प्रणाली एवं कोशिकाएं अति सक्रिय रहती हैं। नियमित रूप से साइकिल चलाने वाले व्यक्तियों की याददाशत अच्छी होती है एवं उन्हें अल्जीमर्स डिजीज, पार्किंसन डिजीज एवं डेमेन्शिया जैसी मानसिक बीमारियों का खतरा कम से कम होता है। नियमित रूप से साइकिलिंग करने से स्वास्थ्य लाभ तो होते ही हैं, साथ ही इससे पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

आइए विश्व साइकिल दिवस हम सभी सप्ताह में कम से कम एक दिन परिवार सहित साइकिल चलाते हुए कुछ घंटे प्रकृति के साथ गुजारने का संकल्प लें। इस छोटे से कदम से कई स्वास्थ्य समस्याएं आश्चर्यजनक रूप से कम हो सकती हैं एवं पर्यावरण संरक्षण में भी कुछ हद तक मदद मिल सकती है।

भूमिगत शहर : सुरंगों की भूलभुलैया, रह सकते हैं 20 हजार से अधिक लोग

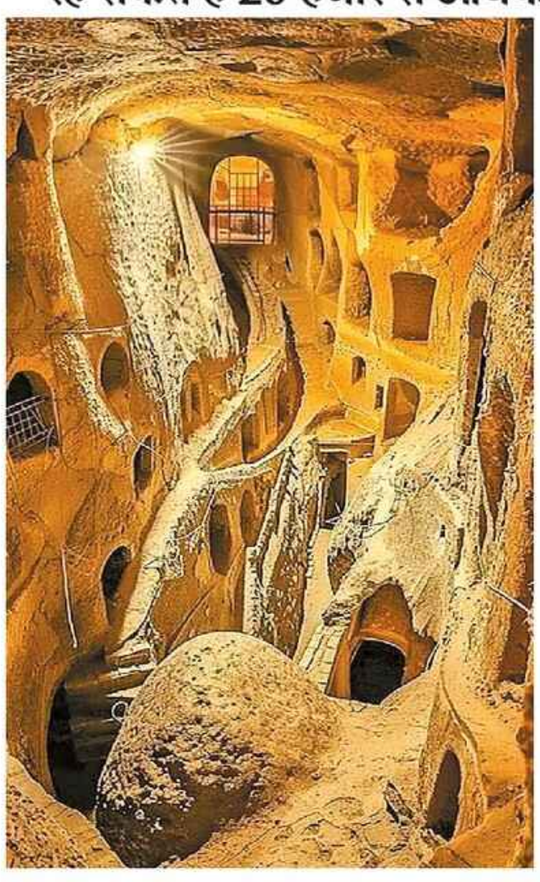

तुर्की के नेवेशीर प्रांत में 2500 साल पुराना बहु-मंजिला भूमिगत शहर है, जो लगभग 85 मीटर की गहराई तक फैला हुआ है। इसमें 20,000 से अधिक लोग अपने पशुधन और खाद्य भंडार के साथ रह सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि इसे प्राचीन इंडो-यूरोपीय लोगों ने बनाया था। फारसियों, रोमनों और ईसाइयों ने इसका विस्तार किया। यहां सुरंगों की भूलभुलैया है।

आपकी बात

विकास के नाम पर हुआ विनाश

जल के प्राकृतिक स्रोतों को पाटकर बहुमंजिला इमारतों का निर्माण अल्पकालीन विकास है और दीर्घकालीन विनाश है। अनेक नहरें, नदियां, तालाब और बावड़ियां विलुप्त हो चुकी हैं। जंगल काटे गए गए हैं। जलसंग्रहण और घने वृक्षों का भी सीधा सम्बन्ध है। इसलिए वृक्ष बचाओ अभियान चलाना चाहिए।

-मुकेश भटनागर, भिलाई, छत्तीसगढ़

सुधारनी होगी गलती

भूमिगत जल का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। परंपरागत जल के स्रोतों की उपेक्षा की गई। बड़ी संख्या में पेड़ काटे गए हैं। ऐसी हालत में जल संकट तो पैदा होगा ही। इंसान अपनी गलती को सुधारे। भूमिगत जल का सिंचाई के लिए उपयोग नहीं किया जाए और पेड़ लगाए जांए। परंपरागत जल स्रोतों का संरक्षण हो।

-जगदीश सोनी, जयपुर

वर्षा जल संचयन की उपेक्षा

जल संकट बढ़ने का प्रमुख कारण है वर्षा जल संचयन की उपेक्षा और व्यर्थ बह रहे जल की रोकथाम के लिए पर्याप्त कारगर कदम न उठाना। ताल-तलैया, नालों को बंद कर बस्तियां बस जाने को रोकना होगा। पुराने कुएं- बावड़ियों, तालाबों, नदियों-नालों की ओर ध्यान देना होगा। जल का दुरुपयोग न करें।

-भगवती प्रसाद गेहलोत, मंदसौर, मप्र

आज का सवाल

विकसित भारत का निर्माण करने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

ईमेल करें
edit@epatrika.com

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की प्रतिक्रियाएं

इसे स्कैन करें

पत्रिकायन का सवाल था, 'जल संकट क्यों बढ़ रहा है?' इस मुद्दे पर कई पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं। कुछ प्रतिक्रियाएं ऑनलाइन भी दी जा रही हैं।

rb.gy/ujcjs0

चिंतन

चुनाव आयोग पर संदेह करना लोकतंत्र के लिए उचित नहीं

किसी भी सफल लोकतंत्र की जड़ में वहां की स्वतंत्र संस्थाएं होती हैं। जब तक ये संस्थाएं निष्पक्षता से कार्य करती हैं, तब तक लोकतंत्र की जड़ें पोषित होती हैं। दुनिया के सबसे विशाल और सफल लोकतंत्र भारत की कामयाबी में भी स्वतंत्र संस्थाओं का अहम योगदान है। इन्हीं में से एक है चुनाव आयोग। दरअसल, संविधान निर्माताओं ने स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से चुनाव सम्पन्न कराने के लिए अनुच्छेद 324 में निर्वाचन आयोग की व्यवस्था की थी और संविधान की मूल भावना के अनुसार आयोग को निष्पक्ष तो होना ही चाहिए। इसमें किसी को शको शुबहा नहीं होना चाहिए कि देश भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, राजनीति-नौकरशाही और अपराधियों का गठजोड़, तरक्की के अवसरों पर मुट्ठीभर लोगों का कब्जा आदि समस्याओं से ग्रस्त है। समय के साथ-साथ कुछ खामियां आयोग की कार्यप्रणाली में भी आई हैं। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि आयोग में सुधार की जरूरत है। चुनावों में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग नई बात नहीं है। आजादी के बाद से विपक्षी दल चुनावों में प्रशासनिक तंत्र के दुरुपयोग के विरुद्ध हमेशा आवाज उठाते रहे हैं, लेकिन जब विपक्षी दल सत्तारूढ़ होते हैं तो फिर उन पर भी चुनावों में सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का आरोप लगता है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि आयोग पर केंद्र सरकार और राज्यों की निर्वाचन मशीनरी पर राज्य की सत्तारूढ़ पार्टियों का दबाव रहता है। चुनाव से ठीक पहले राज्य सरकारें अपने भरोसेमंद अधिकारियों को महत्वपूर्ण स्थानों पर फिट कर लेती हैं, इसीलिए राज्यों में भी निर्वाचन आयोग के गठन की सिफारिश हो चुकी है। वर्तमान में राज्य का ही कोई अधिकारी राज्य का मुख्य निर्वाचन अधिकारी होता है, जोकि अन्य जनसेवकों की तरह राज्य सरकार का सेवक होता है और उस पर सत्ताधारी दल का प्रभाव हो सकता है। जिला मजिस्ट्रेट ही निर्वाचन अधिकारी होते हैं जो अपनी सरकार के अधीन होते हैं। कहने के लिए चुनाव के दौरान सारी मशीनरी निर्वाचन आयोग के अधीन आ जाती है, जिसकी अपनी निष्पक्षता हमेशा ही संदेह के घेरे में रहती है। इतना सब होने के बाद भी आयोग अपनी निष्पक्षता को बनाए रखने में कामयाब रहा है। आज भी हर देशवासी उसे विश्वास की नजर से देखता है, लेकिन अनेक अवसरों पर देखने में आया है कि राजनीतिक दल आयोग की विश्वसनीयता को प्रभावित करने की न केवल कोशिश करते हैं, बल्कि उस पर लांछन पर लगाते नजर आते हैं। जैसे ईवीएम पर ही सवाल खड़े कर दिए गए। ये तो भला हो सुप्रीम कोर्ट का जिसने इस पूरे अभियान को तारपीडो कर दिया। ऐसा ही एक प्रयास रविवार को हुआ जब कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने दावा किया था कि गृह मंत्री अमित शाह जिला कलेक्टर्स को फोन करके डरा-धमका रहे हैं। इस पर तुंरत चुनाव आयोग ने संज्ञान लिया और जयराम रमेश को पत्र लिखकर कहा कि आचार संहिता लागू होने के दौरान सभी अधिकारी इलेक्शन कमीशन को रिपोर्ट करते हैं। अब तक किसी डीएम ने ऐसी जानकारी नहीं दी है, जैसे आप दावा कर रहे हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि वोट काउंटिंग की प्रक्रिया एक पवित्र ड्यूटी है, जो हर रिटर्निंग अफसर को सौंपी गई है। अपने दावे से जुड़ी डिटेल शेयर करें। ताकि सही एक्शन लिया जा सके। इसमें दोराय नहीं कि उनके पास न तो ऐसी जानकारी है और न वे आयोग को कुछ देने वाले है। वे केवल उसकी प्रतिष्ठा को प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं। नेताओं को भी समझना होगा कि संस्थाओं की निष्पक्षता ही लोकतंत्र का मूल है। अगर वो प्रभावित हुई तो पूरा देश प्रभावित होगा।

एक्जिट पोल

प्रमोद भार्गव

वास्तविकता में बदलेंगे अनुमान

अंतिम सातवें चरण का मतदान करीब 62 प्रतिशत होने के साथ लोकतंत्र का महायज्ञ समाप्त हो गया। इसी के साथ एग्जिट पोल के बहाने अटकलों का बाजार गर्म हो गया। देश के नामी-गिरामी आठ सर्वेक्षणों ने अनुमान लगाया है कि प्रचंड बहुमत के साथ मोदी सरकार तीसरी बार आ रही है। फलोदी समेत अन्य सट्टा बाजार भी इसी अनुमान की पुष्टि करते दिखाई दे रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नारा 400 पार मतगणना के धरातल पर सच होने के करीब है। साफ है, केंद्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन 375 से 415 सीटों पर विजयश्री प्राप्त कर सरकार बनाने जा रहा है। इनमें अकेली भाजपा की 300 से ऊपर सीटें होंगी। जबकि इंडिया गठबंधन को अधिकतम 129 से 161 सीटें मिलने की उम्मीद है। इसमें कांग्रेस 52 से 56 सीटें जीत सकती हैं। लोकसभा की कुल 543 सीटें हैं और सत्तारुढ़ होने के लिए 272 सीटों का आंकड़ा जरूरी है। चैनलों के सभी सर्वे राजग को पूर्ण बहुमत दे रहे हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में राजग को 353 और यूपीए को 91 सीटें मिली थीं। 148 सीटें क्षेत्रीय दल और निर्दलियों के खाते में गई थीं। इस चुनाव में भाजपा को 303 और कांग्रेस को 52 सीटें मिल पाई थीं। 2014 और 19 में किसी भी दल को इतनी सीटें नहीं मिली थीं कि वह लोकसभा में विपक्ष का नेता बनने का अधिकारी हो जाए। 2024 में भी विपक्ष को इस हालात का सामना करना पड़ सकता है।

ऐसे में एक बार फिर सोनिया गांधी, राहुल गांधी, ममता बनर्जी, मायावती, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव और दक्षिण भारत के विपक्षी दलों को झटका लगने जा रहा है। बेमेल धर्म व जातीय समीकरणों के बूते उप्र में जो सबसे ज्यादा सीटें जीतने की हुंकार अखिलेश और मायावती भर रहे थे, वहां राजग को 69 सीटें मिलने का अनुमान है। कांग्रेस-सपा गठबंधन को 11 सीटों पर संतोष करना होगा। मायावती का इस बार खाता खुलना भी मुश्किल है। साफ है, चुनावी नक्कारखाने में धर्म और जाति की तूती से अब सनातन मतदाता दूर जाता दिखाई दे रहा है। कह सकते हैं कि प्रियंका गांधी अपनी दादी इंदिरा गांधी की तरह चमत्कारिक व्यक्तित्व के रूप में पेश नहीं आ पा रही हैं और न राहुल गांधी का नेतृत्व जनता स्वीकार करने को तैयार है। संतान के मोह में सोनिया गांधी ने कांग्रेस को हाशिए पर डालने का काम कर दिया है। सर्वेक्षणों की मानें तो भाजपा ने पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी और ओडिशा में नवीन पटनायक की बुनियाद हिला दी है। बंगाल में राजग 21 और ओडिशा में 15 सीटें तक लेती दिखाई दे रही है। यही नहीं इस बार भाजपा के लिए दक्षिण के सभी प्रांत स्वागत के लिए आतुर दिखाई दे रहे हैं। कर्नाटक में भाजपा की सभी 28 सीटों पर भाजपा बढ़त में है। तमिलनाडू में राजग 4, आंध्रप्रदेश में 20, केरल में 2 और तेलंगाना में 17 सीटें जीत सकती है। इनसे इतर महाराष्ट्र में 29, गुजरात में 26 में से 26, राजस्थान में 20, असम में 11, पंजाब में 3, छत्तीसगढ़ में 11, हरियाणा में 6, बिहार में 33 सीटें मिलने की उम्मीद है। झारखंड में भाजपा को नुकसान हो सकता है। पूर्वोत्तर भारत में भी भाजपा अपने सहयोगी दलों के साथ बढ़त बनाए हुए हैं। इन अनुमानों में कम्युनिस्ट पार्टियां पूरे देश में अस्तित्व बचाने की लड़ाई तक सीमित रह गई हैं। साफ है, वामपंथ पर दक्षिणपंथ भारी पड़ रहा है।

हालांकि 2019 की तुलना में सभी चरणों में मतदान कम रहा है। अब 4 जून को वास्तविक नतीजे आएंगे, लेकिन मतदान के बाद एग्जिट पोल सर्वेक्षणों के खुलासे ने साफ कर दिया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और मोदी व अमित शाह की जोड़ी जमीन पर रणनीतिक सफलता हासिल करने जा रही है। इस बार मोदी की आक्रामक शैली ने हिंदू वोटों को पूरे देश में जबरदस्त ढंग से ध्रुवीकृत किया है, जबकि कांग्रेस और उसके सहयोगी दल चुनाव के दौरान भी मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति का खेल खेलते रहे। आंध्रप्रदेश और कर्नाटक में पिछड़े वर्ग के कोटे में मुसलमानों को आरक्षण देना महंगा पड़ा दिखाई देता है। मोदी ने इस मुद्दे को उछालकर न केवल इन प्रांतों में बल्कि पूरे देश में पिछड़े और अतिपिछड़ों को अपने संवैधानिक अधिकार के प्रति सचेत कर दिया। नतीजतन इस वर्ग के मतदाताओं ने राजग को झोली भरकर वोट दिए। इस मुद्दे को मोदी ने बंगाल में भी भुनाया। इसी का परिणाम है कि 2019 में मिलीं 18 सीटों की तुलना में भाजपा को यहां 21 से 28 सीटें मिलने तक का अनुमान बता रहे हैं। राम मंदिर, धारा-370 और तीन तलाक जैसे मुद्दों ने सभी वर्ग के मतदाताओं को लुभाया है। दूसरे लाडली बहना, मुफ्त राशन, मुफ्त आवास, हर घर में नल से जल, स्वास्थ्य लाभ के लिए आयुष्मान योजना और स्त्री सुरक्षा के लिए शौचालय जैसी योजनाओं से मिले लाभ के चलते ग्रामीण मतदाता राजग के पक्ष में खुला खड़ा दिखाई दिया है। अच्छे मतदान ने भी राजग की स्थिति अच्छी बना दी है। 2019 की तुलना में कम रहने के बावजूद औसत मतदान 62 प्रतिशत से ऊपर रहा है। ये सर्वे यदि 4 जून को आने वाले वास्तविक नतीजों पर खरे उतरते हैं तो राजग गठबंधन स्पष्ट बहुमत में होगा। ये अनुमान जताते हैं, कि दलित, वंचित और वनवासी मतदाताओं का जातिगत मतदान से मोहभंग हो रहा है और वे क्षेत्रीय संकीर्णता से मुक्त हो रहे हैं। इस बार धर्मनिरपेक्षता के पैरोकारों पर सनातन-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हावी रहा है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल के प्रमुखों ने रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का आमंत्रण भले ही ठुकराया हो, लेकिन भगवान राम की भक्ति सभी ने दिखाई। भाषणों में बहुत ज्यादा धर्मनिरपेक्ष होने का दंभ नहीं भरा। गोया लगता है, अब छद्म धर्मनिरपेक्षता का आवरण टूट रहा है। केवल बंगाल में ममता बनर्जी मुस्लिम मतदाताओं के तुष्टिकरण के इस छल का सहारा ले रही हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

कन्याकुमारी में साधना से निकले नये संकल्प

चिंतन

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

मेरे प्यारे देशवासियों,

लोकतंत्र की जननी में लोकतंत्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव 1 जून को पूरा हो गया है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद, मैं अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं..। कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं।

वाकई, 24 के इस चुनाव में, कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। माँ भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद...उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार...मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया।

इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहाँ आया था।

मैं ईश्वर का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिये। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा।

इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, Oneness का निरंतर ऐहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

साथियों,

कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था। इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वभाविक रूप से होता था।

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर माँ शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे।

कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहाँ एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम!

यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराज मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएँ यहाँ राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की ये धरती एकता का अमिट संदेश देती है।

कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा।

साथियों,

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था- Every Nation Has a Message To deliver, a mission to fulfil, a destiny to reach.

भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदण्डों पर नहीं तौला। इसीलिए, 'इदं न मम' यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है।

भारत के कल्याण से विश्व का कल्याण, भारत की प्रगति से विश्व की प्रगति, इसका एक बड़ा उदाहरण हमारी आज़ादी का आंदोलन भी है। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। उस समय दुनिया के कई देश गुलामी में थे। भारत की स्वतन्त्रता से उन देशों को भी प्रेरणा और बल मिला, उन्होंने आजादी प्राप्त की। अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है। जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला।

आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। प्रो-पीपल गुड गवर्नेंस, aspirational district, aspirational block जैसे अभिनव प्रयोग की आज विश्व में चर्चा हो रही है। गरीब के सशक्तिकरण से लेकर लास्ट माइल डिलीवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त करने में, पारदर्शिता लाने में, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं। भारत में सस्ता डेटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुँच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है। पूरा विश्व technology के इस democratization को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। ये पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। G-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज़ के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन G-20 ग्रुप का हिस्सा बना। ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है।

साथियों,

नए भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गँवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है, और उन सपनों को जीना शुरू करना है।

आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है। और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमें reform को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा। भारत reform को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में reform की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे reform 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए।

स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आज़ाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूँ कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

हम जो भी करेंगे वह कर्म है

संकलित

दर्शन

'इगोसेंट्रिक' कर्म को वे कर्म कहते हैं। ऐसे कर्म को, जिसमें कर्ता मौजूद है। जिसमें कर्ता यह विचार करके ही कर रहा है कि करने वाला मैं हूं। जब तक मैं करने वाला हूं, तब तक हम जो भी करेंगे, वह कर्म है। अगर मैं संन्यास ले रहा हूं, तो संन्यास एक कर्म हो गया। अगर मैं त्याग कर रहा हूं, तो त्याग एक कर्म हो गया। अकर्म का मतलब ठीक उलटा है। अकर्म का मतलब है ऐसा कर्म, जिसमें कर्ता नहीं है। जिसमें मैं कर रहा हूं, ऐसा कोई बिंदु नहीं है। ऐसा कोई केंद्र नहीं है, जहां से यह भाव उठता है कि मैं कर रहा हूं। अगर मैं कर रहा हूं, यह खो जाए, तो सभी कर्म अकर्म है। कर्ता खो जाए तो सभी कर्म अकर्म है। इसलिए कृष्ण का कोई कर्म, कर्म नहीं है, सभी अकर्म हैं। कर्म और अकर्म के बीच में विकर्म की जगह है। विकर्म का अर्थ है, विशेष कर्म। विशेष कर्म किसे कहते हैं कृष्ण? जहां न कर्ता है, और न कर्म। फिर भी चीजें तो होंगी। फिर भी चीजें तो होंगी ही। आदमी श्वास तो लेगा ही। न कर्म है, न कर्ता है। श्वास तो लेगा ही। श्वास कर्म तो है ही। खून तो गति करेगा ही शरीर में। भोजन तो पचेगा ही। ये कहां पड़ेंगे? ये विकर्म हैं। ये मध्य में हैं। यहां न कर्ता है, न कर्म है। साधारण मनुष्य कर्म में है, संन्यासी अकर्म में है, परमात्मा विकर्म में है। वहां न कोई कर्ता है, न कोई कर्म है। वहां चीजें ऐसी ही हो रही हैं, जैसे श्वास चलती है। वहां चीजें बस हो रही हैं। यह कर्म योग का तत्व है । जो विकर्म को समझ लेगा, वह अकर्म में उतर जाएगा। कर्म हमारी स्थिति है, जैसे हम जी रहे हैं।

झूठे आरोप का सामना बुद्धिमानी व धैर्य के साथ करें

संकलित

प्रेरणा

महाभारत की कथा है। उस समय द्वारका में सत्राजित नाम का व्यक्ति था, वह सूर्य भक्त था। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर सूर्य देव ने उसे स्यमंतक नाम की चमत्कारी मणि दी थी। इस मणि की खास बात ये थी कि ये हर रोज बीस तोला सोना देती थी। मणि की वजह से सत्राजित बहुत धनवान हो गया था। एक दिन श्रीकृष्ण ने सत्राजित से कहा कि आप ये मणि राजकोष में दे देंगे तो राज व्यवस्था के लिए हमें भी थोड़ा धन मिल जाएगा। श्रीकृष्ण की बात सुनकर सत्राजित ने मणि देने से मना कर दिया। सत्राजित की ना सुनकर श्रीकृष्ण वहां से अपने महल लौट आए। सत्राजित का एक भाई था प्रसेनजित। प्रसेनजित ने अपने भाई को बिना बताए उसकी स्यमंतक मणि ले ली और जंगल में शिकार खेलने चला गया। जंगल में एक शेर ने प्रसेनजित को मार दिया और खा गया। प्रसेनजित के पास से स्यमंतक मणि वही गिर गई। इधर सत्राजित को अपना भाई और मणि दिखाई नहीं दी तो उसने पूरी द्वारका में ये खबर फैला दी कि कृष्ण ने मेरी मणि चुराई है और मेरे भाई प्रसेनजित की हत्या कर दी है। श्रीकृष्ण ने विचार किया कि इस कलंक को मिटाना होगा। जंगल में श्रीकृष्ण को शेर के पंजों के निशान दिखाई दिए। श्रीकृष्ण मणि खोजने लगे। वहीं पास में एक गुफा के बाहर कुछ बच्चे मणि से खेल रहे थे, श्रीकृष्ण ने मणि देख ली। उस गुफा में जामवंत रहते थे। श्रीकृष्ण गुफा में पहुंचे। गुफा में श्रीकृष्ण और जामवंत का युद्ध हुआ। युद्ध में श्रीकृष्ण जीते तो जामवंत ने अपनी पुत्री जामवती का विवाह श्रीकृष्ण से कर दिया और स्यमंतक मणि भी दे दी।

अंतर्मन

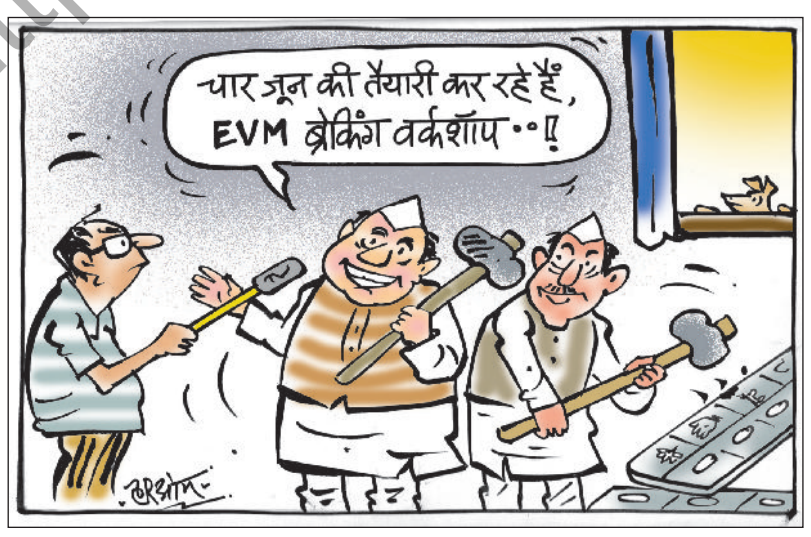

आज की पाती

बढ़ती जनसंख्या कई समस्याओं की जड़

हमारा देश विकास और अन्य बहुत से अच्छे कामों में दुनिया भर में नंबर वन पर है और आगे भी बढ़ रहा है, लेकिन जनसंख्या के मामले में भी हमारा देश दुनिया भर में एक नंबर पर पहुंच चुका है। इस मामले में हमने चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। अभी हाल ही में संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट में बताया गया है कि हमारे देश की जनसंख्या लगभग 144 करोड़ के आंकड़े तक पहुंच गई है और भारत की जनसंख्या 77 वर्षों में दोगुनी हो सकती है। अगर भारत सरकार और देश का आमजन बढ़ती जनसंख्या को रोकने के लिए गंभीरता दिखाए तो भारत जनसंख्या वृद्धि के मामले में आगे नहीं बढ़ेगा। जनसंख्या वृद्धि को रोकना नितांत आवश्यक है क्योंकि इससे कई समस्याएं पैदा होती हैं।

– पवन साहू, दुर्ग

ट्रेंड

ऐतिहासिक निर्णय

डब्ल्यूएचए 77 प्रतिनिधियों द्वारा आज लिए गए ऐतिहासिक निर्णय अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियम संशोधन को अपनाएं। एक वर्ष के भीतर महामारी समझौते को अंतिम रूप देकर इच्छा प्रदर्शित करें। कौन सदस्य देश सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों के साझा जोखिम से लोगों की रक्षा करेंगे

-डॉ टेड्रोस, डब्ल्यूएचओ महानिदेशक

पर्याप्त कार्रवाई नहीं

राष्ट्रीय बंदूक हिंसा जागरूकता माह के दौरान, हम उन हजारों अमेरिकियों को याद करते हैं जिनकी जान हर साल बंदूक हिंसा में चली जाती है। मैंने महत्वपूर्ण बंदूक सुरक्षा बिल पर हस्ताक्षर किए हैं और कार्रवाई की है-लेकिन यह पर्याप्त नहीं है।

-जो बाइडेन, अमेरिकी राष्ट्रपति

सच्चाई सामने आ गई

मोदी जी अपने एग्जिट पोल पर ज़रूर नाचेंगे कूदेंगे, लेकिन सच्चाई 4 जून को सामने आ ही जाएगी। मोदी जी की पार्टी घोर परिवारवादी है बीजेपी ने 442 में 110 सीट राजनीतिक परिवारों को दिया है। सारे भ्रष्टाचारी आज मोदी के साथ हैं।

-संजय सिंह, आप सांसद

सरकार के ख़िलाफ़ आक्रोश

जिसने भी ज़मीन पर जाकर चुनाव को देखा है, वो खुद एग्जिट पोल के आंकड़ों को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। असलियत यह है कि ज़मीन पर लोगों में मोदी और उनकी सरकार के ख़िलाफ़ आक्रोश है।

-सुप्रिया श्रीनेत, कांग्रेस नेता

करंट अफेयर

चीन यूक्रेन शांति वार्ता में शामिल होने से रोक रहा

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने रविवार को दावा किया कि चीन अन्य देशों पर आगामी यूक्रेन शांति वार्ता में शामिल न होने का दबाव बना रहा है। जेलेंस्की ने यूक्रेन में जारी युद्ध को लेकर स्विटजरलैंड द्वारा प्रस्तावित शांति सम्मेलन को बाधित करने में रूस की मदद करने का चीन पर आरोप लगाया। सिंगापुर में शांगरी–ला रक्षा मंच पर जेलेंस्की ने कहा कि चीन अन्य देशों पर आगामी यूक्रेन शांति वार्ता में शामिल न होने का दबाव बना रहा है। उन्होंने कहा, 'रूस, क्षेत्र में चीनी प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए, शांति शिखर सम्मेलन को बाधित करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है।' उन्होंने कहा, 'यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि चीन जैसा शक्तिशाली देश पुतिन (रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन) के हाथों की कठपुतली है।' इससे पहले दिन में एशिया के सुरक्षा सम्मेलन को संबोधित करते हुए जेलेंस्की ने शीर्ष रक्षा अधिकारियों से आगामी शिखर सम्मेलन में भाग लेने का आग्रह किया और कहा कि वह कुछ देशों द्वारा इसमें शामिल होने के लिए प्रतिबद्धता जताने में विफल रहने से निराश हैं। उन्होंने कहा, 'हम विभिन्न प्रस्तावों और विचारों को सुनने के लिए तैयार हैं, ताकि युद्ध की समाप्ति हो सके और कोई स्थायी समाधान निकाला जा सके।'

ऑफ बीट

नींद में मस्तिष्क विषाक्त अपशिष्ट से पाता है छुटकारा

इसमें कोई संदेह नहीं है कि नींद मस्तिष्क के लिए अच्छी है। यह विभिन्न भागों को पुनर्जीवित करने और यादों को स्थिर करने में मदद करती है।

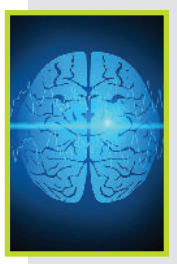

जब हम पर्याप्त नींद नहीं लेते हैं, तो इससे तनाव का स्तर बढ़ सकता है और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ सकती हैं। साक्ष्य इस धारणा का भी समर्थन करते हैं कि जागते रहने की तुलना में सोते वक्त हमारा मस्तिष्क अधिक विषाक्त अपशिष्ट से छुटकारा पाता है। यह प्रक्रिया संभावित रूप से हानिकारक चीजों जैसे कि एमिलॉयड से छुटकारा पाने में महत्वपूर्ण मानी जाती है। एमिलॉयड प्रोटीन मस्तिष्क में होने वाले अल्जाइमर रोग से जुड़ा हुआ है। हालांकि, चूहों पर किए गए एक हालिया अध्ययन में इसके विपरीत निष्कर्ष सामने आए हैं। इस अनुसंधान पत्र के लेखकों ने संकेत दिया है कि चूहों में, नींद के दौरान मस्तिष्क से हानिकारक सामग्री की निकासी वास्तव में कम होती है और पिछले निष्कर्षों की भी इस तरह से पुनर्व्याख्या की जा सकती है। मस्तिष्क की सफाई प्रणाली चूंकि मस्तिष्क एक सक्रिय ऊतक है जिसमें हर समय कई चयापचय और कोशिकीय प्रक्रियाएं होती रहती हैं। इसलिए यह बहुत सारा अपशिष्ट पैदा करता है। यह अपशिष्ट हमारे 'ग्लाइम्फैटिक' प्रणाली द्वारा निकाला जाता है।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771–4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid